विक्रम संवत् 2082 ▪ आश्विन (क्वॉर)/कार्तिक मास (08) ▪ 01 अक्टूबर 2025 ▪ मूल्य : 23 रु.

चरैवेति

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

'माँ भारती' की आन - बान - शान से बड़ा कुछ भी नहीं

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.017261/69, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2024-26, पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 15 एवं 20 तारीख

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने एससीओ शिखर सम्मेलन 2025 में भाग लिया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और जापान के प्रधानमंत्री श्री शिगेरू इशिबा जी ने हाई-स्पीड बुलेट ट्रेन से यात्रा की।

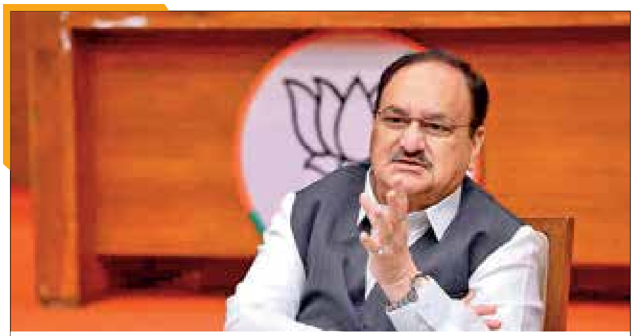

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी ने राइजिंग लीडर कार्यक्रम के अंतर्गत युवा प्रतिभाओं से संवाद किया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता शिक्षकों के साथ बातचीत की।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पंजाब बाढ़ प्रभावितों के साथ बैठक की।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने हिमाचल प्रदेश बाढ़ प्रभावितों के साथ बैठक की।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने श्री सी. पी. राधाकृष्णन जी को उपराष्ट्रपति चुने जाने पर बधाई दी।

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा जी ने सिंगापुर के प्रधानमंत्री श्री लॉरेंस वोंग से मुलाकात की।

अनुक्रमणिका

» **संपादकीय - संजय गोविन्द खोचे** 04
- "राष्ट्र प्रथम" ही " आत्मनिर्भर भारत" का मार्ग

» **कवर स्टोरी -** 05
- "मां भारती" की आन-बान-शान से बड़ा कुछ भी नहीं

05

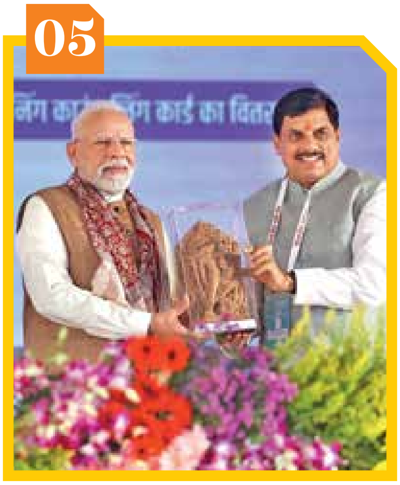

22

- **कवर स्टोरी** 09
  » पीएम मित्रा पार्क से मप्र को मिलेगा नया आयाम...
  » युवाओं के सपने साकार, किसानों को लाभ...
- **राष्ट्र के नाम संबोधन** 11
  » रिफॉर्म्स भारत की विकास गाथा को गति देंगे- प्रधानमंत्री
- **जीएसटी-सुधार** 13
  » ऐतिहासिक जीएसटी सुधार-जगत प्रकाश नड्डा
  » जीएसटी दरों में कटौती ऐतिहासिक निर्णय-मुख्यमंत्री
  » जनहितैषी निर्णय के लिए प्रधानमंत्री जी का आभार
- **जीएसटी रिफॉर्म जन जागरण अभियान** 16
  » जीएसटी घटाना, विकसित राष्ट्र का संकल्प-हेमंत खण्डेलवाल
- **आत्मनिर्भर भारत संकल्प अभियान-शिवप्रकाश** 17
  » आज के संदर्भ में स्वदेशी की परिभाषा अलग
  » प्रधानमंत्री जी का संकल्प आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी
- **सरसंघचालक जी के 75 वें जन्म दिवस पर विशेष** 19
  » मोहन भागवत जी हमेशा से 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के...
- **पंडित दीनदयाल उपाध्याय जयंती** 22
  » "एकात्म मानववाद" में सनातन संस्कृति का निचोड़ - डॉ. मोहन यादव
- **एक देश-एक चुनाव** 24
  » विकसित भारत के लिए एक देश-एक चुनाव आवश्यक है...
  » 'वन नेशन-वन इलेक्शन' देश की आवश्यकता...
- **मोदी जी के 75वें जन्म दिन पर विशेष** 26
  » मोदी जी 'राष्ट्र प्रथम' की जीवंत प्रेरणा हैं - अमित शाह
  » मोदी जी 'राष्ट्र प्रथम' को समर्पित हैं- जगत प्रकाश नड्डा
  » प्रधानमंत्री जी स्वदेशी का संकल्प और राष्ट्र निर्माण के प्रेरक
- **सेवा पखवाड़ा** 30
  » प्रधानमंत्री जी ने महिलाओं के स्वास्थ्य की चिंता की...
- **मेरा देश पहले** 31
  » "मेरा देश पहले-द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ श्री नरेन्द्र मोदी" सराहनीय प्रयास
- **"चलो जीते हैं"** 32
  » आदर्श फिल्म है "चलो जीते हैं"-मुख्यमंत्री डॉ. यादव
- **संघ शताब्दी वर्ष** 33
  » राष्ट्र जागरण की साधना के सौ वर्ष की यात्रा
- **मन की बात** 35
  » स्वदेशी प्रोडक्ट्स, वोकल फॉर लोकल - खरीदारी का मंत्र
- **जयंती** 40
  » त्याग एवं समर्पण की प्रतिमूर्ति -राजमाता विजया राजे सिंधिया
- **विचार प्रवाह** 41
  » संस्कृति राष्ट्र की आत्मा है

• मुख्य व्रत-त्यौहार

1. दुर्गा नवमी व्रत 2. दशहरा, विजयादशमी 3. पापांकुशा एकादशी व्रत 4. प्रदोष व्रत 6. शरद पूर्णिमा, कोजागरी व्रत 7. शरदोत्सव, स्नान दान पूर्णिमा 10. करवा चौथ गणेश व्रत 12. स्कन्द षष्ठी व्रत 13. अहोई अष्टमी व्रत 17. रमा ग्यारस, गोवत्स द्वादशी 18. धनतेरस, प्रदोष व्रत 19. शिव, रूप / नरक चतुर्दशी व्रत 20. दीपावली, केदार गौरी व्रत 21. स्नान दान श्रा. अमावस्या 22. अन्नकूट, गोवर्धन पूजा 23. भाई दोज, चंद्रदर्शन 25. विनायकी चतुर्थी व्रत, सूर्यषष्ठी व्रतारंभ, नहाय खायें 26. पांडव पंचमी, खरना 27. डाला छठ, सूर्यषष्ठी व्रत 29. गोपाष्टमी 30. अक्षय (आंवला) नवमी

• मुख्य जयंती-दिवस

1. विश्व वृद्ध,राष्ट्रीय रक्तदान दिवस रायबहादुर डॉ. हीरालाल जयंती 2. महात्मा गाँधी, लालबहादुर शास्त्री जयंती, अहिंसा दिवस,राष्ट्रीय स्वयंसेवक स्थापना दिवस 6. म. दमघोष जयंती, असाटी दिवस 7. करमपरब, म. अजमीढ़ ज., टेकचंद महाराज समाधि दिवस, संत सिंगाजी मेला 10. रा. डाक, अं. मानसिक स्वास्थ्य दिवस 15. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कमाल जयंती 20. स्वामी दयानंद निर्वाणोत्सव 22. देव गोवर्धन मेला, रमछिरिया, हिंगोट युद्ध गौतमपुरागांव

वर्ष-57, अंक : 08, भोपाल, अक्टूबर 2025

हमारे प्रेरणास्रोत
पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

शिक्षा एक निवेश है, जो आगे चलकर शिक्षित व्यक्ति समाज की सेवा करेगा।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

•
सम्पादक
मुद्रक एवं प्रकाशक
संजय गोविंद खोचे*

•
सहायक सम्पादक
पं. सलिल मालवीय

•
व्यवस्थापक
योगेन्द्रनाथ बरतरिया

•
पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित

एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

•
संपादकीय पता
पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये
*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

''राष्ट्र प्रथम'' ही ''आत्मनिर्भर भारत'' का मार्ग

वस्तु व सेवाकर में कमी का प्रधानमंत्री जी का प्रस्ताव त्योहारों के मौसम में गरीब से गरीब परिवार के लिए भी चेहरे पर मुस्कान लाने में सफल रहा।

''राष्ट्र प्रथम'' के ध्येय को सामने रखकर, देश सेवा का मंत्र बनाकर, कर्तव्यों का निर्वहन व देश का नेतृत्व करने वाले राष्ट्र नायक जो स्वयं को जनता का प्रथम सेवक मान कर कार्य करते हैं, ऐसे राष्ट्र भक्त प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का 75 वाँ जन्म दिन मध्य प्रदेश के साथ-साथ, राष्ट्र के लिए सौगातों से भरा रहा।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने मध्य प्रदेश आकर युवाओं, किसानों, व्यापारियों, उद्योगपतियों को नए अवसर प्रदान किये। वहीं **''स्वस्थ नारी- सशक्त परिवार''** अभियान प्रारंभ कर महिलाओं के स्वास्थ्य की सुरक्षा की चिंता भी करी। ''आत्मनिर्भर भारत'' की पहल को आगे बढ़ाते हुए प्रधानमंत्री जी ने जहां किसानों को नया मार्केट प्रदान किया वहीं एक ही स्थान पर सभी सुविधाओं को विकसित कर न केवल उत्पाद की दर को कम कर प्रतियोगिता में बने रहने लायक बनाया तथा युवाओं के लिए नए अवसरों का दरवाजा भी खोला।

एक तरफ निवेश, दूसरी तरफ निवेश को सफल बनाने के लिए वस्तु एवं सेवाकर की दरों को कम कर देश के भीतर के मार्केट में नए जोश को भरने में प्रधानमंत्री जी सफल रहे। वस्तु व सेवाकर में कमी का प्रधानमंत्री जी का प्रस्ताव त्योहारों के मौसम में गरीब से गरीब परिवार के लिए भी चेहरे पर मुस्कान लाने में सफल रहा। आयकर व वस्तु व सेवाकर में कमी लाकर प्रधानमंत्री जी जनता के हाथों में उपलब्ध पैसों को बढ़ाकर मार्केट को गति प्रदान कर सूक्ष्म-लघु व मध्यम उद्योगों को ऑक्सीजन देकर गरीबी रेखा के बाहर आए लोगों को परोक्ष रूप से सहयोग व समर्थन प्रदान किया है। वहीं गरीबी रेखा से बाहर आने के प्रयासरत वर्ग के लिए सुगम मार्ग प्रस्तुत किया। निश्चित ही प्रधानमंत्री जी के प्रयास वैश्विक हालातों से निपटने के लिए उद्योग-धंधों को संजीवनी प्रदान करके, देश को वैश्विक परिदृश्य के कारण उत्पन्न तनाव, भय व चिंता से बाहर निकाल कर देश में ही मार्केट तैयार किया। जिसका सीधा प्रभाव आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को हासिल करने के लिए सहयोगी होगा।

आयकर व वस्तु व सेवाकर में कटौती के प्रधानमंत्री जी के प्रयास देश के आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक पटल पर दूरगामी प्रभाव छोड़ेंगे। जहां एक तरफ उद्योग-धंधों को स्वदेशी मार्केट मिलेगा, वहीं देश के नागरिकों को गुणवत्तापूर्ण स्वदेशी सामान भी मिलेगा, वैश्विक चुनौतियों के बाद भी उद्योग-धंधे चलते रहेंगे। युवाओं के लिए रोजगार सृजन होगा। बेरोजगारी, मंदी जैसी कोई समस्या भारत को छू भी नहीं पाएगी। प्रधानमंत्री जी का यह साहसिक प्रयास सराहनीय है।

''एक भारत-श्रेष्ठ भारत'' के प्रबल समर्थक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूजनीय सर संघचालक आदरणीय मोहन भागवत जी का 75 वाँ जन्मदिन 11 सितंबर को था, एक सुखद संयोग ही है कि इसी वर्ष संघ भी अपना शताब्दी वर्ष मना रहा है। सर संघचालक जी का पूरा जीवन सतत् प्रेरणा देने वाला रहा है। उन्होंने राष्ट्र के नैतिक व सांस्कृतिक पथ को दिशा प्रदान करी है। व्यापक रूप से देखें तो संघ की यात्रा में भागवत जी का कार्यकाल सर्वाधिक परिवर्तन का कालखंड माना जाएगा। गणवेश परिवर्तन, संघ शिक्षा वर्गों में बदलाव ऐसे अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन उनके निर्देशन में संपन्न हुए। एक युवा स्वयंसेवक से लेकर सर संघचालक तक की जीवन यात्रा, निष्ठा व वैचारिक दृढ़ता को दर्शाती है।

''एकात्म मानववाद'' के प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का ''अंत्योदय का चिंतन'' समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति की सेवा करने के लिए सदैव प्रेरणा प्रदान करता है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में अंत्योदय, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का विचार साकार हो रहा है।

नवनिर्वाचित उप राष्ट्रपति श्री सीपी राधाकृष्णन जी का अनुभव व दृष्टिकोण निश्चित रूप से लोकतंत्र की जड़ों को मजबूती प्रदान करेगा।

1952, 1957, 1962 और 1967 में देश में आम चुनाव व राज्य विधानसभाओं के चुनाव एक साथ संपन्न हुए पर कांग्रेस सरकार ने प्रधानमंत्री की कुर्सी के लिए लोकतंत्र का गला घोट दिया। एक साथ चुनाव की परंपरा को तोड़ दिया। अगर लोकसभा व विधानसभा चुनाव एक साथ करवाए जाते हैं तो प्रति 5 वर्षों में देश का एक लाख करोड़ रुपयों की बचत होती है। जो कई जनउपयोगी कार्यों में खर्च किया जा सकता है।

गत माह, प्रतिमाह होने वाले लोकप्रिय कार्यक्रम **''मन की बात''** के सफर का 126 वां एपिसोड था। प्रधानमंत्री जी की ''मन की बात'' के माध्यम से प्रधानमंत्री जी व जनता के मध्य आपसी संवाद का एक रोचक व सार्थक प्रयास अत्यंत लोकप्रियता हासिल कर चुका है। इस बार ''मन की बात'' कार्यक्रम में प्रधानमंत्री जी ने नौसेना की दो बहादुर महिला अधिकारियों के साहस और संकल्प से देश का परिचय कराया। भारतीय नौसेना की महिला अधिकारियों ने नाविक सागर परिक्रमा के दौरान 47500 किलोमीटर की यात्रा की और इस चुनौती पूर्ण यात्रा में भारत का तिरंगा झंडा Point Nemo पर लहराया, जो की दुनिया का सबसे दूरस्थ स्थान माना जाता है। इस स्थान पर पहुंचने वाले विश्व के पहले इंसान- भारतीय नौसेना की यह दो महिला अधिकारी बनीं। प्रधानमंत्री जी ने मन की बात कार्यक्रम के माध्यम से दोनों महिला अधिकारियों को बधाई दी तथा भारत की मातृ शक्ति के साहस, योग्यता व दृढ़ निश्चय से दुनिया का परिचय कराया।

भारत सरकार के प्रयासों से कोलकाता की दुर्गा पूजा यूनेस्को की इनटेंजिबल कल्चरल हेरिटेज लिस्ट का हिस्सा बन चुकी है अब भारत सरकार छठ महापर्व को भी इस सूची का हिस्सा बनाने का प्रयास कर रही है, निश्चित ही सूची में शामिल होते ही दुनिया के कोने-कोने में लोग इसकी भव्यता और दिव्यता का अनुभव कर पाएंगे।

विजयादशमी पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण हो गए हैं। एक शताब्दी की यह यात्रा जितनी अद्भुत है, अभूतपूर्व है, उतनी ही प्रेरक भी है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ 100 वर्षों से बिना थके, बिना रुके, राष्ट्र सेवा के कार्य में लगातार लगा हुआ है।

इस बार स्वदेशी चीजों से त्योहारों के उत्सव की रौनक कई गुना बढ़ जावेगी। वोकल फॉर लोकल खरीदारी का मंत्र बन चुका है जिससे भारतीय कारीगरों की मेहनत को सम्मान मिलेगा। भारतीय युवा उद्यमियों के सपनों को पंख मिलेंगे।

हमें आत्मनिर्भर बनना है, देश आत्मनिर्भर बन कर रहेगा, उसका रास्ता स्वदेशी से ही आगे बढ़ेगा। ▪

(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

'मां भारती' की आन-बान-शान से बड़ा कुछ भी नहीं

धार की धरती हमेशा से पराक्रम की धरती रही है, प्रेरणा की धरती रही है। महाराजा भोज का शौर्य हमें राष्ट्र गौरव की रक्षा के लिए डटे रहने की सीख देता है। महर्षि दधीचि का त्याग हमें मानवता की सेवा का संकल्प देता है। इसी विरासत से प्रेरणा लेकर आज देश मां भारती की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है।

- **17 सितम्बर को राष्ट्र ने सरदार पटेल की फौलादी इच्छा शक्ति का एक ज्वलंत उदाहरण देखा था, जब भारतीय सेना ने हैदराबाद को अनेकों अत्याचारों से मुक्त कराया था।**
- **मां भारती के सम्मान, गौरव और प्रतिष्ठा से बढ़कर कुछ भी नहीं है।**
- **स्वस्थ नारी सशक्त परिवार अभियान हमारी माताओं और बहनों को समर्पित है।**
- **गरीबों की सेवा मेरे जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य है।**
- **हम कपड़ा उद्योग के लिए 5एफ विजन की प्रतिबद्धता के साथ काम कर रहे हैं।**
- **विश्वकर्मा भाई-बहन मेक इन इंडिया के पीछे एक बड़ी ताकत हैं।**
- **जो पीछे रह गए हैं वे हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता हैं।**

ज्ञान की देवी और धार भोजशाला की मां वाग्देवी जी के चरणों में नमन, कौशल और निर्माण के देवता विश्वकर्मा जी को नमन।

धार की धरती हमेशा से पराक्रम की धरती रही है, प्रेरणा की धरती रही है।

महाराजा भोज का शौर्य हमें राष्ट्र गौरव की रक्षा के लिए डटे रहने की सीख देता है। महर्षि दधीचि का त्याग हमें मानवता की सेवा का संकल्प देता है। इसी विरासत से

प्रेरणा लेकर आज देश मां भारती की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है। पाकिस्तान से आए आतंकियों ने हमारी बहनों-बेटियों का सिंदूर उजाड़ा था, हमने ऑपरेशन सिंदूर करके आतंकी ठिकानों को उजाड़ दिया है। हमारे वीर जवानों ने पलक झपकते ही पाकिस्तान को घुटनों पर ला दिया। देश और दुनिया ने देखा है, फिर एक पाकिस्तानी आतंकी ने रो-रोकर अपना हाल बताया है।

ये नया भारत है, ये किसी की परमाणु धमकियों से डरता नहीं है, ये नया भारत है, घर में घुसकर मारता है।

17 सितंबर एक और ऐतिहासिक अवसर है। 17 सितंबर के दिन देश ने सरदार पटेल की फौलादी इच्छा शक्ति का उदाहरण देखा था। भारतीय सेना ने हैदराबाद को अनेकों अत्याचारों से मुक्त कराकर, उनके अधिकारों की रक्षा करके भारत के गौरव को पुनः प्रस्थापित किया था। देश की इतनी बड़ी उपलब्धि को, और उस उपलब्धि को, सेना के इतने बड़े शौर्य को, कई दशक बीत गए, कोई याद करने वाला नहीं था, लेकिन आपने मुझे मौका दिया, हमारी सरकार ने 17 सितंबर, सरदार पटेल, हैदराबाद की घटना, उसको अमर कर दिया है। हमने भारत की एकता के प्रतीक इस दिन को हैदराबाद लिबरेशन-डे के तौर पर मनाने की शुरुआत की है। और हैदराबाद में बड़े शान से लिबरेशन डे का कार्यक्रम भी किया जा रहा है। हैदराबाद लिबरेशन-डे हमें प्रेरणा देता है, मां भारती की आन-बान-शान से बड़ा कुछ भी नहीं, हम जिएं तो देश के लिए, हमारा हर पल समर्पित हो देश के लिए।

देश के लिए मर-मिटने की सौगंध लेकर हमारी स्वतंत्रता सेनाओं ने अपना सब कुछ देश के नाम समर्पित कर दिया था। उन सभी का सपना था- 'विकसित भारत', वो चाहते थे गुलामी की जंजीरों को तोड़कर भारत तेज गति से आगे बढ़े। इसी प्रेरणा से भारत के हम 140 करोड़ लोगों ने विकसित भारत बनाने का संकल्प लिया है। और विकसित भारत की इस यात्रा के चार सबसे प्रमुख स्तंभ हैं-

- **भारत की नारी शक्ति,**
- **युवा शक्ति,**
- **गरीब और**
- **किसान।**

विकसित भारत के इन चारों स्तंभों को नई मजबूती देने का काम हुआ है। नारी शक्ति का बहुत ध्यान रखा गया है। 'स्वस्थ नारी-सशक्त परिवार' एक महा अभियान का आरंभ हो रहा है। देवी वाग्देवी के आशीर्वाद से इससे बड़ा काम क्या हो सकता है।

देशभर में अलग-अलग चरणों में 'आदि सेवापर्व' की गूंज पहले से ही सुनाई दे रही है। इसका मध्य प्रदेश संस्करण भी प्रारंभ हो रहा है। ये अभियान, धार समेत एमपी के हमारे जनजातीय समाज को विभिन्न योजनाओं से सीधे जोड़ने का सेतु बनेगा।

विश्वकर्मा जयंती के दिन बड़ी औद्योगिक शुरुआत भी होने जा रही है। देश के सबसे बड़े इंटीग्रेटेड टेक्सटाइल पार्क का शिलान्यास हुआ है। इस पार्क से भारत की टेक्सटाइल इंडस्ट्री को नई ऊर्जा मिलेगी। किसान को उसकी उपज का सही मूल्य मिलेगा।

पीएम मित्र पार्क से, टेक्सटाइल पार्क से, सबसे बड़ा लाभ युवकों को, युवतियों को बहुत बड़ी संख्या में रोजगार मिलेगा।

हमारी माताएँ-बहनें, हमारी नारी शक्ति राष्ट्र की प्रगति का मुख्य आधार हैं। हम सब देखते हैं, घर में अगर माँ ठीक रहती है, तो पूरा घर ठीक रहता है। अगर माँ बीमार हो जाए, तो परिवार की सारी व्यवस्थाएं चरमरा जाती हैं। इसीलिए, 'स्वस्थ नारी-सशक्त परिवार' ये अभियान माताओं-बहनों को समर्पित है, उन्हीं के उज्ज्वल भविष्य के लिए है। हमारा मकसद है- एक भी महिला, जानकारी या संसाधनों के अभाव में गंभीर बीमारी का शिकार न हो। ऐसी बहुत सारी बीमारियाँ होती हैं, जो चुपचाप आती हैं, और पता न चलने के कारण धीरे-धीरे बहुत बड़ी बन जाती हैं, जीवन और मृत्यु का खेल शुरू हो जाता है। ऐसी बीमारियाँ, जिनका महिलाओं में सबसे ज्यादा खतरा है, ऐसी बीमारियों को शुरुआती दौर में ही, उसको पकड़ना बहुत जरूरी है। इसलिए इस अभियान के तहत बीपी हो, डायबिटीज हो, एनीमिया-टीबी हो, या कैंसर जैसी भयंकर बीमारी की संभावना हो, इन सबकी जांच की जाएगी। और मेरी माताओं-बहनों, देशभर की मेरी माताओं-बहनों, आपने मुझे हमेशा बहुत कुछ दिया है। आपके आशीर्वाद ही तो मेरा सबसे बड़ा रक्षा कवच है। देश की कोटि-कोटि माताएं-बहनें बढ़-चढ़कर के मुझ पर अपने आशीर्वाद देती रही है। लेकिन माताओं- बहनों, 17 सितंबर विश्वकर्मा जयंती पर मैं आपसे कुछ मांगने आया हूं, मैं आपसे यही मांगता हूं कि आप संकोच किए बिना इन कैंप में जाकर के जांच जरुर करवाएं। एक बेटे के नाते, एक भाई के नाते, मैं आपसे इतना तो मांग सकता हूं ना? मेरा यही आपसे कहना है, इन स्वास्थ्य कैंपों में, इन सारी जाँचों के लिए कितनी ही महंगी क्यों न हो जांच, आपको एक नया पैसा नहीं देना पड़ेगा। कोई फीस नहीं होगी। जांच भी मुफ्त होगी, इतना ही नहीं, दवाई भी मुफ्त होगी। आपके उत्तम स्वास्थ्य से सरकारी तिजोरी की ज्यादा कीमत नहीं है, ये तिजोरी आपके लिए है, माताओं-बहनों के लिए है। और आगे के इलाज में आयुष्मान कार्ड का सुरक्षा कवच आपको बहुत काम आयेगा।

माताओं-बहनों-बेटियों का स्वास्थ्य हमारी प्राथमिकता है। गर्भवती महिलाओं और बेटियों के सही पोषण के लिए हमारी सरकार मिशन मोड में काम कर रही है। हम आठवें राष्ट्रीय पोषण माह की शुरुआत कर रहे हैं। विकसित होते भारत में हमें माता मृत्यु दर और शिशु मृत्यु दर को जितना कम कर सकते हैं, करना ही है। इसी उद्देश्य से हमने 2017 में प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना शुरू की थी। इस योजना में पहली संतान होने पर पाँच हजार रुपये और दूसरी बेटी के जन्म पर छह हजार रुपये सीधे बैंक खाते में दिए जाते हैं। अब तक साढ़े चार करोड़ गर्भवती माताओं को मातृ वंदना योजना का लाभ मिल चुका है। 19 हजार करोड़ रुपए से अधिक राशि मेरी माताओं-बहनों के बैंक खाते में पहुंच चुकी है।

मध्यप्रदेश की धरती से एक और अभियान की चर्चा करना चाहता हूँ। आदिवासी इलाकों में सिकल सेल अनीमिया एक बहुत बड़ा संकट होता है। हमारी सरकार आदिवासी भाई-बहनों

को इस बीमारी से बचाने के लिए राष्ट्रीय मिशन चला रही है। इस मिशन की शुरुआत हमने 2023 में मध्य प्रदेश के शहडोल से ही की थी। और शहडोल में ही हमने सिकल सेल स्क्रीनिंग का पहला कार्ड दिया था। और मध्यप्रदेश में ही सिकल सेल स्क्रीनिंग का 1 करोड़वां कार्ड वितरित हुआ है। अब तक इस अभियान के तहत पूरे देश में 5 करोड़ से ज्यादा लोगों की स्क्रीनिंग हो चुकी है। सिकल सेल स्क्रीनिंग से आदिवासी समाज के लाखों लोगों का जीवन सुरक्षित हुआ है।

जिस काम के पीछे हम लगे हुए हैं, वो आने वाली पीढ़ियों के लिए बहुत बड़ा आशीर्वाद बनने वाला है। जिनका अभी जन्म भी नहीं हुआ है ना, आज हम उनके लिए काम कर रहे हैं, क्योंकि आज जो पीढ़ी है, वो स्वस्थ हो जाएगी, तो भविष्य में उनके संतान स्वस्थ होने की गारंटी बन जाएगी।

आदिवासी माताओं-बहनों से विशेष रूप से आग्रह करूंगा, आप सिकल सेल एनीमिया की जांच जरूर कराएं।

मेरा हमेशा प्रयास रहा है कि माताओं-बहनों का जीवन आसान बनाऊं, उनकी मुश्किलें कम करूं । स्वच्छ भारत अभियान के तहत बने करोड़ों शौचालय, उज्ज्वला योजना के जरिए दिए गए करोड़ों मुफ्त गैस कनेक्शन, घर-घर पानी पहुंचाने के लिए जल जीवन मिशन, 5 लाख रुपए तक मुफ्त इलाज की सुविधा देने की आयुष्मान योजना, इन सभी ने माताओं-बहनों के जीवन की मुश्किलें कम की हैं, और उनका स्वास्थ्य भी बेहतर बनाया है।

पीएम गरीब कल्याण अन्न योजना, दुनिया के लोग जब इसके आंकड़े को सुनते हैं ना, गरीब कल्याण अन्न योजना के, उनकी आंखें फटी की फटी रह जाती है, इतनी बड़ी संख्या। मुफ्त राशन की योजना ने कोरोना के कठिन समय में गरीब मां के घर का चूल्हा बुझने नहीं दिया था। आज भी इस योजना के तहत मुफ्त अनाज दिया जा रहा है। पीएम आवास योजना के तहत भी जो करोड़ों घर दिए गए हैं, उनमें से ज्यादातर महिलाओं के ही नाम पर हैं।

हमारी सरकार का बहुत जोर बहनों-बेटियों को आर्थिक रूप से सशक्त करने पर भी है। हमारी करोड़ों बहनें मुद्रा योजना के जरिए लोन लेकर नए व्यापार कर रही हैं, नए उद्योग लगा रही हैं।

हमारी सरकार 3 करोड़ ग्रामीण बहनों को, गांव में रहने वाली माताओं-बहनों को, 3 करोड़ बहनों को लखपति दीदी बनाने के अभियान में जुटी है। और मैं बड़े गर्व से कह सकता हूं कि इस अभियान में जो सफलता मिली है, इतने कम समय में अब तक करीब-करीब दो करोड़ बहनें लखपति दीदी बन भी चुकी हैं। हम महिलाओं को बैंक सखी और ड्रोन दीदी बनाकर उन्हें ग्रामीण अर्थव्यवस्था के केंद्र में ला रहे हैं। सेल्फ हेल्प ग्रुप्स के जरिए महिलाएं नई क्रांति कर रही हैं।

पिछले 11 वर्षों में गरीब कल्याण, गरीब की सेवा, उसके जीवन में बेहतरी, ये हमारी सरकार की सबसे बड़ी प्राथमिकता रही है। हमारा मानना है, देश तभी आगे बढ़ेगा, जब देश का गरीब, गरीबी से बाहर निकल करके तेज गति से आगे बढ़ेगा। और हमने देखा है, गरीब की सेवा कभी बेकार नहीं जाती है। गरीब को बस थोड़ा सा सहारा मिल जाए, थोड़ी मदद मिल जाए, वो अपनी मेहनत से समंदर को पार करने की हिम्मत भी रखता है। गरीब के इन जज्बातों को, उसकी भावनाओं को मैंने खुद जिया है। इसलिए गरीब की पीड़ा मेरी अपनी पीड़ा है। गरीब की सेवा ही मेरे जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य है। इसलिए हमारी सरकार गरीब को केंद्र में रखकर निरंतर योजनाएं बना रही है, उन पर काम कर रही है।

सातत्यपूर्ण रीति से, समर्पण भाव से और पवित्र मन से ये काम करने के कारण हमारी नीतियों का परिणाम आज दुनिया के सामने है। पिछले 11 साल के लगातार पुरुषार्थ के कारण, परिश्रम के कारण आज देश के 25 करोड़ लोग गरीबी के जीवन से बाहर आ गए हैं। हमारे पूरे समाज को एक नया आत्मविश्वास मिला है।

हमारी सरकार के ये सारे प्रयास केवल योजनाएं नहीं हैं, ये गरीब मां-बहन-बेटी की जिंदगियों, उनकी जिंदगी को बदलने वाली मोदी की गारंटी हैं। गरीब के चेहरे पर मुस्कान लाना, माताओं-बहनों की गरिमा को सुरक्षित करना, यही मेरी पूजा है, यही मेरा प्रण है।

मध्य प्रदेश में माहेश्वरी वस्त्रों की पुरानी परंपरा रही है। देवी अहिल्याबाई होल्कर ने माहेश्वरी साड़ी को नया आयाम दिया था। कुछ ही समय पहले, हमने अहिल्याबाई होल्कर जी की 300 वीं जयंती मनाई है। अब धार में पीएम मित्र पार्क के जरिए, एक प्रकार से हम देवी अहिल्याबाई की विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं। पीएम मित्र पार्क में बुनाई के लिए जरूरी सामान, जैसे कपास और रेशम आसानी से उपलब्ध होगा। क्वालिटी चेक आसान होगी। मार्केट तक पहुँच बढ़ेगी। यहां पर स्पिनिंग होगी, यहीं डिजाइनिंग होगी, यहीं प्रोसेसिंग होगी और यहीं से निर्यात होगा। यानि दुनिया के बाजार में मेरा धार भी चमकने वाला है। यानि अब कपड़ा उद्योग की पूरी वैल्यू चेन एक ही जगह पर उपलब्ध होगी। टेक्सटाइल इंडस्ट्री के लिए हमारी सरकार जिस **5F** विजन पर काम कर रही है,

- **पहला है- farm,**
- **दूसरा है- fibre,**
- **तीसरा है- factory,**
- **चौथा है- fashion,**

और इसलिए farm से fibre, fibre से factory, factory से fashion,

और fashion से-foreign,

ये foreign तक का सफर जल्दी और आसानी से पूरा होगा।

हरी-हरी दूब पर

अटल बिहारी वाजपेयी

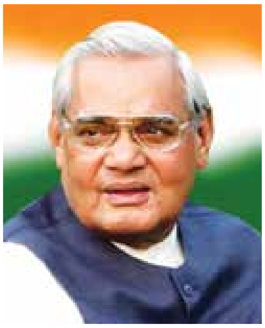

हरी-हरी दूब पर
ओस की बूंदें
अभी थीं,
अब नहीं हैं।
ऐसी खुशियाँ
जो हमेशा हमारा साथ दें
कभी नहीं थीं,
कहीं नहीं हैं।

क्वाँर की कोख से
फूटा बाल सूर्य,
जब पूरब की गोद में
पाँव फैलाने लगा,
तो मेरी बगीची का
पत्ता-पत्ता जगमगाने लगा,
मैं उगते सूर्य को नमस्कार करूँ
या उसके ताप से भाप बनी,
ओस की बूँदों को ढूँढूँ?

सूर्य एक सत्य है
जिसे झुठलाया नहीं जा सकता
मगर ओस भी तो एक सच्चाई है
यह बात अलग है कि ओस
क्षणिक है
क्यों न मैं क्षण-क्षण को जीऊँ ?
कण-कण में बिखरे
सौन्दर्य को पीऊँ ?

सूर्य तो फिर भी उगेगा,
धूप तो फिर भी खिलेगी,
लेकिन मेरी बगीची की
हरी-हरी दूब पर,
ओस की बूँद
हर मौसम में नहीं मिलेगी।

धार के पीएम मित्र पार्क में करीब 1300 एकड़ जमीन, 80 से ज्यादा यूनिट्स को आवंटित भी कर दी गई है। यानि यहां जरूरी इंफ्रास्ट्रक्चर का काम और फैक्ट्री बनाने का काम, दोनों एक साथ चलेगा। इस पार्क में रोजगार के 3 लाख नए अवसर भी बनेंगे। और एक बड़ा प्रभाव पड़ेगा, logistic cost पर, पीएम मित्र पार्क से सामान इधर से उधर ले जाने की लागत कम होगी, Manufacturing की लागत कम होगी, हमारे products सस्ते बनेंगे, और दुनिया में और ज्यादा competitive होंगे। सरकार देश में ऐसे 6 और पीएम मित्र पार्क बनाने जा रही है।

देशभर में विश्वकर्मा पूजा का उत्सव मनाया जा रहा है। साथ ही ये पीएम विश्वकर्मा योजना की सफलता का उत्सव मनाने का भी समय है। देश भर के विश्वकर्मा भाइयों-बहनों, जिनमें सुतार है, लोहार है, सोनार है, कुम्हार है, बढ़ई है, मिस्त्री है, कसेरा-ताम्रकार, कांशिकार, हाथ के हुनर से कमाल करने वाले ऐसे अनेक लोग शामिल हैं, ये आप ही हैं जो मेक इन इंडिया की बड़ी ताकत है। आपके बनाए उत्पाद, आपकी कला से ही गांव हो या शहर रोजमर्रा की जरूरत पूरी होती है। पीएम विश्वकर्मा योजना ने इतने कम समय में 30 लाख से ज्यादा कारीगरों और शिल्पकारों की मदद की है। इस योजना से उन्हें स्किल ट्रेनिंग मिली, उन्हें डिजिटल मार्केटिंग और मॉडर्न टूल्स से जोड़ा गया। 6 लाख से ज्यादा विश्वकर्मा साथियों को नए उपकरण दिए गए। अब तक 4 हजार करोड़ से अधिक का लोन विश्वकर्मा भाइयों-बहनों तक पहुंच चुका है।

पीएम विश्वकर्मा योजना का सबसे बड़ा लाभ समाज के उस तबके को हुआ है, जिन्हें दशकों तक अनदेखा किया गया था। गरीब विश्वकर्मा भाई-बहनों के पास हुनर तो था, लेकिन पिछली सरकारों के पास उनके हुनर को आगे बढ़ाने का कोई प्लान नहीं था, उनका जीवन बेहतर बनाने की कोई योजना नहीं थी। हमने उनकी प्रतिभा को उनकी प्रगति का माध्यम बनाने के रास्ते खोले। इसलिए ही तो मैं कहता हूं- जो पिछड़ा है, वो हमारी प्राथमिकता है।

धार श्रद्धेय कुशाभाऊ ठाकरे की जन्मभूमि भी है। उन्होंने राष्ट्र प्रथम की भावना से अपना पूरा जीवन समाज को समर्पित कर दिया था। मैं उन्हें अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। राष्ट्र प्रथम की ये भावना, देश को नई ऊंचाई पर ले जाने की प्रेरणा है।

ये समय त्योहारों का समय है, और इस समय आपको स्वदेशी का मंत्र भी लगातार दोहराना है, अपने जीवन में उतारना है। मेरी आप सबसे करबद्ध प्रार्थना है, 140 करोड़ देशवासियों से मेरी प्रार्थना है, आप जो भी खरीदें, वो देश में ही बना होना चाहिए। आप जो भी खरीदें, उसमें पसीना किसी न किसी हिंदुस्तानी का होना चाहिए। आप जो भी खरीदें, उसमें मिट्टी की महक मेरे हिंदुस्तान की मिट्टी की महक होनी चाहिए। और मैं, मेरे व्यापारी भाइयों से आग्रह से कहना चाहता हूं, आप भी देश के लिए मेरी मदद कीजिए, देश के लिए मेरा साथ दीजिए, और मैं मदद देश के लिए चाहता हूं आपसे, क्योंकि मुझे 2047 तक विकसित भारत बनाकर रहना है। और उसका रास्ता आत्मनिर्भर भारत से जाता है, और इसलिए मेरे सारे छोटे-मोटे सभी व्यापारी भाई-बहन, आप जो भी बेचें, वो हमारे देश में बना हुआ ही होना चाहिए। महात्मा गांधी ने स्वदेशी को आजादी का माध्यम बनाया था। अब हमें स्वदेशी को विकसित भारत की नींव बनाना है। और ये काम कैसे होगा? ये तब होगा, जब हम अपने देश में बनी हुई हर चीज पर गर्व करेंगे। हम छोटी से छोटी चीज भी खरीदें, हम बच्चों के लिए खिलौने खरीदें, दीवाली की मूर्तियाँ खरीदें, घर को सजाने के लिए समान खरीदें, या मोबाइल, टीवी, फ्रिज जैसी कोई बड़ी चीज खरीदें, हमें सबसे पहले देखना चाहिए कि क्या ये हमारे देश में बना है क्या?

इसमें मेरे देशवासियों के पसीने की सुगंध है कि नहीं है, क्योंकि, जब हम स्वदेशी खरीदते हैं, तो हमारा पैसा देश में ही रहता है। हमारा पैसा विदेश जाने से बचता है। वही पैसा फिर से देश के विकास के काम आता है। उस पैसे से सड़कें बनती हैं, गांव के स्कूल बनते हैं, गरीब विधवा माताओं को मदद मिलती है, प्राथमिक चिकित्सालय बनते हैं, वही पैसा गरीब कल्याण की योजनाओं के काम आता है, आप तक पहुंचता है।

मध्यम वर्ग के भाई-बहनों के जो सपने हैं, मध्यमवर्गीय नौजवानों के जो सपने हैं, उन सपनों को बहुत पूरा करने के लिए तो बहुत धन की जरूरत है। और ये हम इन छोटी-छोटी चीजों को करके, पूरा कर सकते हैं। हमारी जरूरत की चीजें जब देश में बनती हैं, तो उससे जो रोजगार पैदा होता है, वो भी हमारे देशवासियों को मिलता है।

इसलिए, 22 सितंबर से नवरात्रि के पहले दिन से GST की कम दरें भी लागू होने जा रही हैं, तो हमें स्वदेशी चीजें ही खरीदकर इसका लाभ उठाना है। हमें एक मंत्र याद रखना है, और मैं तो चाहता हूं हर दुकान पर लिखा रहना चाहिए, मैं तो राज्य सरकार को भी कहूंगा, अभियान चलाइए, हर दुकान पर बोर्ड होना चाहिए, गर्व से कहो- ये स्वदेशी है! ▪

पीएम मित्रा पार्क से मप्र को मिलेगा नया आयाम - मुख्यमंत्री

उद्योगपति मध्यप्रदेश आएं, राज्य सरकार निवेशकों को पीएम मित्रा पार्क में हर संभव सहायता और सुविधा उपलब्ध करवायेगी। धार का पीएम मित्रा पार्क भारत के औद्योगिक विकास की यात्रा में महत्वपूर्ण आयाम जोड़ेगा।

- **मुख्यमंत्री ने कोलकाता में निवेश के लिए उद्योगपतियों से की वन-टू-वन चर्चा।**
- **कोलकाता इंटरैक्टिव सेशन में मिले 14,600 करोड़ के निवेश प्रस्ताव।**
- **प्रधानमंत्री श्री मोदी के मेक इन इंडिया और विकसित भारत के संकल्प को करेंगे साकार।**
- **अपार संभावनाओं और स्थिरता का आदर्श निवेश स्थल हैं मध्यप्रदेश।**
- **प्रदेश में हैं विश्व स्तरीय इंफ्रास्ट्रक्चर और सहज कनेक्टिविटी।**
- **ऑर्गेनिक कॉटन और गारमेंट उद्योग का हब है मध्यप्रदेश।**

मध्यप्रदेश में उत्पादित आर्गेनिक कॉटन की मांग अनेक देशों में है। प्रदेश टेक्सटाइल का हब बनने की ओर अग्रसर है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश में 7 पीएम मित्रा पार्क स्वीकृत किये, उसमें से पहले पीएम मित्रा पार्क का भूमि-पूजन करने प्रधानमंत्री श्री मोदी 17 सितम्बर को धार जिले में आए। उद्योगपति मध्यप्रदेश आयें, राज्य सरकार निवेशकों को पीएम मित्रा पार्क में हर संभव सहायता और सुविधा उपलब्ध करवायेगी। धार का पीएम मित्रा पार्क भारत के औद्योगिक विकास की यात्रा में महत्वपूर्ण आयाम जोड़ेगा।

मध्यप्रदेश निवेश और औद्योगिक विकास के लिए सबसे भरोसेमंद और अवसरों से भरा राज्य है। मध्यप्रदेश की रणनीतिक भौगोलिक स्थिति, देश के मध्य में स्थित होने के कारण उत्तम कनेक्टिविटी, विश्वस्तरीय आधारभूत ढांचा और औद्योगिक शांति - उद्योगपतियों के लिए आदर्श निवेश स्थल बनाते हैं। यह पार्क राज्य के टेक्सटाइल और गारमेंट सेक्टर को वैश्विक मानकों तक पहुंचाने के साथ रोजगार और आर्थिक विकास में नए आयाम खोलेगा।

मध्यप्रदेश की शुद्ध और ऑर्गेनिक कॉटन उत्पादन क्षमता इसे टेक्सटाइल निवेश के लिए विशेष बनाती है। पीएम मित्रा पार्क के माध्यम से राज्य में उत्पादन और प्रोसेसिंग के उच्च मानक स्थापित होंगे, जिससे निवेशकों को लाभ के साथ रोजगार के अवसर भी सुनिश्चित होंगे। राज्य में निवेश स्थिर, पारदर्शी और सुरक्षित वातावरण में किया जा सकता है। हम संकल्प लें कि स्वदेशी अपनायेंगे, हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनेंगे और प्रधानमंत्री श्री मोदी के 'मेक इन इंडिया' और विकसित भारत के संकल्प को पूरी शक्ति के साथ साकार करेंगे।

स्वामी विवेकानंद, नेताजी सुभाषचंद्र बोस और रवींद्रनाथ टैगोर जैसे महापुरुषों ने देश को नई दिशा दी। यह प्रेरक इतिहास और बौद्धिक परंपरा उद्योग जगत के लिए प्रेरक है और मध्यप्रदेश के औद्योगिक विकास और निवेश के दृष्टिकोण से साथ जुड़ती है। कोलकाता जैसे ऐतिहासिक और बौद्धिक केंद्र से संवाद करना राज्य में निवेश के लिए उत्साह और नई ऊर्जा प्रदान करता है।

राज्य में विकसित औद्योगिक कॉरिडोर, लॉजिस्टिक हब और आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर निवेशकों को मजबूत प्रतिस्पर्धी लाभ देते हैं। सड़क, रेल और हवाई नेटवर्क के माध्यम से पूरे देश में उत्पाद और सेवाओं की आपूर्ति सरल और त्वरित रूप से की जा सकती है। राज्य में निवेशकों को सरल प्रक्रियाओं, सुलभ नीतियों और सक्रिय सरकारी सहयोग के माध्यम से व्यवसाय का विस्तार करने का पूर्ण अवसर मिलता है।

राज्य में उद्योगपतियों को हर प्रकार की सुविधा, सुगमता और सुरक्षा प्रदान की जाती है। राज्य में औद्योगिक शांति सुनिश्चित है और किसी प्रकार की हड़ताल या व्यवधान के कारण निवेश प्रभावित नहीं होता। मध्यप्रदेश में फैक्ट्री लगाना और संचालन करना सहज है, और मध्य में होने के कारण पूरे देश में अपने उत्पाद और सेवाओं की आपूर्ति आसानी से की जा सकती है।

पीएम मित्रा पार्क के माध्यम से टेक्सटाइल और गारमेंट सेक्टर में राज्य की औद्योगिक क्षमता और रोजगार सृजन को नई ऊंचाइयों तक ले जाया जाएगा। प्रदेश सरकार की नीतियों का उद्देश्य किसानों, उद्योगपतियों और युवाओं को समान रूप से लाभ पहुंचाना है। राज्य में किसानों को उनकी फसल का उचित मूल्य और प्रोसेसिंग का सही अवसर मिलता है, उद्योगपतियों को व्यवसाय विस्तार की सुविधा है और युवाओं को रोजगार के अवसर सुनिश्चित किए जाते हैं।

मध्यप्रदेश में निवेश केवल व्यावसायिक विस्तार नहीं है, बल्कि सतत विकास और आत्मनिर्भर भारत की दिशा में भागीदारी का अवसर है। पीएम मित्रा पार्क और अन्य औद्योगिक हब राज्य की टेक्सटाइल, गारमेंट और अन्य सेक्टरों में निवेशकों के लिए लाभकारी और सुरक्षित वातावरण प्रदान करते हैं। मध्यप्रदेश में उत्पादन, लॉजिस्टिक्स और वितरण की सुव्यवस्था निवेशकों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धात्मक लाभ देती है।

मध्यप्रदेश में टेक्सटाइल और गारमेंट सेक्टर में निवेश करने से सिर्फ व्यावसायिक लाभ ही नहीं, बल्कि राज्य की स्थिरता, सतत विकास और आर्थिक समृद्धि में भी भागीदार बनेंगे। ▪

युवाओं के सपने साकार, किसानों को लाभ - हेमंत खण्डेलवाल

पीएम मित्र टेक्सटाइल पार्क न केवल प्रदेश के कपड़ा उद्योग को नई दिशा देगा, बल्कि देशभर के बुनकरों, किसानों और उद्यमियों के लिए नए अवसरों का द्वार खोलेगा।

- **धार की धरती से गूंजी स्वदेशी की पुकार।**
- **प्रधानमंत्री जी के स्वदेशी के आव्हान से साकार होगा विकसित भारत का संकल्प।**
- **प्रधानमंत्री जी ने अपने जन्मदिवस पर दिया खुशहाली और स्वास्थ्य का उपहार।**
- **धार से महिलाओं के लिए शुरू हुआ देशव्यापी स्वास्थ्य अभियान।**
- **स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार अभियान से महिलाओं की सेहत में आएगा सुधार।**
- **औद्योगिक विकास को नई दिशा देगा सर्व सुविधा युक्त पार्क।**
- **महिलाओं को मिलेगी बेहतर स्वास्थ्य की सौगात।**

धार में बनने वाला पीएम मित्र टेक्सटाइल पार्क स्वदेशी के संदेश को साकार करने की दिशा में एक सशक्त कदम है। पीएम मित्र टेक्सटाइल पार्क न केवल प्रदेश के कपड़ा उद्योग को नई दिशा देगा, बल्कि देशभर के बुनकरों, किसानों और उद्यमियों के लिए नए अवसरों का द्वार खोलेगा। इस पार्क में कपास से लेकर तैयार वस्त्र तक की पूरी वैल्यू चेन एक ही स्थान पर उपलब्ध होगी। इससे लॉजिस्टिक लागत कम होगी, उत्पादों की गुणवत्ता बढ़ेगी और अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारतीय वस्त्र और अधिक प्रतिस्पर्धी बनेंगे। प्रधानमंत्री जी का आह्वान हमें आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य की ओर तेजी से बढ़ने की प्रेरणा देता है। आज हमें संकल्प लेना होगा कि हम अपनी हर खरीदारी में स्वदेशी उत्पाद को प्राथमिकता देंगे। यह न केवल हमारे देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करेगा, बल्कि देश के करोड़ों कारीगरों, मजदूरों और किसानों के जीवन में खुशहाली भी लाएगा।

धार जिले के भैसोला में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने जिस पीएम मित्र टेक्सटाइल पार्क का भूमिपूजन किया है, वह 2100 एकड़ भूमि पर विकसित होगा और उसमें मुख्यतः कपड़े बनेंगे। इसके साथ ही यह पार्क युवाओं के सपनों में रंग भी भरेगा। इस पार्क से करीब तीन लाख लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिलेगा, जिससे लोगों का जीवन खुशहाल होगा और आदिवासी अंचल के साथ समूचे मालवा और मध्यप्रदेश में समृद्धि आएगी। इससे धार, झाबुआ, आलीराजपुर और बड़वानी के आदिवासी श्रमिकों व हुनरमंद महिलाओं को भी काम मिलेगा। इस पॉर्क के लिए कच्चे माल के तौर पर मुख्यतः कपास की आवश्यकता होगी और इससे आसपास के 10 जिलों के करीब 6 लाख कपास उत्पादक किसान लाभान्वित होंगे। इस पॉर्क में 23146 करोड़ का निवेश प्रस्तावित है, जिससे प्रदेश की अर्थव्यवस्था को गति मिलेगी।

भैंसोला में बनने वाला पीएम मित्र पार्क देश का पहला ऐसा पार्क होगा जो 5 एफ चेन (फार्म, फाइबर, फैक्ट्री, फैशन और फॉरेन) को एक ही परिसर में जोड़ेगा। इसके साथ ही इससे पर्यावरण को कोई नुकसान नहीं होगा। इसमें विदेशी कंपनियों के लिए लॉजिस्टिक हब, वेयरहाउस और बड़ा पार्किंग एरिया भी होगा। इसके अलावा यहां छोटे और सूक्ष्म उद्योगों के लिए 81 प्लॉट बनाए जाएंगे, जिनका किराया पहले से तय रहेगा। इस पॉर्क के लिए रोजाना लगभग 150 मेगावाट बिजली की आवश्यकता होगी। इसके लिए एमपीआईडीसी 10 मेगावाट सोलर पैनल लगाएगा, जिससे बिजली का खर्च कम होगा। 220 केवी सब स्टेशन और 132 केवी लाइन से बिजली सीधे उद्योगों को दी जाएगी। उद्योगों से निकले पानी का ट्रीटमेंट जीरो लिक्विड डिस्चार्ज सिस्टम से होगा। रोज 20 एमएलडी पानी शुद्ध किया जाएगा। इस पानी का उपयोग परिसर की सफाई व पौधों की सिंचाई में होगा। इसके अलावा एमपीआईडीसी यहां 3500 बैड का हॉस्टल बनाएगा। इसमें कामकाजी महिलाओं के लिए अलग कमरे होंगे। पार्क में कमर्शियल कॉम्प्लेक्स, अस्पताल, पेट्रोल पंप की सुविधाएं भी होंगी।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भैंसोला से 'स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार' अभियान की लांचिंग की है जो देश की महिलाओं, किशोरियों को बेहतर स्वास्थ्य की सौगात देगा। इस अभियान का संचालन स्वास्थ्य और परिवार कल्याण और महिला एवं बाल विकास विभाग संयुक्त रूप से करेंगे। स्वस्थ नारी ही सशक्त परिवार और सशक्त राष्ट्र की आधारशिला है। इस अभियान में महिलाओं की व्यापक स्वास्थ्य जांच भी होगी। अभियान में एनीमिया की रोकथाम, संतुलित आहार और मासिक-धर्म स्वच्छता पर जागरूकता अभियान भी चलाए जाएंगे, ताकि महिलाओं और किशोरियों की स्वास्थ्य और पोषण संबंधी आवश्यकताओं को समग्र और समन्वित तरीके से पूरा किया जा सके। ▪

रिफॉर्म्स भारत की विकास गाथा को गति देंगे- प्रधानमंत्री

नवरात्रि के प्रथम दिवस 22 सितंबर को सूर्योदय के साथ ही, Next generation GST reforms लागू हो जाएंगे। एक तरह से देश में GST बचत उत्सव शुरू होने जा रहा है। इस GST बचत उत्सव में आपकी बचत बढ़ेगी, और आप अपनी पसंद की चीजों को और ज्यादा आसानी से खरीद पाएंगे।

- **अगली पीढ़ी के वस्तु और सेवाकर सुधार 22 सितंबर से लागू होंगे, यह जीएसटी बचत उत्सव की शुरुआत का प्रतीक है।**
- **प्रत्येक नागरिक के लिए वस्तु और सेवाकर लाभों की एक नई लहर आ रही है।**
- **नए वस्तु और सेवाकर सुधार लागू होने के बाद अब केवल 5 प्रतिशत और 18 प्रतिशत कर स्लैब रहेंगे।**
- **कम वस्तु और सेवाकर के साथ, नागरिकों के लिए अपने सपने पूरे करना आसान होगा।**
- **नागरिकों की सेवा का सार अगली पीढ़ी के वस्तु और सेवाकर सुधारों में स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है।**
- **देश को जो चाहिए और जो भारत में बनाया जा सकता है, वह भारत में ही बनाया जाना चाहिए।**
- **भारत की समृद्धि को आत्मनिर्भरता से बल मिलेगा।**
- **आइए, भारत में निर्मित उत्पाद खरीदें।**

नवरात्रि के पहले दिन से देश आत्मनिर्भर भारत अभियान के लिए एक और महत्वपूर्ण और बड़ा कदम उठा रहा है। नवरात्रि के प्रथम दिवस 22 सितंबर को सूर्योदय के साथ ही, Next generation GST reforms लागू हो जाएंगे। एक तरह से देश में GST बचत उत्सव शुरू होने जा रहा है। इस GST बचत उत्सव में आपकी बचत बढ़ेगी, और आप अपनी पसंद की चीजों को और ज्यादा आसानी से खरीद पाएंगे। हमारे देश के गरीब, मध्यमवर्गीय लोग, नियो मिडिल क्लास, युवा, किसान, महिलाएं, दुकानदार, व्यापारी, उद्यमी, सभी को ये बचत उत्सव का बहुत फायदा होगा।

ये रिफॉर्म, भारत की growth story को accelerate करेंगे, कारोबार को और आसान बनाएंगे, निवेश को और आकर्षक बनाएंगे, और हर राज्य को विकास की दौड़ में बराबरी का साथी बनाएंगे।

जब साल 2017 में भारत ने GST रिफॉर्म की तरफ कदम बढ़ाया था, तो एक पुराना इतिहास बदलने की, और एक नया इतिहास रचने की शुरुआत हुई थी। दशकों तक हमारे देश की जनता, देश के व्यापारी, अलग-अलग टैक्स के जाल में उलझे हुए थे। ऑक्ट्रॉय, एंट्री टैक्स, सेल्स टैक्स, एक्साइज, वैट, सर्विस टैक्स, न जाने भांति-भांति के ऐसे दर्जनों टैक्स हमारे देश में थे। एक शहर से दूसरे शहर माल भेजना हो, तो न जाने कितने चेकपोस्ट पार करने होते थे, कितने ही फॉर्म भरने पड़ते थे, कितनी सारी रुकावटें थीं, हर जगह, टैक्स के अलग-अलग नियम थे।

जब 2014 में देश ने मुझे प्रधानमंत्री पद का दायित्व सौंपा था, तब उसी शुरुआत के दौर में एक विदेशी अखबार में एक दिलचस्प उदाहरण छपा था, उसमें एक कंपनी की मुश्किलों का जिक्र था, उस कंपनी ने कहा था कि, अगर उसे बैंगलुरू से 570 किलोमीटर दूर हैदराबाद अपना सामान भेजना हो, तो वो इतना कठिन था कि उन्होंने सोचा, और उन्होंने कहा कि वो पसंद करती थी कंपनी कि पहले अपना सामान बैंगलुरू से यूरोप भेजे, और फिर वही सामान यूरोप से हैदराबाद भेजे।

टैक्स और टोल के जंजाल की वजह से, ये तब के हालात थे। और मैं आपको सिर्फ एक पुराना उदाहरण याद दिला रहा हूं, तब ऐसी लाखों कंपनियों को, लाखों-करोड़ों देशवासियों को, अलग-अलग तरह के टैक्स के जाल की वजह से हर रोज परेशानी होती थी। सामान को एक शहर से दूसरे शहर पहुंचने के बीच जो खर्च बढ़ता था, वो भी गरीब को उठाना पड़ता था, ग्राहकों से वसूला जाता था।

देश को इस स्थिति से निकालना बहुत

जरूरी था। इसलिए जब आपने हमें 2014 में अवसर दिया, तो हमने जनहित में, देशहित में, GST को अपनी प्राथमिकता बनाया। हमने हर स्टेकहोल्डर से चर्चा की, हमने हर राज्य की हर शंका का निवारण किया, हर सवाल का समाधान खोजा, सभी राज्यों को, सबको साथ लेकर, आजाद भारत का इतना बड़ा टैक्स रिफॉर्म संभव हो पाया। ये केंद्र और राज्यों के प्रयासों का नतीजा था कि देश दर्जनों टैक्सों के जाल से मुक्त हुआ, और पूरे देश के लिए एक जैसी व्यवस्था बनी। One Nation-One Tax का सपना साकार हुआ।

Reform एक अनवरत चलने वाली प्रक्रिया होती है। जब समय बदलता है, देश की जरूरत बदलती है, तो नेक्स्ट जनरेशन रीफॉर्म भी उतने ही आवश्यक होते हैं। इसलिए, देश की वर्तमान जरूरतों और भविष्य के सपनों को देखते हुए, GST के ये नए रिफॉर्म्स लागू हो रहे हैं।

नए स्वरूप में मुख्य रूप से अब सिर्फ पांच परसेंट और अठारह परसेंट के ही टैक्स स्लैब रहेंगे। इसका मतलब है, रोजमर्रा के इस्तेमाल की ज्यादातर चीजें और सस्ती हो जाएंगी। खाने-पीने का सामान, दवाइयाँ, साबुन, ब्रश, पेस्ट, स्वास्थ्य और जीवन बीमा, ऐसे अनेकों सामान, अनेकों सेवाएं, या तो टैक्स-फ्री होंगी या फिर केवल पांच परसेंट टैक्स देना होगा। जिन सामानों पर पहले 12 परसेंट टैक्स लगा करता था, उसमें से 99 परसेंट यानी करीब-करीब 100 के निकट, 99 परसेंट चीजें, अब 5 परसेंट टैक्स के दायरे में आ गई हैं।

पिछले 11 साल में देश में 25 करोड़ लोगों ने गरीबी को हराया है, गरीबी को परास्त किया है और गरीबी से बाहर निकलकर के, 25 करोड़ का एक बहुत बड़ा समूह नियो मिडिल क्लास के रुप में आज देश के अंदर बहुत बड़ी भूमिका

अदा कर रहा है। इस नियो मीडिल क्लास की अपनी Aspirations हैं, अपने सपने हैं। इस साल सरकार ने 12 लाख रुपए तक की इनकम को टैक्स फ्री करके एक उपहार दिया। और स्वाभाविक है जब 12 लाख रुपए की इनकम टैक्स में राहत हो जाए तो मध्यम वर्ग के जीवन में तो कितना बड़ा बदलाव आता है। कितनी सरलता, सुविधा हो जाती है। और अब गरीबों की भी बारी है, नियो मिडिल क्लास की बारी है। अब गरीब को, नियो मिडिल क्लास को, मिडिल क्लास को एक तरह से डबल बोनान्जा मिल रहा है। GST कम होने से अब देश के नागरिकों के लिए अपने सपने पूरे करना और आसान होगा। घर बनाना, टीवी, फ्रिज, खरीदने की बात हो, स्कूटर-बाइक-कार खरीदना हो, ये सब पर अब कम खर्च करना होगा। आपके लिए घूमना-फिरना भी सस्ता हो जाएगा, क्योंकि ज्यादातर होटल्स के कमरों पर भी GST कम कर दिया गया है।

दुकानदार भाई-बहन भी GST रिफॉर्म को लेकर बहुत उत्साह में हैं। वो बहुत GST में हुई कटौती को ग्राहकों तक पहुंचाने में जुटे हुए हैं। बहुत सारी जगहों पर पहले और अब के बोर्ड लगाए जा रहे हैं।

हम- नागरिक देवो भवः, के जिस मंत्र के साथ आगे बढ़ रहे हैं, नेक्स्ट जनरेशन GST रीफॉर्म में इसकी साफ झलक दिखाई देती है। अगर हम इनकम टैक्स में छूट और GST में छूट को जोड़ दें, तो एक साल में जो निर्णय हुए हैं, उससे देश के लोगों को ढाई लाख करोड़ रुपए से ज्यादा की बचत होगी। और तभी तो मैं कह रहा हूं, ये बचत उत्सव है।

विकसित भारत के लक्ष्य तक पहुंचने के लिए हमें आत्मनिर्भरता के रास्ते पर चलना ही होगा। और भारत को आत्मनिर्भर बनाने का बहुत बड़ा दायित्व हमारे MSME's, यानी हमारे लघु, मध्यम और कुटीर उद्योगों पर भी है। जो देश के लोगों की जरूरत का है, जो हम देश में ही बना सकते हैं, वो हमें देश में ही बनाना चाहिए।

GST की दरें कम होने से, नियम और प्रक्रियाएं और आसान बनने से, हमारे MSMEs हमारे लघु उद्योगों को, कुटीर उद्योगों को बहुत फायदा होगा। उनकी बिक्री बढ़ेगी और टैक्स भी कम देना पड़ेगा, यानी उनको भी डबल फायदा होगा। इसलिए MSMEs, लघु उद्योग हो, सुक्ष्म उद्योग हो, कुटीर उद्योग हो, आप सबसे बहुत अपेक्षाएं हैं। आपको भी पता है, जब भारत समृद्धि के शिखर पर था, तब भारत की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार हमारे MSMEs थे, हमारे लघु और कुटीर उद्योग थे। भारत की मैन्यूफैक्चरिंग, भारत में बने सामानों की क्वालिटी बेहतर होती थी। हमें उस गौरव को वापस पाना है। हमारे लघु उद्योग जो बनाएं, वो दुनिया में हर कसौटी पर बेस्ट हो, उत्तम से उत्तम हो। हम जो मैन्यूफैक्चर करें, वो दुनिया में आन-बान-शान के साथ बेस्ट के सारे पैरामीटर को पार करने वाला हो। हमारे प्रॉडक्ट्स की क्वालिटी, दुनिया में भारत की पहचान बढ़ाएं, भारत का गौरव बढ़ाएं, हमें इस लक्ष्य को लेकर काम करना है।

देश की स्वतंत्रता को जैसे स्वदेशी के मंत्र से ताकत मिली, वैसे ही देश की समृद्धि को भी स्वदेशी के मंत्र से ही शक्ति मिलेगी। आज जाने-अनजाने हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में बहुत सी विदेशी चीजें जुड़ गई हैं, हमें पता तक नहीं है। हमारे जेब में कंघी विदेशी है कि देसी है, पता ही नहीं है। हमें इनसे भी मुक्ति पानी होगी। हम वो सामान खरीदें, जो मेड इन इंडिया हो, जिसमें हमारे देश के नौजवानों की मेहनत लगी हो, हमारे देश के बेटे बेटियों का पसीना हो। हमें हर घर को स्वदेशी का प्रतीक बनाना है। हर दुकान को स्वदेशी से सजाना है। गर्व से कहो ये स्वदेशी है, गर्व से कहो, मैं स्वदेशी खरीदता हूं, मैं स्वदेशी सामान की बिक्री भी करता हूं, ये हर भारतीय का मिजाज बनना चाहिए। जब ये होगा, तो भारत तेजी से विकसित होगा।मेरा आज सभी राज्य सरकारों से भी आग्रह है, आत्मनिर्भर भारत के इस अभियान के साथ, स्वदेशी के इस अभियान के साथ, अपने राज्यों में मैन्यूफैक्चरिंग को गति दें, पूरी ऊर्जा से, पूरे उत्साह से जुड़ें। निवेश के लिए माहौल बढ़ाएं, जब केंद्र और राज्य मिलकर आगे बढ़ेंगे तो आत्मनिर्भर भारत का सपना पूरा होगा, भारत का हर राज्य विकसित होगा, भारत विकसित होगा। ▪

ऐतिहासिक जीएसटी सुधार

जगत प्रकाश नड्डा

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 15 अगस्त 2025 को लाल किले की प्राचीर से अपने 11 वें स्वतंत्रता दिवस संबोधन में जीएसटी में अगली पीढ़ी के सुधार लाने के सरकार के इरादे के बारे में बात की थी।

उनके यशस्वी नेतृत्व में केवल 20 दिन में ही जीएसटी काउंसिल ने ऐतिहासिक सुधार करते हुए तमाम जरूरी वस्तुओं पर टैक्स या तो खत्म कर दिया है या फिर काफी कम कर दिया है।

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 15 अगस्त 2025 को लाल किले की प्राचीर से अपने 11 वें स्वतंत्रता दिवस संबोधन में जीएसटी में अगली पीढ़ी के सुधार लाने के सरकार के इरादे के बारे में बात की थी। उनके यशस्वी नेतृत्व में केवल 20 दिन में ही जीएसटी काउंसिल ने ऐतिहासिक सुधार करते हुए तमाम जरूरी वस्तुओं पर टैक्स या तो खत्म कर दिया है या फिर काफी कम कर दिया है। नए जीएसटी regime में 28 प्रतिशत और 12 प्रतिशत का slab ही खत्म कर दिया गया है। यानी अब सिर्फ दो tax slab होंगे - 5 प्रतिशत और 18 प्रतिशत।

ये reforms हमारे नागरिकों के जीवन को तो बेहतर बनाएंगे ही, साथ ही छोटे व्यापारियों और व्यवसायों के लिए व्यापार सुगमता भी सुनिश्चित करेंगे।

हमारी सरकार का लक्ष्य सिर्फ राजस्व संग्रह नहीं, बल्कि देश के हर नागरिक की जीवन गुणवत्ता सुधारना है। यह कदम निश्चित तौर पर देश की आर्थिक ताकत को मजबूती प्रदान करेगा और नई उम्मीदें जगाएगा।

दूध, आटा सहित रोजमर्रा की कई वस्तुओं पर जीएसटी को शून्य कर दिया गया है। साथ ही, आम आदमी के उपयोग की कई वस्तुओं पर टैक्स को 12 प्रतिशत, 18 प्रतिशत या 28 प्रतिशत से घटा कर सिर्फ 5 प्रतिशत कर दिया गया है। इससे रोजमर्रा की इन आवश्यकताओं की कीमतों में भारी गिरावट आएगी और आम जनता की जेब पर टैक्स का बोझ भी कम होगा। जीवन बीमा और स्वास्थ्य बीमा पर भी जीएसटी को शून्य कर दिया गया है। यह कदम आम जनता के स्वास्थ्य और वित्तीय सुरक्षा को मजबूत करने की दिशा में उठाया गया एक महत्वपूर्ण कदम है। महंगे घरेलू उपकरणों और वाहनों पर भी टैक्स दरों में भारी कटौती की गई है। खेती-बाड़ी में उपयोग होने वाली ट्रैक्टर, मशीनरी, कटाई-थ्रेसिंग उपकरण आदि पर टैक्स काफी घटा दिया गया है। इससे कृषि आधारित अर्थव्यवस्था को एक नई मजबूती मिलेगी। घर के निर्माण में काम आने वाली सामग्रियों पर भी टैक्स दरों को कम किया गया है। इससे आम नागरिकों पर वित्तीय बोझ तो कम होगा ही, साथ ही देश की अर्थव्यवस्था भी मजबूत होगी।

यूपीए सरकार जीएसटी लागू ही नहीं कर पाई थी क्योंकि राज्यों को तब की कांग्रेस सरकार पर भरोसा नहीं था। उलटे कांग्रेस सरकार वैट के माध्यम से गरीब जनता और व्यापारियों पर डाके डालती थी। साथ ही, बड़े पैमाने पर टैक्स चोरी की भी गुंजाइश बनी रहती थी जबकि जीएसटी ने 'One Nation, One Tax' की अवधारणा को चरितार्थ किया है।

जीएसटी में सारे निर्णय आम सहमति से लिए जाते हैं। हर महीने का रिकॉर्ड जीएसटी कलेक्शन बताता है कि देश आर्थिक समृद्धि पर तेज गति से अग्रसर है। कांग्रेस का दोहरा चरित्र यह है कि जीएसटी काउंसिल में तो इनके नेता समर्थन करते हैं लेकिन बाहर राहुल गांधी उन्हीं फैसलों का विरोध करते हैं।

यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का दृष्टिकोण अलग है- वे नागरिकों को वास्तविक राहत देने वाले बड़े कदम उठाना पसंद करते हैं। GST दरों में व्यापक संशोधन करके, देशवासियों को दुर्गापूजा, दशहरा और दिवाली से पहले ही आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने देशवासियों को 'बम्पर गिफ्ट' दिया है। ▪

जीएसटी दरों में कटौती ऐतिहासिक निर्णय-मुख्यमंत्री

प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में दुनिया भर में भारत की एक अदभुत छवि निर्मित हो रही है। वैश्विक उथल-पुथल के बीच भी सरकार ने अपने नागरिकों, उद्यमियों, गरीब एवं वंचित वर्ग का ध्यान रखा है। नागरिकों के हैल्थ इंश्योरेंस को टैक्स फ्री कर स्वास्थ्य के क्षेत्र में अतिरिक्त राहत दी गई है।

- **प्रधानमंत्री श्री मोदी ने स्वतंत्रता दिवस पर दिए वचन को एक महीने से भी कम समय में पूरा कर दिखाया।**
- **जीएसटी दरों में कटौती से लाभान्वित होंगे देश के 90 प्रतिशत नागरिक।**
- **प्रधानमंत्री श्री मोदी ने वैश्विक उथल-पुथल के बीच भी देश के गरीब-वंचितों सहित उद्यमियों का भी रखा ध्यान।**

भारत सरकार ने जीएसटी दरों में बदलाव कर मुक्त हृदय से देश के हर वर्ग को फायदा पहुंचाया है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने स्वतंत्रता दिवस पर अपने उद्‌बोधन में लाल किले की प्राचीर से कहा था कि, अगले कुछ समय में प्रदेशवासियों को बहुत अच्छी सुविधाएं मिलने वाली हैं। हमने देखा कि एक महीने से भी कम समय में उन्होंने अपने इन वचनों को साकार कर दिया। जीएसटी के क्रांतिकारी बदलाव से देश की लगभग 90 प्रतिशत आबादी यानी 125 करोड़ से अधिक देशवासी लाभान्वित होंगे। प्रदेश के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) और लघु एवं कुटीर उद्योग को भी व्यवसाय में इसका लाभ मिलेगा। प्रधानमंत्री श्री मोदी के कुशल नेतृत्व में भारत दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बना है और तेजी से तीसरे स्थान की ओर बढ़ रहा है।

जीएसटी काउंसिल की बैठक में जीएसटी दरों में कटौती का निर्णय देशवासियों के लिए एक प्रकार से गुलदस्ते के समान है, जिसमें सभी सैक्टर को कवर किया गया है। इंडस्ट्रीज के साथ देश के सभी वर्गों को इसका लाभ मिलेगा। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में दुनिया भर में भारत की एक अदभुत छवि निर्मित हो रही है। वैश्विक उथल-पुथल के बीच भी सरकार ने अपने नागरिकों, उद्यमियों, गरीब एवं वंचित वर्ग का ध्यान रखा है। नागरिकों के हैल्थ इंश्योरेंस को टैक्स फ्री कर स्वास्थ्य के क्षेत्र में अतिरिक्त राहत दी गई है। जीएसटी के सभी बदलाव इसी माह नवरात्रि से अर्थात 22 सितंबर से लागू हो जाएंगे, जिसका लाभ गरीबों, मध्यवर्ग और किसानों को भी मिलेगा। आम आदमी की जरूरत की वस्तुएं जैसे- रोटी, पराठा, पनीर, छैना सस्ते होंगे। यह सामग्री बड़े पैमाने पर निर्यात भी होती है, अतः इस बदलाव से किसानों को भी लाभ होगा। स्कूली बच्चों के लिए शिक्षण सामग्री नक्शे, चार्ट, ग्लोब, पेंसिल, शार्पनर, कॉपी, नोटबुक पर जीएसटी 12 प्रतिशत से शून्य करना स्कूली बच्चों और युवाओं की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण कदम है।

हमारे लिए कृषि क्षेत्र पहली प्राथमिकता है। भारतीय कृषि व्यवसाय को वैश्विक प्रभावों से सुरक्षित रखने के लिए प्रधानमंत्री श्री मोदी ने ट्रैक्टर के टायर, पार्ट्स, बायोपेस्टिसाइड, माइक्रोन्यूट्रिएंट्स, ड्रिप इरिगेशन सिस्टम, स्प्रिंकलर, बागवानी की मशीनों पर जीएसटी दर 18 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत तक लाने का निर्णय लिय है। यह कृषक कल्याण के लिए हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। दूसरी ओर नागरिकों को स्वास्थ्य क्षेत्र में लाभ मिले, इसके लिए हैल्थ इंश्योरेंस पॉलिसी को मौजूदा 18 प्रतिशत के स्लैब से हटाकर टैक्स खत्म करना निर्णय क्रांतिकारी है। साथ ही कैंसर जैसी घातक बीमारियों के मरीजों के लिए कई जीवन रक्षक दवाइयां कर मुक्त कर दी गई हैं। इस फैसले का सीधा लाभ जरूरतमंदों को मिलेगा।

ऑटोमोबाइल सेक्टर में 1200 सीसी इंजन क्षमता के वाहनों पर जीएसटी स्लैब 28 प्रतिशत से घटाकर 18 प्रतिशत किया गया है। यह मध्यम वर्गीय के लिए कार खरीदने का सपना पूरा करेगा। साथ ही इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स जैसे- प्रोजेक्टर, डिश, वाशिंग मशीन सस्ती होंगी। इन निर्णयों का प्रदेशवासियों को जल्द से जल्द लाभ दिलवाने के लिए राज्य सरकार सभी संबंधित क्षेत्रों में त्वरित गति से कार्य करेगी। ▪

जनहितैषी निर्णय के लिए प्रधानमंत्री जी का आभार-हेमंत खंडेलवाल

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 15 अगस्त को लाल किले की प्राचीर से देश को संबोधित करते हुए कर ढांचे को नागरिक केंद्रित बनाते हुए आमजन के जीवन को बेहतर बनाने की बात कही थी और जीएसटी स्लैब में किया गया बदलाव इसी दिशा में एक बड़ा कदम है।

- **प्रधानमंत्री जी ने जीएसटी सरलीकरण कर देश की जनता को बड़ा उपहार दिया।**
- **आर्थिक रूप से सशक्त बनायेगा जीएसटी स्लैब में बदलाव, लोगों को मिलेगा फायदा।**
- **सरकार के निर्णय से गरीब, युवा, अन्नदाता और महिलाओं को मिलेगी ताकत।**
- **प्रधानमंत्री जी ने 15 अगस्त को जनता से किए वादे को पूरा किया।**
- **केंद्र सरकार का जीएसटी स्लैब में बदलाव सराहनीय व जनहितकारी कदम।**
- **हर वर्ग को होगा लाभ।**
- **आसान होगी किसानों की राह।**

जीएसटी काउंसिल द्वारा टैक्स स्लैब में किए गए बदलाव के निर्णय का लाभ देश की 90 प्रतिशत आबादी करीब सवा सौ करोड़ लोगों के साथ गरीब, युवा, किसान और महिलाओं समेत हर वर्ग को ताकत मिलेगी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में जीएसटी स्लैब में बदलाव के ऐतिहासिक फैसले से देश आर्थिक रूप से और सशक्त बनेगा।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 15 अगस्त को लाल किले की प्राचीर से देश को संबोधित करते हुए कर ढांचे को नागरिक केंद्रित बनाते हुए आमजन के जीवन को बेहतर बनाने की बात कही थी और जीएसटी स्लैब में किया गया बदलाव इसी दिशा में एक बड़ा कदम है। तत्कालीन वित्त मंत्री श्री अरूण जेटली ने बिल्कुल स्पष्ट कर दिया था कि आंकलन करने के बाद जनता और व्यापारियों को सहूलियत देने के लिए समय समय पर जीएसटी में सुधार होंगे। कोविड के अर्थव्यवस्था पर प्रभाव के कारण इसमें देरी हुई, लेकिन सुधार योजना के अनुसार हुए। यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी और वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण जी ने देश की बड़ी आबादी के हित में, गरीब, युवा, किसान और महिलाओं समेत हर वर्ग को लाभ पहुंचाने के लिए जीएसटी दरों को 4 की जगह सिर्फ 2 स्लैब में समाहित करने का निर्णय लिया है, जो अत्यंत सराहनीय और महत्वपूर्ण कदम है।

जीएसटी के ढांचे में जो बदलाव हुआ है, उसका लाभ किसी न किसी रूप में समाज के हर वर्ग को मिलने वाला है। इसमें जहां 12 फीसदी और 28 प्रतिशत वाले टेक्स स्लैब को खत्म कर दिया गया है, वहीं 5 प्रतिशत और 18 प्रतिशत वाले स्लैब में इन वस्तुओं को रखने से निश्चित रूप से आवश्यक वस्तुओं के दामों में कमी आएगी।

40 प्रतिशत का स्लैब नशा के विरूद्ध सरकार की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है इससे नशे की रोकथाम में मदद मिलेगी। हेल्थ इंश्योरेंस पर जीएसटी शून्य करने का कदम ऐतिहासिक है, इससे आम आदमी भी स्वास्थ्य बीमा करा कर बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ ले सकेगा। साथ ही पनीर, छेना, टेट्रापैक दूध, रोटी, चपाती परांठा, खाकरा जैसी आम लोगों से जुड़ी खाद्य वस्तुओं, दुर्लभ बीमारियों और कैंसर की दवाओं पर कोई टैक्स नहीं लगेगा। आम आदमी के उपयोग की कई वस्तुएं जैसे हेयर ऑयल, टॉयलेट सोप, शैंपू, टूथब्रश,

टूथपेस्ट, साइकिल, टेबलवेयर, किचनवेयर, अन्य घरेलू सामान आदि पर जीएसटी 18 प्रतिशत या 12 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत कर दिया गया है। खाद्य पदार्थों जैसे पैकेज्ड नमकीन, भुजिया, सॉस, पास्ता, इंस्टेंट नूडल्स, चॉकलेट, कॉफी, संरक्षित मांस, कॉर्नफ्लेक्स, मक्खन, घी आदि पर जीएसटी 12 प्रतिशत या 18 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत कर दिया गया है, जिसका लाभ हर परिवार को मिलेगा।

नई जीएसटी दरों में किसानों को बहुत बड़ी राहत मिली है। कृषि उपयोगी वस्तुओं, मिट्टी तैयार करने या जुताई करने वाला ट्रैक्टर, कृषि, बागवानी या वानिकी मशीनरी, कटाई या थ्रेसिंग मशीनरी, जिसमें पुआल या चारा बेलर, घास काटने की मशीन, कंपोस्ट मशीन आदि पर जीएसटी 12 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत कर दिया गया है, जो कि स्वागत योग्य है। सरकार के इस निर्णय से कृषि मशीनरी की कीमत कम होगी और अधिक से अधिक किसान इनका लाभ ले सकेंगे। सरकार के इस निर्णय से न सिर्फ किसानों की राह आसान होगी, बल्कि कृषि उत्पादन में भी बढ़ोत्तरी होगी। ▪

घटी जीएसटी, मिला उपहार- डॉ. मोहन यादव

उपभोक्ताओं को मिलने वाली छोटी से छोटी चीज भी मेक इन इंडिया और मेड इन इंडिया होना चाहिए। स्वदेशी के मूल भाव को अपनाते हुए हम देश को अग्रणी राष्ट्र बनाने के लिए आगे बढ़ेंगे। जीएसटी की दरों में कटौती कर प्रधानमंत्री जी ने देश को बड़ी सौगात दी है। उद्यमियों, आम जनता के कल्याण के लिए जीएसटी की दरें घटाई गई हैं। भारत स्वदेशी के भाव को लेकर ही आजाद हुआ है। हम स्वदेशी अपनाकर ही देश को और समृद्ध बना सकते हैं। जीएसटी की दरों में कटौती करके प्रधानमंत्री जी ने देश की जनता, व्यवसायियों, उद्यमियों को जो उपहार दिया है, उसके लिए प्रधानमंत्री जी का आभार।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के माध्यम से देश समृद्ध हो रहा है। प्रधानमंत्री जी सभी वर्गों के कल्याण के लिए काम कर रहे हैं। मध्यप्रदेश में सरकार बनने के बाद उद्योग धंधों को बढ़ावा देने के लिए सभी प्रकार की व्यवस्थाओं में सुधार किए हैं। जब राज्य समृद्ध होगा तो आर्थिक दृष्टि से यहां का पैसा यहीं रोटेट होगा। प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में भारत चौथी अर्थव्यवस्था से तीसरी अर्थव्यवस्था की तरफ आगे बढ़ रहा है। स्वदेशी के मूल भाव को अपनाते हुए हम आगे बढ़ें और भारत को विश्व का नंबर एक देश बनाने में अपना सहयोग करें। देश में छोटी से छोटी वस्तु भी मेक इन इंडिया होनी चाहिए। यह हमारे देश की आर्थिक समृद्धि का सूत्र है, यहां का बना हुआ उत्पाद यही खपे और यहां से बनी हुई चीजें दुनिया में निर्यात हों। किसानों, महिलाओं, युवाओं और गरीबों के लिए हमारी सरकार के पास धन की कोई कमी नहीं है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने जीएसटी की दरों में कमी करके देशवासियों को बड़ी सौगात दी है। प्रधानमंत्री जी ने कपड़ों सहित अन्य वस्तुओं पर लगने वाले जीएसटी की दरों में जो कमी की है, उससे पर्व का उत्साह कई गुना बढ़ गया है। केंद्र सरकार ने कपड़ों पर जीएसटी की दरें घटाकर महज 5 फीसदी कर दी है। स्वदेशी वस्तुएं दुनिया में भारत की पहचान रही हैं। देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए, छोटे व्यापारियों और कारीगरों को प्रोत्साहन देने, भारतीय उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए स्वदेशी के भाव से बढ़कर कुछ नहीं है। इसलिए स्वदेशी अपनाओ-देश को आगे बढ़ाओ। ▪

जीएसटी घटाना, विकसित राष्ट्र का संकल्प- हेमंत खण्डेलवाल

- **जीएसटी सुधार आत्मनिर्भर भारत की दिशा में ऐतिहासिक कदम।**
- **भारत को आत्मनिर्भर बनाने हमें स्वदेशी उत्पादों का उपयोग करना है।**
- **जीएसटी रिफॉर्म स्वदेशी के लिए मजबूत आधार बनेगा।**
- **जीएसटी सुधार देश की आर्थिक प्रगति के लिए एक ऐतिहासिक कदम।**

जीएसटी सुधार आत्मनिर्भर भारत बनाने की दिशा में बड़ा ऐतिहासिक कदम है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार की नागरिक देवो भवः की परिकल्पना साकार हो रही है। भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा दें और अधिक से अधिक मात्रा में स्वदेशी उत्पादों का ही उपयोग करें। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का आह्वान है कि अपने देश की मिट्टी से जुड़ा हर उत्पाद हमारी संस्कृति, मेहनत और आत्मनिर्भरता का प्रतीक है। इसलिए आत्मनिर्भर और विकसित भारत निर्माण के लिए वोकल फॉर लोकल को बढ़ावा देते हुए स्थानीय कारीगरों और स्वदेशी उद्योगों को प्रोत्साहन दें। यह केवल कर सुधार नहीं, बल्कि भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का संकल्प है। आज भारत दुनिया का सबसे बड़ा युवा देश है। युवा न केवल उपभोग करता है बल्कि उत्पादन और जीडीपी में बड़ा योगदान दे सकता है। जीएसटी सुधार देश की आर्थिक प्रगति के लिए एक ऐतिहासिक कदम है। जीएसटी की दरों में कमी कर न केवल कर प्रणाली को सरल और पारदर्शी बनाया गया है, बल्कि छोटे व्यापारियों और उद्योगों के लिए नई अपार संभावनाओं के द्वार खोले गए हैं। वन नेशन, वन टैक्स की अवधारणा ने बाजार को एकीकृत किया है और राज्यों के राजस्व को स्थिरता प्रदान की है। निरंतर सुधारों और डिजिटल प्रौद्योगिकी के उपयोग से जीएसटी प्रणाली भविष्य में और अधिक प्रभावी तथा जनहितैषी बनेगी। ▪

आज के संदर्भ में स्वदेशी की परिभाषा अलग

शिवप्रकाश

- **स्वदेशी का मतलब दुनिया में कल्याणकारी व्यवस्था।**
- **स्वदेशी सिर्फ आर्थिक नहीं, इसमें देशभक्ति और स्वयं का स्वाभिमान है।**
- **प्रधानमंत्री जी के स्वदेशी संकल्प के साथ हम सभी को आगे बढ़ना है।**
- **स्वदेशी के मंत्र पर आगे बढ़ रहा भारत।**
- **प्रधानमंत्री जी का संकल्प 'स्वदेशी'।**

आजादी की लड़ाई में अंग्रेजों को देश से भगाने के लिए स्वदेशी के दो प्रयोग हुए। एक प्रयोग बाल गंगाधर तिलक जी ने किया। उन्होंने गणेश उत्सव और शिवाजी उत्सव शुरू किए। वहीं गांधी जी ने चरखा चलाया। उस समय के विचारकों का मानना था कि अंग्रेज भारत में विदेशी वस्त्र बेचकर देश को लूट रहे हैं। ऐसे में गांधी जी ने खादी पहनने का आग्रह किया और चरखे के माध्यम से हर व्यक्ति को जोड़ा। महर्षि दयानंद, स्वामी विवेकानंद, रवींद्रनाथ टैगोर और महर्षि अरविंद आदि ने भी अपने-अपने तरीके से स्वदेशी की बात की। लेकिन आज का स्वदेशी वो चरखे वाला स्वदेशी नहीं है। हमें आज के संदर्भों में स्वदेशी की व्याख्या करनी होगी।

पं. दीनदयाल उपाध्याय जी ने एकात्म मानववाद में स्वदेशी और विकेंद्रीकरण की चर्चा करते हुए नए परिदृश्य में स्वदेशी की परिभाषा दी। स्वदेशी और आत्मनिर्भरता हमारे तंत्र हो सकते हैं।

15 अगस्त को लाल किले से दिये गए भाषण और काशी की सभा में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने कहा था कि दुनिया आज आर्थिक संकट से जूझ रही है। हर देश अपनी अर्थव्यवस्था को संभालने का प्रयास कर रहा है। ऐसे में भारत के आर्थिक विकास को जारी रखने और विकसित देश बनाने का वही तरीका उचित है, जिसमें आत्मनिर्भरता और स्वदेशी का मंत्र हो। उन्होंने इसे 'मन की बात' कार्यक्रम में भी दोहराया और कोरोना संकट के समय भी कहा था।

> आजादी की लड़ाई में अंग्रेजों को देश से भगाने के लिए स्वदेशी के दो प्रयोग हुए। एक प्रयोग बाल गंगाधर तिलक जी ने किया। उन्होंने गणेश उत्सव और शिवाजी उत्सव शुरू किए। वहीं गांधी जी ने चरखा चलाया।

आज दुनिया में पूंजीवाद, साम्यवाद और समाजवादी व्यवस्थाओं का खोखलापन उजागर हो चुका है। यूक्रेन-रशिया और इजराइल-फिलस्तीन के युद्ध चल रहे हैं। पर्यावरण का संकट पैदा हो गया है। अतिवृष्टि हो रही है और जगह-जगह बादल फट रहे हैं। ऐसे में भारत की लिव एंड लैट लिव यानी वसुधैव कुटुंबकम की संस्कृति प्रासंगिक हो जाती है। ऐसी व्यवस्था जिसमें रोजगार हो, पर्यावरण का संरक्षण हो, कम पूंजी लगती हो और भारतीय चिंतन हो, वही दुनिया के लिए कल्याणकारी हो सकती है। इस अर्थ में स्वदेशी का मतलब है दुनिया में कल्याणकारी व्यवस्था। इसमें बाजार और व्यापार नहीं, परिवार की सोच होती है। यह भारत को आत्मनिर्भर बनाएगी और दुनिया के संकटों को दूर करेगी।

2014 में प्रधानमंत्री बनने के बाद श्री नरेंद्र मोदी जी ने मेड इन इंडिया और मेक इन इंडिया पर जोर दिया। ये दोनों ही नीतियां स्वदेशी को पोषित करने वाली हैं। बीते 11 वर्षों में उन्होंने स्वदेशी चिंतन के आधार पर व्यवस्थाएं खड़ी की। इसी का परिणाम है कि 2014 तक हमारा जो रक्षा निर्यात कुछ सौ करोड़ का था, वो 2025 में बढ़कर 24000 करोड़ हो गया। अब हमारे रक्षा उत्पाद 100 देशों में खरीदे जा रहे हैं। चंद्रयान और मिशन मंगल के बाद अब हम अनेक देशों को सैटेलाइट सिस्टम दे रहे हैं। 10 से अधिक देशों को हम रेल कोच बेच रहे हैं। एमएसएमई का हमारी जीडीपी में 30 प्रतिशत योगदान है। हम सेमी कंडक्टर भी बना रहे हैं। ट्रैक्टर, जैविक उत्पाद, मोबाइल फोन और जैनेरिक दवाएं हम सारी दुनिया को बेच रहे हैं। हम सारी दुनिया में खिलौने सप्लाई कर रहे हैं।

हमें समाज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, भारत के युवाओं, बुद्धिजीवियों, व्यापारियों सबके मन में एक भाव पैदा करना है कि हम ये कर सकते हैं। हमें स्वदेशी वस्तुओं का निर्माण करने वालों को प्रोत्साहित करना है और इस विचार को प्रसारित करना है। निश्चित रूप से एक दिन भारत सारी दुनिया में फिर प्रसिद्ध होगा और हमारे उत्पाद दुनिया के बाजारों में भरे रहेंगे।

अभी हाल ही में अमेरिका ने टैरिफ के जरिए भारत पर यह दबाव बनाने के कोशिश की कि हमारा कृषि क्षेत्र, फिशरीज और डेयरी उद्योग उसके लिये खोल दिये जाएं। लेकिन प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने कहा कि हम यह नहीं होने देंगे। उनका यह संकल्प ही 'स्वदेशी' है और हमें उनके इस संकल्प के साथ खड़ा होना है। ▪

प्रधानमंत्री जी का संकल्प आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी- हेमंत खंडेलवाल

- **भारत को आर्थिक महाशक्ति बनाने के लिए स्वदेशी की मानसिकता बनाने की जरूरत।**
- **स्वदेशी को अपनाकर आत्मनिर्भर भारत बनाने के अभियान को साकार करें कार्यकर्ता।**
- **हर व्यक्ति के मन में स्वदेशी की भूख जगाएं कार्यकर्ता।**

भारत और चीन साथ में आजाद हुए, लेकिन हम निर्यात में पिछड़ गए। इसकी वजह यह थी कि पूर्ववर्ती सरकारों ने निर्यात बढ़ाने के बारे में नहीं सोचा। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार हर क्षेत्र में निर्यात बढ़ाने और भारत को आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने के लिए प्रयास कर रही है। आत्मनिर्भर का मतलब है हम देश में बनी चीजें खरीदें और हमारा आयात कम तथा निर्यात ज्यादा हो। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी कहते हैं कि वही उत्पाद खरीदें, जिसमें भारत के श्रमिक का पसीना हो, जो भारत में बना हो।

हमारे देश की लगभग 50 प्रतिशत आबादी कृषि पर निर्भर है, लेकिन कृषि का हमारी जीडीपी में योगदान सिर्फ 17 प्रतिशत है। प्रधानमंत्री जी चाहते हैं कि हमारे कृषि उत्पाद सारी दुनिया में एक्सपोर्ट हों। उन्होंने पेट्रोल में 20 प्रतिशत इथेनॉल मिलाने का सफल प्रयोग किया, जिससे गन्ना उत्पादक किसानों को तो लाभ हुआ है और 2 लाख करोड़ रुपये के राजस्व की भी बचत हुई। हर व्यक्ति के मन में स्वदेशी वस्तुएं खरीदने की मानसिकता बनाने की जरूरत है। इससे रोजगार बढ़ेगा, हमारा उत्पादन बढ़ेगा और हम निर्यात के क्षेत्र में आगे बढ़ेंगे। प्रधानमंत्री जी भारत को अगले कुछ सालों में दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था और 2047 तक दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाना चाहते हैं। इस संकल्प को साकार करने के लिए जरूरी है कि हम हर दिल तक यह बात पहुंचायें कि कोई भी व्यक्ति कुछ भी खरीदने से पहले एक बार यह जरूर सोचे कि वह वस्तु देशी है या विदेशी। ▪

आत्मनिर्भर भारत बनाने स्वदेशी के आंदोलन को जन-जन तक पहुंचाएं कार्यकर्ता - हितानंद

- **स्वदेशी और स्वावलंबन से ही भारत बनेगा आत्मनिर्भर।**
- **प्रदेश में 25 सितंबर से 25 दिसंबर तक चलेगा आत्मनिर्भर भारत संकल्प अभियान।**
- **प्रधानमंत्री जी भारत को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बना रहे हैं।**

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी कहते हैं कि आत्मनिर्भर भारत का रास्ता गरीब, किसान, महिला और युवाओं की भागीदारी से होकर जाता है। आत्मनिर्भर भारत संकल्प अभियान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की सोच का विस्तार है, जिसका लक्ष्य भारत को सामाजिक और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना है। आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए हर त्यौहार पर आमजन जो खरीदारी करते हैं, वह सिर्फ स्वदेशी वस्तुओं की ही करें।

प्रधानमंत्री जी ने कहा है कि हम भारत के लोग वही वस्तुएं खरीदें, जिसे बनाने, तैयार करने में भारतीयों का पसीना बहा हो। प्रधानमंत्री जी के इन विचारों को आत्मसात करते हुए हम सभी कार्यकर्ताओं को आत्मनिर्भर भारत संकल्प सम्मेलन का आयोजन कर स्कूली छात्रों से लेकरी शासकीय विभागों, धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठनों, युवाओं, महिला संगठनों, बुद्धिजीवियों के साथ व्यापारिक संगठनों को इस आंदोलन में सहभागी बनाना है। भाजपा के सभी मोर्चों प्रकोष्ठों के साथ समान विचारधारा वाले संगठनों को साथ में लेकर उद्योग सम्मेलन, प्रभात फेरी, रथ यात्रा, एमएसएमई उद्योगपति सम्मेलनों का आयोजन कर स्वदेशी के इस आंदोलन को जन-जन तक पहुंचाना है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी भारत को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए स्वदेशी को एक आंदोलन के रूप में ले रहे हैं। भारत की स्वतंत्रता का आंदोलन जो हुआ था, वह सिर्फ देश को आजादी दिलाने के लिए आंदोलन नहीं था। वह आंदोलन भारत को संस्कृति, भाषा, संस्कार और उपयोग की वस्तुओं में स्वदेशी की खुशबू के लिए था। स्वदेशी को बढ़ावा देने के लिए प्रधानमंत्री जी ने अमेरिका से ट्रेड डील नहीं की। उन्होंने कहा कि भारत के किसानों, पशुपालकों का अहित नहीं होने दूंगा। यह अभियान जनभागीदारी से चलाया जाना है, इसलिए इसमें सभी समाजिक, व्यापारिक और समान विचारधारा वाले संगठनों की सहभागिता सुनिश्चित करें। स्वदेशी आंदोलन से हर भारतीय को जोड़कर इसे जन आंदोलन बनाने के लिए कार्य करना है, ताकि स्वदेशी को बढ़ावा मिल सके और भारत की सांस्कृतिक पहचान को और मजबूत बनाया जा सके। स्वदेशी अपनाने के लिए बड़े स्तर पर हस्ताक्षर अभियान चलाया जाएगा। जिला कार्यशालाएं आयोजित होगी। मंडल कार्यशालाएं एवं प्रदेश स्तरीय पत्रकार वार्ता का आयोजन होगा।

1 से 5 अक्टूबर तक वक्ता कार्यशाला, 1 से 30 नवंबर तक स्वदेशी रील्स प्रतियोगिता ऑनलाईन क्विज प्रतियोगिता, आत्मनिर्भर भारत निबंध प्रतियोगिता, आत्मनिर्भर भारत स्पीच प्रतियोगिता का आयोजन भी किया जाना है। 1 से 25 दिसंबर तक घर-घर संपर्क, जिला स्तर पर 3 से 15 अक्टूबर तक पत्रकार वार्ताएं, 16 से 30 अक्टूबर तक महिला एवं युवा सम्मेलन, 1 से 15 नवंबर तक व्यापारी, लघु उद्योगी एवं प्रोफेशनल्स सम्मेलन व कालेज स्तरीय स्वदेशी संकल्प सेमीनार, 16 से 30 नवंबर तक स्वदेशी मेला, 1 से 25 दिसंबर तक घर-घर संपर्क , आत्मनिर्भर भारत संकल्प रथ और पदयात्रा का आयोजन होगा। ▪

मोहन भागवत जी हमेशा से 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के प्रबल समर्थक रहे हैं - प्रधानमंत्री

भागवत जी का पूरा जीवन सतत् प्रेरणा देने वाला रहा है। वे 1970 के दशक के मध्य में प्रचारक बने। सामान्य जीवन में प्रचारक शब्द सुनकर ये भ्रम हो जाता है कि कोई प्रचार करने वाला व्यक्ति होगा, लेकिन जो संघ को जानते हैं उनको पता है कि प्रचारक परंपरा संघ कार्य की विशेषता है।

11 सितंबर, यह दिन अलग-अलग स्मृतियों से जुड़ा है। एक स्मृति 1893 की है, जब स्वामी विवेकानंद ने शिकागो में विश्वबंधुत्व का संदेश दिया और दूसरी स्मृति है 9/11 का आतंकी हमला, जब विश्व बंधुत्व को सबसे बड़ी चोट पहुंचाई गई। 11 सितम्बर, के दिन की एक और विशेष बात है। 11 सितम्बर, एक ऐसे व्यक्तित्व का 75 वां जन्म दिवस है जिन्होंने ''वसुधैव कुटुंबकम'' के मंत्र पर चलते हुए समाज को संगठित करने, समता-समरसता और बंधुत्व की भावना को सशक्त करने में अपना पूरा जीवन समर्पित किया है।

संघ परिवार में जिन्हें परम पूजनीय सरसंघचालक के रूप में श्रद्धाभाव से संबोधित किया जाता है, ऐसे आदरणीय मोहन भागवत जी का जन्मदिन है। यह एक सुखद संयोग है कि इसी साल संघ भी अपना शताब्दी वर्ष मना रहा है। मैं भागवत जी को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि ईश्वर उन्हें दीर्घायु और उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करें।

मेरा मोहन भागवत जी के परिवार से बहुत गहरा संबंध रहा है। मुझे उनके पिता, स्वर्गीय मधुकरराव भागवत जी के साथ निकटता से काम करने का सौभाग्य मिला था। मैंने अपनी पुस्तक ज्योतिपुंज में मधुकरराव जी के बारे में विस्तार से लिखा भी है। वकालत के साथ-साथ मधुकरराव जी जीवन भर राष्ट्र निर्माण के कार्य में समर्पित रहे। अपनी युवावस्था में उन्होंने लंबा समय गुजरात में बिताया और संघ कार्य की मजबूत नींव रखी।

मधुकरराव जी का राष्ट्र निर्माण के प्रति झुकाव इतना प्रबल था कि अपने पुत्र मोहनराव को भी इस महान कार्य के लिए निरंतर गढ़ते रहे। एक पारस मणि मधुकरराव ने मोहनराव के रूप में एक और पारस मणि तैयार कर दी।

भागवत जी का पूरा जीवन सतत प्रेरणा देने वाला रहा है। वे 1970 के दशक के मध्य में प्रचारक बने। सामान्य जीवन में प्रचारक शब्द सुनकर ये भ्रम हो जाता है कि कोई प्रचार करने वाला व्यक्ति होगा, लेकिन जो संघ को जानते हैं उनको पता है कि प्रचारक परंपरा संघ कार्य की विशेषता है। गत 100 वर्षों में देश भक्ति की प्रेरणा से भरे हजारों युवक-युवतियों ने अपना घर-परिवार त्याग करके पूरा जीवन संघ परिवार के माध्यम से राष्ट्र को समर्पित किया है। भागवत जी भी उस महान परंपरा की मजबूत धुरी हैं।

भागवत जी ने उस समय प्रचारक का दायित्व संभाला, जब तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने देश पर इमरजेंसी थोप दी थी। उस दौर में प्रचारक के रूप में भागवत जी ने आपातकाल-विरोधी आंदोलन को निरंतर मजबूती दी। उन्होंने कई वर्षों तक महाराष्ट्र के ग्रामीण और पिछड़े इलाकों, विशेषकर विदर्भ में काम किया। 1990 के दशक में अखिल भारतीय शारीरिक प्रमुख के रूप में मोहन भागवत जी के कार्यों को आज भी कई स्वयंसेवक स्नेहपूर्वक याद करते हैं। इसी कालखंड में मोहन भागवत जी ने बिहार के गांवों में अपने जीवन के अमूल्य वर्ष बिताए और समाज को सशक्त करने के कार्य में समर्पित रहे।

वर्ष 2000 में वे सरकार्यवाह बने और यहाँ भी भागवत जी ने अपनी अनोखी कार्यशैली से हर कठिन परिस्थिति को सहजता और सटीकता से संभाला।

2009 में वे सरसंघचालक बने और आज भी अत्यंत ऊर्जा के साथ कार्य कर रहे हैं। भागवत जी ने राष्ट्र प्रथम की मूल विचारधारा को हमेशा सर्वोपरि रखा।

सरसंघचालक होना मात्र एक संगठनात्मक जिम्मेदारी नहीं है। यह एक पवित्र विश्वास है, जिसे पीढ़ी-दर-पीढ़ी दूरदर्शी व्यक्तित्वों ने आगे बढ़ाया है और इस राष्ट्र के नैतिक और सांस्कृतिक पथ को दिशा दी है। असाधारण व्यक्तियों ने इस भूमिका को व्यक्तिगत त्याग, उद्देश्य की स्पष्टता और माँ भारती के प्रति अटूट समर्पण के साथ निभाया है। यह गर्व की बात है कि मोहन भागवत जी ने न केवल इस विशाल जिम्मेदारी के साथ पूर्ण न्याय किया है, बल्कि इसमें अपनी व्यक्तिगत शक्ति, बौद्धिक गहराई और सहृदय नेतृत्व भी जोड़ा है।

भागवत जी का युवाओं से सहज जुड़ाव है और इसलिए उन्होंने अधिक से अधिक युवाओं को संघ कार्य के लिए प्रेरित किया है। वे लोगों से प्रत्यक्ष संपर्क में रहते हैं, और संवाद करते रहते हैं। श्रेष्ठ कार्य पद्धति को अपनाने की इच्छा और बदलते समय के प्रति खुला मन रखना, ये मोहनजी की बहुत बड़ी विशेषता रही है। अगर हम व्यापक संदर्भ में देखते हैं तो संघ की 100 साल की यात्रा में भागवत जी का कार्यकाल संघ में सर्वाधिक परिवर्तन का कालखंड माना जाएगा। चाहे वो गणवेश परिवर्तन हो, संघ शिक्षा वर्गों में बदलाव हो, ऐसे अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन उनके निर्देशन में संपन्न हुए।

कोरोना काल में मोहन भागवत जी के प्रयास विशेष रूप से याद आते है। उस कठिन समय में उन्होंने स्वयंसेवकों को सुरक्षित रहते हुए समाजसेवा करने की दिशा दी और टेक्नोलॉजी का उपयोग बढ़ाने पर बल दिया। उनके मार्गदर्शन में स्वयंसेवकों ने जरूरतमंदों तक हरसंभव सहायता पहुँचाई, जगह-जगह मेडिकल कैंप लगाए। उन्होंने वैश्विक चुनौतियों और वैश्विक विचार को प्राथमिकता देते हुए व्यवस्थाओं को विकसित किया। हमें कई स्वयंसेवकों को खोना भी पड़ा, लेकिन भागवत जी की प्रेरणा ऐसी थी कि अन्य स्वयंसेवकों की दृढ़ इच्छाशक्ति कमजोर नहीं पड़ी।

इस वर्ष की शुरुआत में, मैंने नागपुर में उनके साथ माधव नेत्र चिकित्सालय के उद्घाटन के दौरान मैंने कहा था कि संघ अक्षयवट की तरह है, जो राष्ट्रीय संस्कृति और चेतना को ऊर्जा देता है। इस अक्षयवट वृक्ष की जड़ें इसके मूल्यों की वजह से बहुत गहरी और मजबूत हैं। इन मूल्यों को आगे बढ़ाने में जिस समर्पण से मोहन भागवत जी जुटे हुए हैं, वो हर किसी को प्रेरणा देता है।

समाज कल्याण के लिए संघ की शक्ति के निरंतर उपयोग पर मोहन भागवत जी का विशेष बल रहा है। इसके लिए उन्होंने पंच परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त किया है। इसमें स्व बोध, सामाजिक समरसता, नागरिक शिष्टाचार, कुटुम्ब प्रबोधन और पर्यावरण के सूत्रों पर चलते हुए राष्ट्र निर्माण को प्राथमिकता दी गई है। देश और समाज के लिए सोचने वाले हर भारतवासी को पंच परिवर्तन के इन सूत्रों से अवश्य प्रेरणा मिलेगी।

संघ का हर कार्यकर्ता वैभव संपन्न भारत माता का सपना साकार होते देखना चाहता है। इस सपने को पूरा करने के लिए जिस स्पष्ट विजन और ठोस एक्शन की जरूरत होती है, मोहन जी इन दोनों गुणों से परिपूर्ण हैं।

मोहन जी के स्वभाव की एक और बड़ी विशेषता ये है कि वो मृदुभाषी हैं। उनमें सुनने की भी अदभुत क्षमता है। यह विशेषता न केवल उनके दृष्टिकोण को गहराई देती है, बल्कि उनके व्यक्तित्व और नेतृत्व में संवेदनशीलता और गरिमा भी लाती है।

मोहन जी, हमेशा 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के प्रबल पक्षधर रहे हैं। भारत की विविधता और

भारत भूमि की शोभा बढ़ा रही अनेक संस्कृतियों और परंपराओं के उत्सव में भागवत जी पूरे उत्साह से शामिल होते हैं। वैसे बहुत कम लोगों को ये पता है कि मोहन भागवत जी अपनी व्यस्तता के बीच संगीत और गायन में भी रुचि रखते है। वे विभिन्न भारतीय वाद्ययंत्रों में भी निपुण हैं। पठन-पाठन में उनकी रुचि, उनके अनेक भाषणों और संवादों में साफ दिखाई देती है।

पिछले दिनों देश में जितने सफल जन-आंदोलन हुए चाहे स्वच्छ भारत मिशन हो या बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, मोहन भागवत जी ने पूरे संघ परिवार को इन आंदोलनों में ऊर्जा भरने के लिए प्रेरित किया। मैं पर्यावरण से जुड़े प्रयासों और सस्टेनेबल लाइफस्टाइल को आगे बढ़ाने के प्रति उनके समर्पण को जानता हूँ। मोहन जी का बहुत जोर आत्मनिर्भर भारत पर भी है।

विजयादशमी पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ 100 वर्ष का हो जाएगा। यह भी सुखद संयोग है कि विजयादशमी का पर्व, गांधी जयंती, लाल बहादुर शास्त्री की जयंती और संघ का शताब्दी वर्ष एक ही दिन आ रहे हैं।

यह भारत और विश्वभर के लाखों स्वयंसेवकों के लिए एक ऐतिहासिक अवसर है। हम स्वयंसेवकों का सौभाग्य है कि हमारे पास मोहन भागवत जी जैसे दूरदर्शी और परिश्रमी सरसंघचालक हैं, जो ऐसे समय में संगठन का नेतृत्व कर रहे हैं। एक युवा स्वयंसेवक से लेकर सरसंघचालक तक की उनकी जीवन यात्रा उनकी निष्ठा और वैचारिक दृढ़ता को दर्शाती है। विचार के प्रति पूर्ण समर्पण और व्यवस्थाओं में समयानुकूल परिवर्तन करते हुए उनके नेतृत्व में संघ कार्य का निरंतर विस्तार हो रहा है।

मैं माँ भारती की सेवा में समर्पित मोहन भागवत जी के दीर्घ और स्वस्थ जीवन की पुनः कामना करता हूँ। उन्हें जन्मदिवस पर अनेकानेक शुभकामनाएं। ▪

दीनदयाल जी व्यक्तिगत शुचिता एवं गरिमा के उच्चतम आदर्श-जगत प्रकाश नड्डा

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का संपूर्ण जीवन राष्ट्रसेवा, संगठन और भारतीय संस्कृति के उत्थान हेतु समर्पित रहा। अंत्योदय का उनका चिंतन हमें समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति की सेवा करने की सदैव प्रेरणा देता रहेगा। माँ भारती के वरद पुत्र, महान राष्ट्रवादी विचारक एवं भारतीय जनता पार्टी के पितृ पुरुष पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी सार्वजनिक जीवन में व्यक्तिगत शुचिता एवं गरिमा के उच्चतम आदर्श रहे, श्रद्धेय दीनदयाल जी ने भारतीय संस्कृति की नींव पर सशक्त, समृद्ध और सामर्थ्यशाली भारत के निर्माण के लिए 'एकात्म मानववाद' का महान दर्शन प्रस्तुत किया। अंत्योदय की उनकी अवधारणा "विकसित और आत्मनिर्भर भारत निर्माण" के संकल्प की सिद्धि में अत्यंत महत्वपूर्ण है। राष्ट्रसेवा एवं जनसेवा के उनके महान विचार और कार्य करोड़ों कार्यकर्ताओं के लिए सदैव प्रेरणास्रोत रहेंगे। ▪

'एकात्म मानववाद' के प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय-अमित शाह

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने अंत्योदय और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का विचार देकर जिस मजबूत और आत्मगौरव से भरे राष्ट्र की संकल्पना की थी, वह आज आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में साकार हो रहा है।

भारतीय जनसंघ के संस्थापक व एकात्म मानववाद के प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने एकात्म मानव दर्शन के माध्यम से व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को एक समग्र इकाई मानकर आर्थिक प्रगति के साथ नैतिक व सांस्कृतिक उत्थान पर भी बल दिया। जनसंघ के माध्यम से उन्होंने राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखने वाला राजनीतिक विकल्प दिया। दीनदयाल जी के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद व अन्त्योदय के सिद्धांत हर एक राष्ट्रप्रेमी के लिए प्रेरणीय हैं। ▪

"एकात्म मानववाद" में सनातन संस्कृति का निचोड़ - डॉ. मोहन यादव

- किसी भी पद पर रहें, मन में हमेशा कार्यकर्ता का भाव होना चाहिए।
- कांग्रेस के पास अपना नाम भी नहीं, उधार में मिले नाम से काम चला रहे।
- स्वदेशी का बीज आत्मनिर्भर भारत का वृक्ष बनेगा।
- जीएसटी रिफॉर्म से स्वदेशी बाजार को बहुत ताकत मिलेगी।
- एकात्म मानववाद जीवन को सरल और सार्थक बनाता है।
- पं. दीनदयाल जी का मूल मंत्र स्वावलंबन, स्वदेशी और आत्मनिर्भर भारत था।
- पं. दीनदयाल जी के विचारों को आत्मसात कर आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए कार्य करें।

पं. दीनदयाल उपाध्याय जी का मूल मंत्र स्वावलंबन, स्वदेशी और आत्मनिर्भर भारत था। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में हमारी पार्टी द्वारा सेवा पखवाड़ा का आयोजन किया गया है।

महात्मा गांधी जी ने चरखे से सूत कातकर स्वदेशी की अवधारणा को मजबूत कर चलो गांव की ओर का प्रादुर्भाव किया था। विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई और अंग्रेजों को देश छोड़कर जाना पड़ा था।

पं. दीनदयाल जी के एकात्म मानववाद को अपनाकर ही लोगों के जीवन के कष्टों को समाप्त किया जा सकता है। पं. दीनदयाल जी ने उसी तरह से लोगों के जीवन को कष्ट से निकालने के लिए एकात्म मानववाद का सिद्धांत दिया है, जिस प्रकार से भगवान श्रीकृष्ण ने अपने जीवन में कष्ट सहकर लोगों का उद्धार किया है। सनातन काल से हमारा जो मूल दर्शन है, उसे समझने के लिए एकात्म मानववाद राह दिखाता है। पं. दीनदयाल उपाध्याय जी के विचारों को आत्मसात कर आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए कार्य करें। कांग्रेस पार्टी के बाद देश में कम्युनिस्ट विचाराधारा थी, जिसमें जीवन के बस तीन निशान, रोटी, कपड़ा और मकान था। उसके आगे कम्युनिस्ट पार्टी की कोई सोच नहीं थी। विश्व के कई बड़े और विकसित देशों में बच्चे स्कूल में जाकर गोलियां क्यों मारते हैं? ऐसी घटना इसलिए विदेशों में होती हैं, क्योंकि वहां संस्कार की कमी है। हमारे देश में संस्कार है, इसलिए जीवन में जो आनंद चाहिए, वह भारत के अलावा दुनिया के किसी भी देश में नहीं है। विश्व के कई देशों में 9 आदमी के बाद 10वां आदमी पुलिस वाला है जो सबको कंट्रोल करते हैं। अगर पुलिस वाला नहीं तो समाज कंट्रोल नहीं होता है।

हमारे समाज में गांव के अंदर अगर कोई पुलिस वाला आ जाता है तो लोग इसे अपना अपमान समझते हैं। यह सब संस्कार और जीवन शैली से ही संभव है। पं. दीनदयाल जी के एकात्म मानववाद में भी सनातन संस्कृति और जीवनशैली का निचोड़ है, जो भारत को अन्य देशों से विशिष्ट बनाता है।

एकात्म मानववाद जीवन को सरल और सार्थक बनाता है। हर संबंधों की आयु निश्चित है। लोगों की आयु भी निश्चित है, जिसे कोई बदल नहीं सकता। एक निश्चित समय बाद बेटे और बेटी साथ छोड़कर अलग हो जाते हैं, लेकिन पति-और पत्नी तब तक साथ रहते हैं, जब तक कोई एक दुनिया को छोड़कर न चला जाए। जबकि दुनिया के कई देशों में ऐसा नहीं है। हमारे देश में यह इसलिए संभव हुआ है, क्योंकि हमारी सनातन संस्कृति

जीवन शैली के संबंध में सबसे अलग है। भारत में ऐसी व्यवस्था है कि हर वस्तु एक-दूसरे से जुड़ी हुई है। सभी का एक-दूसरे से संबंध है, जिससे पूरी जीवन पद्धति चलती है। पं. दीनदयाल उपाध्याय जी ने एकात्म मानववाद में इन सभी बातों को बहुत बारीकी से लोगों तक पहुंचाया है। एक मां का अपने बेटे से जो संबंध है, वह संबंध ही एकात्मभाव है। बच्चे के जन्म लेते ही मां के आंचल में बच्चे के लिए दूध आ जाता है। बच्चा उसी दूध से अपना जीवन पूरा करता है। हम लोग परस्पर एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, अलग नहीं हो सकते। लोगों को दो पिंड भले दिख रहा है, लेकिन हैं एक ही। इसी प्रकार भारतीय जनता पार्टी और विचार संगठन हैं। हम लोग इसी आधार पर कार्य करते हैं। सच्चे अर्थों में कार्यकर्ता का प्रशिक्षण इस नाते से पूरा होता है वह पं. दीनदयाल जी के माध्यम से हम सभी को जो एकात्मक जीवन दर्शन प्राप्त हुआ है, उससे सीखते हैं।

पं. दीनदयाल उपाध्याय जी का मूल मंत्र स्वावलंबन, स्वदेशी और आत्मनिर्भर भारत था। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में हमारी पार्टी द्वारा सेवा पखवाड़ा का आयोजन किया गया है। महात्मा गांधी जी ने चरखे से सूत कातकर स्वदेशी की अवधारणा को मजबूत कर चलो गांव की ओर का प्रादुर्भाव किया था। विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई और अंग्रेजों को देश छोड़कर जाना पड़ा था। आज भी स्वदेशी को आगे बढ़ाने की आवश्यकता है।

पं. दीनदयाल उपाध्याय जी ने अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति तक के सुख की कामना करते हुए एकात्मवाद का जो दर्शन दिया था, उसका मूल मंत्र भी स्वावलंबन, स्वदेशी, आत्मनिर्भर और गांवों में हमारी बनी हुई व्यवस्थाएं है। स्वदेशी के कारण हमारा देश हर बार दुनिया के सामने खड़ा हो जाता है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में हमारी सरकार भी गरीब से गरीब व्यक्ति तक लाभ पहुंचाने का प्रयास कर स्वदेशी के मूल मंत्र के साथ आगे बढ़ रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने जो जीएसटी रिफॉर्म के माध्यम से जो सौगातें दी हैं इससे स्वदेशी बाजार को ताकत मिलेगी। आत्मनिर्भर भारत की दिशा में छोटे व्यापारियों को भी मदद मिलेगी। हमारा देश पहले आत्मनिर्भर था और हम सब संसाधन अपने आसपास ही जुटाते थे, आज फिर उसी दिशा में स्वदेशी के मूल मंत्र को आगे बढ़ाकर लक्ष्य की तरफ तेजी से बढ़ना है। ▪

पं. दीनदयाल जी के विचारों को आगे बढ़ाना है- हेमंत खण्डेलवाल

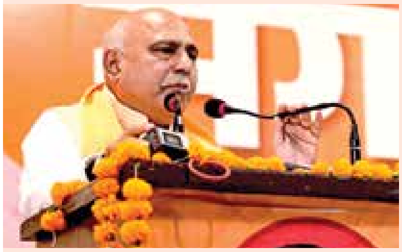

- **पं. दीनदयाल उपाध्याय जी के व्यक्तित्व ने हमारी विचारधारा को दिशा दी।**
- **प्रधानमंत्री मोदी जी के कार्यों में नजर आता है पं. दीनदयाल जी का व्यक्तित्व।**

पं. दीनदयाल उपाध्याय जी एक ऐसे व्यक्तित्व थे, जिन्होंने हमारी विचारधारा को एक दिशा दी। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी गरीब कल्याण के लिए आज जो कार्य कर रहे हैं उसमें पं. दीनदयाल उपाध्याय जी का व्यक्तित्व नजर आता है। हम सब पार्टी के कार्यकर्ता पं. दीनदयाल उपाध्याय जी के बताए गए मार्गों पर चलते हैं। जीवन में कितनी भी कठिनाई आए हमें उनके बताए गए मार्गों पर चलकर उनकी विचारधारा को आगे बढ़ाना है। यही हमारी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के आह्वान पर पूरे देश में एक ही समय में सभी ने मिलकर स्वच्छता अभियान चलाया और साफ-सफाई कर स्वच्छता का संदेश दिया। वर्ष 2014 मे जब श्री मोदी जी प्रधानमंत्री बने उसके बाद उन्होंने स्वच्छता का आह्वान किया था, उससे एक वातावरण बना और लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ी। मध्यप्रदेश स्वच्छता में लगातार बेहतर प्रदर्शन कर मॉडल के तौर पर उभरा है। पर्यावरण को बचाने का संदेश देने के लिए पौधरोपण के कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया, जिससे हमारी आने वाली पीढ़ी सुरक्षित रह सके। जीएसटी रिफॉर्म से लोगों को फायदा मिलना शुरू हो गया है। स्वदेशी की दिशा में भी लगातार लोगों को जागरूक करने का कार्य किया जा रहा है। ▪

उप राष्ट्रपति चुनाव

एनडीए उम्मीदवार श्री सीपी राधाकृष्णन की ऐतिहासिक विजय-अमित शाह

श्री राधाकृष्णन जी लोकतंत्र की जड़ों को मजबूत करने वाले प्रेरणादायी व्यक्तित्व हैं। जमीनी स्तर से उठकर नेतृत्व करने वाले और प्रशासन का गहन ज्ञान रखने वाले श्री सी.पी. राधाकृष्णन जी का मार्गदर्शन संसदीय लोकतंत्र की गरिमा को और सशक्त करेगा। श्री राधाकृष्णन जी ने अपने लंबे सार्वजनिक जीवन में सदैव पारदर्शिता, सेवा और समर्पण की मिसाल पेश की है। देश के वंचित और शोषित वर्गों के लिए उनकी प्रतिबद्धता हमेशा प्रेरणादायी रही है। उपराष्ट्रपति के रूप में उनका अनुभव और दृष्टिकोण निश्चित रूप से लोकतंत्र की जड़ों को और मजबूत करेगा। श्री राधाकृष्णन जी को राज्यसभा की मर्यादा के संरक्षक के रूप में इस नई जिम्मेदारी की यात्रा के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ। उनके मार्गदर्शन में उच्च सदन लोकतांत्रिक आदर्शों और संवैधानिक मूल्यों की नई ऊँचाइयाँ छुएगा और जनता के हितों की सर्वोत्तम रक्षा सुनिश्चित करेगा। ▪

विकसित भारत के लिए एक देश-एक चुनाव आवश्यक है- हेमंत खण्डेलवाल

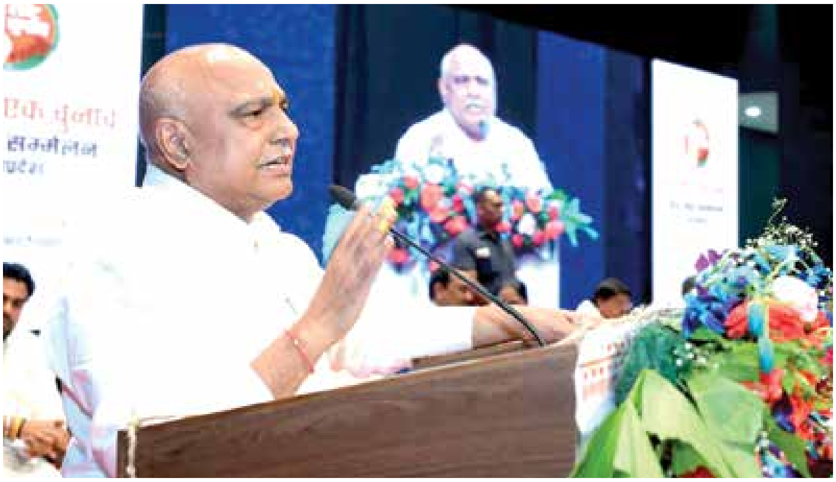

आपातकाल के बाद संसद और विधानसभाओं के कार्यकाल में अंतर आया और कांग्रेस पार्टी ने एक साथ चुनाव की परंपरा तोड़ दी। कांग्रेस पार्टी एक साथ चुनाव कराए जाने से बचना चाहती है, क्योंकि उसे मालूम है कि जनता उस पर भरोसा नहीं करती।

- **कांग्रेस और विपक्षी दल मतदाताओं पर प्रश्न चिन्ह लगाकर उनका अपमान कर रहे।**
- **कांग्रेस द्वारा लगाए गए आपातकाल से देश में एक साथ चुनाव कराने की परंपरा टूटी।**
- **एक साथ चुनाव कराने से आयुष्मान जैसी दो योजनाओं के बराबर की राशि प्रति वर्ष बचेगी।**
- **दुनिया के कई देश एक साथ चुनाव कराने के पक्षधर, इससे देश के लाखों करोड़ों रुपए बचेंगे।**

देश में वन नेशन-वन इलेक्शन अब जरूरी हो गया है। आजादी के बाद देश में राज्यों की विधानसभाओं और लोकसभा के चुनाव एक साथ कराने की परंपरा रही है। वर्ष 1952, 1957, 1962 और 1967 में देश में आम चुनाव और राज्यों की विधानसभाओं के चुनाव एक साथ ही हुए थे। लेकिन इंदिरा गांधी के नेतृत्व में जब देश में कांग्रेस की सरकार बनीं उसके बाद स्थिति अलग हो गई। इंदिरा गांधी ने प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बने रहने के लिए लोकतंत्र का गला घोंटा और देश में आपातकाल लगा दिया। आपातकाल के बाद संसद और विधानसभाओं के कार्यकाल में अंतर आया और कांग्रेस पार्टी ने एक साथ चुनाव की परंपरा तोड़ दी। कांग्रेस पार्टी एक साथ चुनाव कराए जाने से बचना चाहती है, क्योंकि उसे मालूम है कि जनता उस पर भरोसा नहीं करती। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश को प्रगति के पथ पर निरंतर आगे ले जाने का कार्य कर रहे हैं। कांग्रेस और विपक्षी दल एक साथ चुनाव कराए जाने का इसलिए विरोध करते हैं, क्योंकि वे विकास के नाम पर जनता के बीच नहीं जाते। विपक्षी दल आरोप लगाते हैं कि सत्ताधारी दल एक साथ इसलिए चुनाव कराना चाहता है कि लोकसभा चुनाव के समय देश में एक लहर होती है और उसी लहर के भरोसे सत्ताधारी दल राज्यों में भी चुनाव जीतना चाहता है। कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों को यह पता होना चाहिए कि देश की जनता बहुत समझदार है। वह कई बार चार-चार चुनावों के लिए एक साथ मतदान करते हैं। कांग्रेस और विपक्षी दल मतदाताओं पर इस तरह के आरोप लगाकर देशभर के भगवान रूपी मतदाताओं को अपमानित करने का कार्य कर रहे हैं।

इंडोनेशिया, स्पेन और स्वीडन जैसे देशों में एक साथ ही चुनाव कराए जा रहे हैं। विश्व के कई देश एक साथ चुनाव कराने के पक्षधर हैं और इस दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। दुनिया में हर राष्ट्र के सामने चुनाव के बढ़ते खर्च को रोकने और कम करने की चुनौती है। चुनाव के खर्च को कम करने के लिए सबसे आसान तरीका है कि देश में विधानसभाओं और लोकसभा के चुनाव एक साथ कराए जाएं। सरकारी आंकड़ों के अनुसार बीते वर्ष 2024 में हुए लोकसभा चुनाव में करीब एक लाख करोड़ की राशि खर्च हुई थी। यह चुनाव खर्च उम्मीदवारों और सरकारों का हुआ। सरकारों ने चुनाव कराने में जो खर्च किया, वह जनता का पैसा है। देश में राज्यों के विधानसभाओं और लोकसभा के चुनाव एक साथ कराए जाएं तो विधानसभा के चुनाव खर्च में ही लोकसभा भी चुनाव संपन्न हो जाएगा। पांच साल में चुनाव कराने पर एक लाख करोड़ खर्च होते हैं, यानी 20 हजार करोड़ प्रतिवर्ष। एक साथ चुनाव कराने में औसतन 20 हजार करोड़ रूपए प्रति वर्ष बचेंगे। देश में करोड़ों लोगों को जीवन देने वाली आयुष्मान भारत योजना का प्रति वर्ष का बजट 9500 करोड़ रूपए है। यानी एक देश-एक चुनाव लागू होने से प्रति वर्ष आयुष्मान भारत योजना जैसी दो योजनाओं के बराबर की राशि देश में बचाई जा सकती है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत अमेरिका और चीन से आगे बढ़ने के लिए ठोस कदम उठा रहा है। हमें इन देशों से आगे निकलने के लिए धन बचाना होगा और उसके लिए भी एक देश-एक चुनाव कारगर कदम होगा। युवा पीढ़ी इस बात को समझे और जनता को भी यह समझाए कि विकसित भारत के लिए एक देश-एक चुनाव आवश्यक है। ▪

'वन नेशन-वन इलेक्शन' देश की आवश्यकता- कैलाश विजयवर्गीय

- **एक साथ चुनाव होने से संसाधनों की बचत, विकास के लिए अधिक समय मिलेगा।**

वन नेशन, वन इलेक्शन से लोकतांत्रिक मर्यादाओं का संरक्षण होगा और बार-बार लगने वाली आचार संहिता से विकास कार्य प्रभावित नहीं होंगे। स्वतंत्रता के बाद प्रारंभिक वर्षों में देश में एक साथ चुनाव होते थे, लेकिन कांग्रेस की तानाशाही के कारण यह व्यवस्था टूट गई। देश की रियासतों को मिलाने का काम सरदार वल्लभ भाई पटेल ने किया, लेकिन पं. जवाहरलाल नेहरू की एक गलती ने 'एक देश में दो संविधान' बनाकर बहुत बड़ी गलती की थी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'एक देश- एक संविधान' लागू करके राष्ट्रीय एकता को मजबूत किया, अब 'एक राष्ट्र-एक चुनाव' का विचार भी उसी दिशा में अगला कदम है। बार-बार होने वाले चुनावों के कारण सरकारें लंबे समय तक आचार संहिता में बंधी रहती हैं, जिससे विकास कार्य रुक जाते हैं। जैसे इंदौर में लगातार तीन वर्षों 2022 में नगर निगम, 2023 में विधानसभा और 2024 में लोकसभा चुनाव के कारण विकास की रफ्तार धीमी पड़ गई। बंगाल की राज्य सरकार अपनी राजनीतिक कुर्सी बचाने के लिए आंतरिक सुरक्षा और राष्ट्रीय हितों की अनदेखी कर रही हैं।

विपक्षी दल और नकली गांधी देश को गलत दिशा में ले जाने का काम कर रहे हैं। एक साथ चुनाव होने से शासन अधिक स्थिर और जवाबदेह बनेगा। 'वन नेशन-वन इलेक्शन' लागू होने से भारत न केवल विकास के नए आयाम छुएगा, बल्कि वैश्विक स्तर पर एक मजबूत और प्रभावशाली राष्ट्र के रूप में स्थापित होगा। इस व्यवस्था से बचाया गया धन और समय देश-प्रदेश के विकास कार्यों में लग सकेगा, जिससे आम नागरिकों को सीधा लाभ मिलेगा। ▪

"विकसित भारत" का रास्ता "आत्मनिर्भर भारत" से

अखिलेश जैन, सीए

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का विकसित भारत @ 2047 का लक्ष्य 140 करोड़ लोगों के सहयोग, समर्पण, व विकास से ही संभव हो सकता है। जब तक 140 करोड़ लोगों का विकास नहीं होगा, विकसित भारत @ 2047 का संकल्प सिद्ध नहीं होगा। इस मंत्र को सिद्ध करने के लिए हर हाथ को काम, हर परिवार को छत, हर परिवार को शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति, पौष्टिक भोजन जैसी बुनियादी आवश्यकताओं की गारंटी जरूरी है। देश का विदेशी निर्भरता की जगह स्वदेशी निर्भरता आवश्यक है। अभी हाल में संपन्न ऑपरेशन सिंदूर की सफलता भी स्वदेशी हथियारों, स्वदेशी रक्षा प्रणाली के कारण ही सफल सिद्ध हो पाई। करोना से लड़ाई भी स्वदेशी वैक्सीन के कारण ही संभव हो पाई। अगर हथियारों, रक्षा प्रणाली या वैक्सीन पर विदेशी निर्भरता होती तो देश को जान - माल की भारी कीमत चुकानी पड़ती। स्वदेशी व आत्मनिर्भर भारत भारतीयों की शान का प्रतीक है। भारत के स्वाभिमान का प्रतीक है। भारत के सम्मान का प्रतीक है। प्रधानमंत्री जी इस दिशा में पहल कर चुके हैं। कदम आगे बढ़ा चुके हैं।

भारत का यूपीआई आज विश्व को आश्चर्यचकित कर रहा है। ग्रीन ऊर्जा में भारत नित नए मुकाम प्राप्त कर रहा है। अनाज उत्पादन में आत्मनिर्भरता हासिल कर निर्यात प्रारंभ हो चुका है। रक्षा उत्पादन 100 देशों को भेजा जा रहा है। आयकर व जीएसटी रिफॉर्म से ढाई लाख करोड़ रुपए जनता के हाथों में अधिक आने की संभावना है। जन-जन की क्रय शक्ति- व्यापार, व्यवसाय व उद्योगों को नई ऊर्जा प्रदान करेगी। अभी 25 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर आ चुके हैं। 60 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर आने के लिए प्रयासरत हैं। सोचिए सरकार के प्रयासों की ईमानदारी देश का नया इतिहास बनाने जा रही है। गरीबी रेखा से बाहर आए लोगों को अपना नया स्तर बनाए रखने के लिए सरकार व देश का समर्थन आवश्यक है। स्वदेशी का समर्थन देश को नई दिशा दे सकता है।

आत्मनिर्भर भारत ही वह रास्ता है या मंत्र है जिस पर चलकर विकसित भारत @2047 के लक्ष्य को भेदा जा सकता है। आत्मनिर्भर भारत ही वह रास्ता है या मंत्र है जिससे आयात के बिल को निर्यात के मुनाफे में बदला जा सकता है। आत्मनिर्भर भारत ही वह रास्ता है या मंत्र है जिससे वैश्विक परिवर्तनों से देश को बचाया जा सकता है। आवश्यकता केवल देश को ईमानदार नेतृत्व की थी, जो भारत को प्राप्त हो चुका है। भारत की सफलता में ही विश्व का कल्याण छुपा हुआ है। आत्मनिर्भर भारत के अश्वमेध यज्ञ के घोड़े को रोकना अब संभव नहीं है।

(लेखक भाजपा म.प्र के प्रदेश कोषाध्यक्ष हैं)

मोदी जी 'राष्ट्र प्रथम' की जीवंत प्रेरणा हैं - अमित शाह

- त्याग और समर्पण के प्रतीक, करोड़ों देशवासियों की प्रेरणा, यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी हैं।
- मोदी जी की जीवन यात्रा दर्शाती है कि जब निश्चय हिमालय के समान अडिग और दृष्टि समुद्र के समान व्यापक हो, तो बड़े से बड़े परिवर्तन संभव हो जाते हैं।
- मोदी जी के नेतृत्व में 'विकसित भारत' और 'आत्मनिर्भर भारत' की यात्रा पर पूरे देश को गर्व है।
- मोदी ने सदैव 'राष्ट्र प्रथम' की भावना को आगे रखा है।
- जिन क्षेत्रों तक विकास पहुंचना कठिन था, प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में वहां भी विश्वस्तरीय इंफ्रास्ट्रक्चर पहुंचा है।
- मोदी जी ने यह सिद्ध कर दिया है कि गरीबों का कल्याण और अर्थव्यवस्था का उत्थान समानांतर संभव है।
- 27 देशों ने हमारे प्रधानमंत्री जी को अपना सर्वोच्च नागरिक सम्मान प्रदान किया है, जो मोदी जी की वैश्विक लीडरशिप का प्रमाण है।
- मोदी जी के नेतृत्व में भारत अंतरिक्ष से लेकर समुद्र की गहराई तक नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है।
- आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का जीवन 'राष्ट्र प्रथम' की भावना का सजीव उदाहरण है और उनके नेतृत्व में भारत ने अभूतपूर्व उपलब्धियां हासिल की हैं।

त्याग और समर्पण के प्रतीक, करोड़ों देशवासियों की प्रेरणा, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सामाजिक जीवन में पांच दशक से अधिक समय से देशवासियों के कल्याण हेतु बिना रुके और बिना थके कार्य किया है। वे हर एक देशवासी के लिए 'राष्ट्र प्रथम' की जीवंत प्रेरणा हैं। संघ से संगठन और सरकार तक आदरणीय मोदी जी की जीवन यात्रा यह दर्शाती है कि जब निश्चय हिमालय के समान अडिग और दृष्टि समुद्र के समान व्यापक हो, तो बड़े से बड़े परिवर्तन संभव हो जाते हैं। शासन व्यवस्था में शुचिता, निर्णयों में दृढ़ता और नीतियों में स्पष्टता लाते हुए प्रधानमंत्री ने वंचितों, पिछड़ों, गरीबों, महिलाओं और आदिवासियों को शासन के केंद्र में स्थान दिलाया है।

यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने करोड़ों देशवासियों के जीवन में अकल्पनीय परिवर्तन लाते हुए उन्हें 'विकसित भारत' और 'आत्मनिर्भर भारत' की यात्रा से जोड़ा है, जिस पर पूरे देश को गर्व है। बीते चार दशकों से अलग-अलग दायित्वों में माननीय मोदी जी के साथ कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है और हर भूमिका में उन्होंने 'राष्ट्र प्रथम' की भावना को आगे रखा है। चाहे संघ के प्रचारक हों, भाजपा के संगठन मंत्री, गुजरात के मुख्यमंत्री या बीते 11 वर्षों से देश के प्रधानमंत्री, श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सदैव रचनात्मक कार्यों और निर्णयों को प्राथमिकता दी है। यह सभी कार्यकर्ताओं के लिए हर्ष का विषय है कि उनके हर निर्णय ने देश को आगे बढ़ाया है।

जिन क्षेत्रों तक विकास पहुंचना कठिन था आदरणीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में वहां भी विश्वस्तरीय इंफ्रास्ट्रक्चर पहुंचा है। असम का सबसे लंबा पुल, कश्मीर का चिनाब रेलवे ब्रिज, डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर और सेमीकंडक्टर यूनिट जैसी उपलब्धियां भारत को नए आयामों पर ले जा रही हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने यह सिद्ध कर दिया है कि गरीबों का कल्याण और अर्थव्यवस्था का उत्थान समानांतर संभव है। उनके नेतृत्व में भारत 11वीं से चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बना है। IMF ने भारत को ग्लोबल इकोनॉमी का ब्राइट स्पॉट कहा है और देश का ग्रोथ रेट दुनिया में सबसे ऊंचा रहा है। आज देश के 60 करोड़ लोग गरीबी से बाहर आ रहे हैं और भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था का नेतृत्व कर रहा है।

समस्याओं का दूरदृष्टि से समाधान करना आदरणीय मोदी जी के व्यक्तित्व की विशेषता है। युद्धों और तनाव के दौर में वे पूरी दुनिया के लिए संवाद-सेतु बनकर उभरे हैं। इसी कारण 27 देशों ने उन्हें सर्वोच्च नागरिक सम्मान प्रदान किया है, जो उनकी वैश्विक लीडरशिप का प्रमाण है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत अंतरिक्ष से लेकर समुद्र की गहराई तक नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। माननीय मोदी जी के नेतृत्व में स्वदेशी कोविड वैक्सीन, रक्षा प्रणाली, स्टार्टअप्स, इनोवेशन और किसानों के उत्थान से लेकर मैन्युफैक्चरिंग मिशन तक, हर क्षेत्र में स्वावलंबी भारत के निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ है। ▪

मोदी जी 'राष्ट्र प्रथम' को समर्पित हैं- जगत प्रकाश नड्डा

- **विश्व के सबसे लोकप्रिय राजनेता, नये भारत के शिल्पकार, यशस्वी प्रधान सेवक आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी जी को जन्म दिवस की आत्मीय बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएँ।**
- **आदरणीय प्रधानमंत्री जी के दूरदर्शी नेतृत्व में हमारे राष्ट्र की आध्यात्मिक व सांस्कृतिक विरासत को वैश्विक प्रतिष्ठा मिली है। आपका कुशल मार्गदर्शन हम सभी कोटिश: भाजपा कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणापुंज है।**
- **स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार अभियान अब तक का सबसे बड़ा महिला और बाल स्वास्थ्य का जन-आंदोलन है। इसमें महिलाओं की व्यापक स्वास्थ्य जांच के लिए पूरे देश में एक लाख से अधिक स्वास्थ्य शिविर लगाए गये।**
- **माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का जीवन-सेवा,राष्ट्र प्रथम की भावना और आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को समर्पित है। जनता को मोदी जी के विजन और योगदान से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है।**
- **आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जीवन के 75 वर्षों का प्रत्येक पल सेवा की प्रेरणा से ओतप्रोत और 'राष्ट्र प्रथम' के संकल्प के लिए समर्पित रहा है।**
- **सेवा ही उनकी प्रेरणा है और 'राष्ट्र प्रथम' उनका संकल्प है।**
- **सभी लोग अपने दैनिक जीवन से समय निकालकर कम से कम 5 दिन, प्रतिदिन एक घंटा स्वच्छता अभियान में अपना योगदान अवश्य दें और स्वयं को इससे जोड़ें।**
- **'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान पर्यावरण की दृष्टि से आयोजित किया गया है। स्वच्छता के संस्कार को हमें अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाना है।**
- **प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में स्वदेशी और आत्मनिर्भर भारत की कल्पना को साकार करने के अभियान में हम सबको जुड़ना है। हम सबको अपने जीवन में खादी को शामिल करना चाहिए।**

सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास के ध्येय के साथ प्रधानमंत्री मोदी जी ने सभी वर्गों के उत्थान और 'आत्मनिर्भर व विकसित भारत निर्माण' के लक्ष्य को साकार करने की दिशा में कई युगांतकारी कदम उठाये हैं। आपके दूरदर्शी नेतृत्व में हमारे राष्ट्र की आध्यात्मिक व सांस्कृतिक विरासत को वैश्विक प्रतिष्ठा मिली है। आपका कुशल मार्गदर्शन हम सभी कोटिशः भाजपा कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणापुंज है।

'स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार अभियान' की देशव्यापी पहल महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य और पोषण को नई दिशा देने के उद्देश्य से शुरू की जा रही है। यह अब तक का सबसे बड़ा महिला और बाल स्वास्थ्य जन-आंदोलन है। इसमें पूरे देश में एक लाख से अधिक स्वास्थ्य शिविर लगाए जाएंगे। सभी सरकारी स्वास्थ्य संस्थानों में रोजाना स्वास्थ्य शिविर आयोजित होंगे, जहां महिलाओं की व्यापक स्वास्थ्य जांच की जाएगी।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का जीवन-सेवा, राष्ट्र प्रथम की भावना और आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को समर्पित है। जनता को मोदी जी के विजन और योगदान से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है।

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जीवन के 75 वर्षों का प्रत्येक पल सेवा की प्रेरणा से ओतप्रोत और 'राष्ट्र प्रथम' के संकल्प के लिए समर्पित रहा है। उनका ऐसा जीवन संसद के सामने एक आदर्श के रूप में उपस्थित है। माननीय प्रधानमंत्री जी ने न केवल देश को नई दिशा दी है, बल्कि पूरी दुनिया में भारतीय संस्कृति और भारतीय विचारधारा को प्रतिपादित कर उसे यशस्वी बनाने में बहुत बड़ा योगदान दिया है। पिछले 11 वर्षों में भारत के प्रधानमंत्री के रूप में जहां उन्होंने देश को मजबूती प्रदान की है, वहीं वैश्विक स्तर पर भी भारत का कद बढ़ाया है। उनके नेतृत्व में पूरे विश्व ने भारत को पहचाना है और सम्मान दिया है। सेवा ही उनकी प्रेरणा है और 'राष्ट्र प्रथम' उनका संकल्प है।

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने स्पष्ट किया है कि जो कुछ भी भारत में बनता है, जिसमें भारत के लोगों का पसीना और भारत की मिट्टी की खुशबू है, वही सच्चा स्वदेशी है। 2 अक्टूबर को गांधी जयंती के अवसर पर, जिस तरह स्वतंत्रता संग्राम के दौरान लाखों कार्यकर्ताओं ने खादी को अपनाया था, उसी प्रकार आज भी हम सबको अपने जीवन में खादी को शामिल करना चाहिए।

आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में हम सबका योगदान आवश्यक है। जब हम स्वदेशी की बात करते हैं तो यह ध्यान में रखना चाहिए कि आज हम फाइटर जेट्स, कॉम्बैट प्लेन्स और ब्रह्मोस जैसी मिसाइल प्रणाली बना रहे हैं, जिसकी चर्चा पूरी दुनिया में हो रही है। यह किसी का उदाहरण लेकर नहीं, बल्कि पूर्णतः स्वदेशी दृष्टिकोण से विकसित किया गया है।

यह समझना आवश्यक है कि हमें ऐसा नेतृत्व मिला है जिसने देश को आगे बढ़ाने में हर पल योगदान दिया है। प्रधानमंत्री मोदी जी ने अपने विजन को धरती पर उतारकर दिखाया है और उसी विजन ने देश को नई दिशा दी है।

छोटे बच्चे जो स्कूलों में पढ़ रहे हैं, उन्हें भी यह जानकारी होनी चाहिए कि किस प्रकार हमारे प्रधानमंत्री जी ने देश को एक सशक्त, सुरक्षित और सामर्थ्यवान राष्ट्र बनाया है तथा आत्मनिर्भर भारत और विकसित भारत की ओर ले जाने में अपना योगदान दिया है। यह हम सबके लिए गर्व की बात है। ▪

प्रधानमंत्री जी स्वदेशी का संकल्प और राष्ट्र निर्माण के प्रेरक

प्रधानमंत्री जी का संपूर्ण जीवन परिश्रम, पुरुषार्थ और सेवा के प्रेरणादायी संकल्प की यात्रा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माध्यम से राष्ट्र और समाज सेवा का संकल्प लेकर उन्होंने अपने सार्वजनिक जीवन की यात्रा आरंभ की, जो प्रधानमंत्री के रूप में भी ध्येयनिष्ठ रही है।

डॉ. मोहन यादव

- **परिश्रम में जो तपा है, उसने ही तो इतिहास रचा है।**
- **जिसने फौलादी चट्टानों को तोड़ा है, उसने ही समय को मोड़ा है।**
- **समय को मोड़ देने का भी यही समय है, सही समय है।**

यह उद्घोष करने वाले हमारे प्रेरक, मार्गदर्शक और भारत निर्माण के दृष्टा यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को उनके जन्मदिवस पर अनंत शुभकामनाएं। हमारा सौभाग्य है कि प्रधानमंत्री जी इस विशेष दिवस पर मध्यप्रदेश में थे। उनकी इस यात्रा से प्रदेश को बड़ी सौगात मिली। धार जिले के भैंसोला ग्राम में देश के पहले 'पीएम मित्र पार्क' की आधारशिला रखी गई। इसके साथ ही 'स्वस्थ नारी-सशक्त परिवार और पोषण अभियान' तथा 'स्वच्छता ही सेवा' पखवाड़े का शुभारंभ हुआ।

प्रधानमंत्री जी का संपूर्ण जीवन परिश्रम, पुरुषार्थ और सेवा के प्रेरणादायी संकल्प की यात्रा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माध्यम से राष्ट्र और समाज सेवा का संकल्प लेकर उन्होंने अपने सार्वजनिक जीवन की यात्रा आरंभ की, जो प्रधानमंत्री के रूप में भी ध्येयनिष्ठ रही है। उनके लिए राष्ट्र प्रथम और सर्वोपरि है। यह उनके राष्ट्र निर्माण और देशहित में लिए गए निर्णयों और नेतृत्व क्षमता का ही परिणाम है कि भारत की गणना विश्व के अग्रणी राष्ट्रों में हो रही है।

उनके प्रत्येक निर्णय में राष्ट्र की नींव को सशक्त करने की झलक है। कश्मीर में धारा 370 को समाप्त करना और उच्चतम न्यायालय के निर्णय के बाद श्रीरामलला को अपने जन्म स्थान अयोध्या में प्रतिष्ठित करने में उनकी पहल अविश्वसनीय है। उन्होंने एक राष्ट्र, एक पहचान के लिए विभाजनकारी प्रवृत्तियों को समाप्त किया और समाज में एकत्व का भाव स्थापित किया। उनका दूरदर्शी नेतृत्व आधुनिक भारत को आत्मनिर्भर, सुरक्षित, समृद्ध और सांस्कृतिक रूप से गौरवशाली राष्ट्र बनाने की दिशा में निरंतर प्रेरित कर रहा है। यह हम सभी के लिए गर्व की बात है कि उनके मार्गदर्शन में जनकल्याण, आर्थिक सुदृढ़ीकरण, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और राष्ट्रीय सुरक्षा के क्षेत्र में भारत को अनेक ऐतिहासिक उपलब्धियां प्राप्त हुई हैं।

प्रधानमंत्री के रूप में दायित्व संभालते ही सबसे पहले उन्होंने देशवासियों के स्वस्थ जीवन के लिए स्वच्छता अभियान छेड़ा। वे स्वयं हाथ में झाड़ू लेकर दिल्ली के प्रगति मैदान पहुँचे। गांव-गांव में स्वच्छता अभियान चलाया गया। प्रधानमंत्री जी के आह्वान पर मध्यप्रदेश की जनता भी इस अभियान में जुट गई और गांव से लेकर नगर तक स्वच्छता अभियान में मध्यप्रदेश अग्रणी राज्य बना। इंदौर ने लगातार 8 बार देश में स्वच्छ शहर के रूप में प्रथम स्थान प्राप्त किया। श्री मोदी जी ने आम नागरिक को आधुनिक चिकित्सा सेवा प्रदान करने के लिए आयुष्मान भारत योजना शुरू की, जिससे गरीब और असहाय परिवारों को उपचार में सहायता मिली। इस योजना से 40 करोड़ से अधिक नागरिकों को मुफ्त स्वास्थ सेवाएं प्राप्त हो रही हैं। समाज को अपने सांस्कृतिक गौरव के प्रति आत्मविश्वास उत्पन्न कराने के लिये प्रधानमंत्री जी ने हमें 'विरासत के साथ विकास' का नारा दिया। भारतीय संस्कृति के गौरव और आधुनिकता के संतुलन को साधते हुए उन्होंने लोगों में आत्मनिर्भरता और राष्ट्रप्रेम की भावना जगाई।

श्री मोदी जी ने भारत की अर्थव्यवस्था को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। जब उन्होंने कार्यभार संभाला था तब भारत विश्व की ग्यारहवीं अर्थव्यवस्था था। केवल ग्यारह वर्षों में भारत चौथे स्थान पर पहुंचा और अब तीसरी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। तेल आयात, व्यापार, रक्षा उत्पादन और तकनीकी नवाचार में भारत ने नई मिसाल कायम की है। आयुध निर्यातक देश के रूप में भी भारत ने अपनी सैन्य क्षमता का प्रदर्शन किया। 'स्पेस टेक्नोलॉजी' में भारत ने चंद्रमा के दक्षिण ध्रुव पर तिरंगा फहराकर विश्व

को चकित कर दिया और विज्ञान तथा तकनीक में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता है कि वे जो कहते हैं उसका क्रियान्वयन भी करते हैं। उन्होंने इसी वर्ष स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से जीएसटी रिफॉर्म की घोषणा की थी और एक माह के भीतर इसे लागू करने का निर्णय ले लिया। इस फैसले से देश की कर-प्रणाली सरल होगी, महंगाई कम होगी और आर्थिक न्याय के साथ समावेशी विकास को गति मिलेगी। प्रधानमंत्री जी की आर्थिक नीतियों ने निवेश, उत्पादन और रोजगार के क्षेत्र में नई संभावनाएं निर्मित की हैं। ये नीतियाँ देशवासियों को राहत देने के साथ वैश्विक स्तर पर भारत के आत्म-सम्मान का प्रतीक बनी। अमेरिका जैसी आर्थिक महाशक्ति ने भारत पर भारी टैरिफ लागू कर दबाव बनाने की कोशिश की, लेकिन श्री मोदी जी की रणनीति ने उन्हें पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। रूस और चीन के साथ सहयोग कर नए व्यापारिक मार्ग स्थापित करना और जीएसटी जैसे आर्थिक सुधार लागू करना उनकी कुशल और निर्णायक नेतृत्व क्षमता का परिणाम है।

प्रधानमंत्री जी का लक्ष्य है कि देश का युवा आत्मनिर्भर बने और राष्ट्र निर्माण में अग्रणी भूमिका निभाए। युवाओं को उनकी क्षमता के अनुरूप रोजगार देने के लिए उन्होंने 'प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना' लागू की। इसका उद्देश्य साढ़े तीन करोड़ से अधिक युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराना है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में युवाओं को कौशल विकास, स्वरोजगार, स्टार्टअप, तकनीकी नवाचार और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ने के अवसर मिल रहे हैं। मुद्रा योजना के तहत लगभग 52.5 करोड़ छोटे उद्यमियों को वित्तीय सहायता प्रदान कर उनके व्यवसाय को गति दी गई।

प्रधानमंत्री जी का मानना है कि किसी भी परिवार, समाज और राष्ट्र की नींव में महिलाओं की भागीदारी महत्वपूर्ण होती है। उन्होंने महिलाओं के कल्याण, सुरक्षा और आर्थिक स्वावलंबन के लिए अनेक योजनाएँ लागू की हैं। उज्ज्वला योजना से 10.33 करोड़ से अधिक महिलाओं को धुएं से मुक्ति दिलाई। इससे महिलाओं के स्वास्थ्य में भी सुधार हुआ और उन्हें सम्मान जनक जीवन जीने का अवसर भी मिला। प्रधानमंत्री आवास योजना से 4 करोड़ से अधिक लोगों को संपत्ति का अधिकार मिला। महिला आरक्षण लागू कर उन्होंने महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता को बढ़ावा दिया। 'लखपति दीदी' अभियान के माध्यम से 3 करोड़ महिलाओं को आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में आगे बढ़ाया जा रहा है। पिछले 10 वर्षों में उन्होंने 25 करोड़ लोगों को गरीबी से बाहर निकाला है। उन्होंने जनकल्याण की योजनाओं को जन-जन तक पहुँचाने के लिए निरंतर प्रयास किए। 'प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना' के तहत 81 करोड़ से अधिक नागरिकों को निःशुल्क खाद्यान्न दिया गया। स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत 12 करोड़ से अधिक शौचालय बनाए गए, जिससे स्वच्छता और स्वास्थ्य में सुधार हुआ। 'जल जीवन मिशन' के तहत 15 करोड़ से अधिक घरों तक नल से जल पहुंचाया गया। इन योजनाओं ने देश के हर वर्ग को सीधे लाभ पहुँचाया।

रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' से वे देश के हर जन-मन से जुड़े, हरेक की समस्या को जाना और समाधान पहुँचाने का प्रयास किया। उन्होंने राष्ट्र की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। सीमाओं की सुरक्षा, आतंकवाद का सामना और वैश्विक मंच पर भारत की स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए उन्होंने अनेक निर्णय लिए। 'ऑपरेशन सिंदूर' से भारत ने अपनी सैन्य क्षमता का प्रदर्शन किया और विश्व को भारत की शक्ति से परिचित कराया। उनके नेतृत्व में भारतीय सेना को आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित किया गया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का नेतृत्व सेवा, त्याग, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और राष्ट्रप्रेम का प्रतीक है। उनके द्वारा चलाए गए कार्यक्रमों ने आम नागरिक को राहत दी, स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान की, आर्थिक विकास की राह दिखाई, सांस्कृतिक चेतना को बढ़ावा दिया। उनके नेतृत्व में भारत ने संघर्ष से समाधान, संकट से अवसर और सीमित संसाधनों से वैश्विक प्रतिष्ठा की यात्रा तय की है।

प्रधानमंत्री जी के जन्मदिवस पर यह संकल्प लें कि उनके आदर्शों का अनुसरण करते हुए राष्ट्रहित में कार्य करेंगे और विकसित भारत के निर्माण में अपना योगदान देंगे। देश को विश्व शक्ति बनाने के लिए प्रधानमंत्री जी ने सेवा और स्वदेशी का आह्वान किया है।

प्रदेश के कपास उत्पादक क्षेत्र में टैक्सटाइल उद्योग के लिए स्थापित होने वाला 'पीएम मित्र पार्क' प्रधानमंत्री जी की स्वदेशी की संकल्पना को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। प्रदेश को मिलने वाले इस आशीर्वाद से सभी अभिभूत हैं। 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका कल्याण करने वाले युगदृष्टा माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को पुनः जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ...। ▪

(लेखक, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री हैं)

"नमो युवा रन"

युवा हमेशा राष्ट्र प्रथम की भावना रखें - डॉ. मोहन यादव

- **स्वदेशी से ही हमारा राष्ट्र पूरी दुनिया का सिरमौर बनेगा।**
- **नमो युवा रन का आयोजन देश की सेवा के लिए आगे आने की प्रेरणा देता है।**

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिन 17 सितम्बर से पूरे देश में सेवा पखवाड़ा आयोजित कर सेवा के कार्य किया जा रहा है। इस पखवाड़े के दौरान "नमो युवा रन" का आयोजन सबको देश की सेवा के लिए आगे आने की प्रेरणा देता है। आज पूरी दुनिया भारत की ओर देख रही है। हम सदैव अपनी सोच में, अपने विचारों में, अपने मूल्यों में देश सबसे पहले की भावना रखें। हमेशा स्वदेशी वस्तुओं का ही उपयोग करें, तभी हमारा राष्ट्र पूरी दुनिया का सिरमौर बनेगा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत ने विश्व पटल पर एक अलग प्रतिष्ठा स्थापित की है। मध्यप्रदेश ने भी प्रधानमंत्री जी की सोच और उनके विजन से कदम से कदम मिलाते हुए देश-दुनिया में अपनी अलग जगह और नई पहचान बनाई है। सेवा पखवाड़ा भारत के बदलते स्वरूप और युवाओं की ऊर्जा का प्रतीक है। मध्यप्रदेश ने खेलों के मामले में उल्लेखनीय उपलब्धि प्राप्त की है। देश के साथ मध्यप्रदेश का भी खेल स्पर्धाओं में प्रदर्शन दिनों-दिन सुधर रहा है। प्रदेश के हॉकी खिलाड़ी, ऑलिम्पिक में पदक विजेता टीम के सदस्य रहे। यह हमें खेल के क्षेत्र में और बेहतर करने के लिए प्रेरित करता है। युवा खुद को फिट रखें, नशे से दूर रहें और अपने-अपने काम और कर्तव्यों में भी हमेशा अव्वल रहें। ▪

प्रधानमंत्री जी ने महिलाओं के स्वास्थ्य की चिंता की - डॉ. मोहन यादव

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिन पर सेवा पखवाड़ा मनाया।

- **प्रधानमंत्री मोदी जी मध्यप्रदेश के कॉटन इंडस्ट्री के सुनहरे दिन लौटा रहे हैं।**
- **पीएम मित्र पार्क से धार में ग्वालियर और इंदौर से अधिक रोजगार की संभावनाएं।**
- **मोदी जी के नेतृत्व में भारत तेज गति से आगे बढ़ रहा है।**

दुनिया के सबसे लोकप्रिय नेता प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के जन्मदिवस पर मैं भगवान महाकाल से प्रार्थना करते हुए उनकी दीर्घायु की कामना करता हूं। जन्मदिन मनाने का तरीका प्रधानमंत्री जी से सीखा जा सकता है। न केक न मोमबत्ती, उन्होंने अपने जन्मदिन पर देश की आधी आबादी यानी हमारी माता-बहनों के स्वास्थ्य की चिंता करते हुए एक अभियान की शुरुआत की। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत तेज गति से आगे बढ़ रहा है।

प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत 11 वें स्थान से ऊपर चढ़कर आज दुनिया की चौथी अर्थव्यवस्था बन गया है। यह भारत के बढ़ते प्रभाव का ही परिणाम है कि अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप भी हमारे प्रधानमंत्री जी को जन्मदिन की बधाई दे रहे हैं। भैंसोला में पीएम मित्र पार्क के भूमिपूजन ने सोने में सुहागे का काम किया है। एक समय था जब उज्जैन, इंदौर, ग्वालियर में अनेक कॉटन मिलें थीं। इस पार्क के तैयार हो जाने पर हमारी कॉटन इंडस्ट्री की धाक फिर जम जाएगी।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिन पर सेवा पखवाड़ा मनाया। प्रधानमंत्री जी ने मध्यप्रदेश के आदिवासी क्षेत्र धार में पीएम मित्र पार्क का शिलान्यास किया। कांग्रेस ने अपने शासनकाल में कपास उद्योग को मध्यप्रदेश में पूरी तरह से समाप्त कर दिया था। कांग्रेस राज में कपास का रकबा बहुत घट गया था। प्रधानमंत्री जी ने कपास उद्योग को संजीवनी देने का कार्य किया है।

पीएम मित्र पार्क से धार सहित मालवा-निमाड़ के करीब छह लाख किसानों को फायदा होगा। किसानों को पीएम मित्र पार्क में रोजगार भी मिलेगा और कपास के साथ अन्य फसलों का उचित दाम भी मिलेगा। पार्क के निर्माण होने से धार में ग्वालियर और इंदौर से अधिक रोजगार की संभावनाएं बनेंगी। प्रधानमंत्री जी के स्वदेशी अभियान से आत्मनिर्भर भारत का मार्ग प्रशस्त होगा। ▪

प्रधानमंत्री जी का जीवन अनुकरणीय है हेमंत खण्डेलवाल

- **प्रधानमंत्री जी के जीवन को प्रदर्शनी के जरिए लोगों तक पहुंचा रहे हैं।**
- **प्रधानमंत्री जी अपने कार्यों से देश की जनता की जिंदगी बदलने का कार्य कर रहे।**
- **मोदी जी के जन्मदिवस पर प्रदेश भर में शुरू हुए सेवा कार्य।**

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिन के अवसर पर पूरे प्रदेश में सेवा पखवाड़ा शुरू हो चुका है। प्रदेश भर में स्वास्थ्य शिविर, रक्तदान शिविर, स्वच्छता अभियान, प्रदर्शनी के माध्यम से प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के जीवन परिचय सहित विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से सेवा कार्य किया गया। हमें संकल्प लेना है कि हम अपनी हर खरीदारी में स्वदेशी उत्पाद को प्राथमिकता देंगे। यह न केवल हमारे देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करेगा, बल्कि देश के करोड़ों कारीगरों, मजदूरों और किसानों के जीवन में खुशहाली भी लाएगा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपने विचारों और गरीब कल्याण के कार्यों से लोगों की जिंदगी बदलने का कार्य कर रहे हैं। प्रधानमंत्री जी ने भारत को विश्व गुरू बनाने के साथ वर्ष 2047 तक विकसित भारत बनाने के लिए स्वदेशी का जो नारा दिया है, वह भारत को आत्मनिर्भर बनाने का मार्ग प्रशस्त करेगा। प्रधानमंत्री जी ने अपना पूरा जीवन देश, समाज और जनता की सेवा के लिए समर्पित किया है। प्रधानमंत्री जी का पूरा जीवन अनुकरणीय है, उनके कार्यों को जनता तक पहुंचाने के लिए प्रदर्शनियां प्रदेश भर में लगाई गई हैं। सेवा पखवाड़े के तहत सेवा कार्य गांधी जयंती तक अनवरत चलते रहेंगे। ▪

"'मेरा देश पहले-द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ श्री नरेन्द्र मोदी'' सराहनीय प्रयास - जगत प्रकाश नड्डा

हमारे प्रधानमंत्री जी ने केवल भारत का नेतृत्व ही नहीं किया है, बल्कि पूरी मानवता के लिए आवाज उठाई है और उसे नई दिशा दी है। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी जैसी शख्सियत का हमारी पार्टी का नेता होना सौभाग्य की बात है।

- **मेरा देश पहले- द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ श्री नरेन्द्र मोदी केवल एक सांस्कृतिक प्रस्तुति नहीं बल्कि आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रेरणादायी जीवन और निर्णायक नेतृत्व की प्रेरक यात्रा को जन-जन तक पहुंचाने का एक अभिनव प्रयास है।**
- **माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का जीवन सदैव एक ही लक्ष्य 'सेवा ही संकल्प और राष्ट्र प्रथम' के इर्द-गिर्द रहा है और यही इस प्रस्तुति का मूल भाव भी है।**
- **यह पूरे देश का सौभाग्य है कि हमें आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी जैसे दूरदर्शी नेता मिले हैं। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी पर गर्व केवल भारतीय जनता पार्टी और उसके कार्यकर्ताओं तक सीमित नहीं है, बल्कि इस देश का हर नागरिक उन पर गर्व करता है।**

मेरा देश पहले-द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ श्री नरेन्द्र मोदी की प्रस्तुति में देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जीवन की कई अनकही एवं अनसुनी घटनाओं को समाज के सामने लाने का सराहनीय प्रयास किया है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का जीवन सदैव एक ही लक्ष्य 'सेवा ही संकल्प और राष्ट्र प्रथम' के इर्द-गिर्द रहा है और यही इस प्रस्तुति का मूल भाव भी है। यह प्रस्तुति केवल एक सांस्कृतिक प्रस्तुति नहीं बल्कि आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रेरणादायी जीवन और निर्णायक नेतृत्व की प्रेरक यात्रा को जन-जन तक पहुंचाने का एक अभिनव प्रयास है।

यह पूरे देश का सौभाग्य है कि हमें आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी जैसे दूरदर्शी नेता मिले हैं। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी पर गर्व केवल भारतीय जनता पार्टी और उसके कार्यकर्ताओं तक सीमित नहीं है, बल्कि इस देश का हर नागरिक उन पर गर्व करता है। उन्होंने भारत की सांस्कृतिक विरासत और गहन विचारों को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत किया है जिसे विश्व के तमाम देशों के नेताओं ने भी स्वीकार किया है। हमारे प्रधानमंत्री जी ने केवल भारत का नेतृत्व ही नहीं किया है, बल्कि पूरी मानवता के लिए आवाज उठाई है और उसे नई दिशा दी है।

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी जैसी शख्सियत का हमारी पार्टी का नेता होना सौभाग्य की बात है। हमें उनके बताए मार्ग पर चलकर इन घटनाओं से प्रेरणा लेनी चाहिए और उस प्रेरणा को आत्मसात करते हुए मां भारती को सशक्त बनाने के लिए अपने-अपने स्तर पर प्रयास करना चाहिए। ▪

आदर्श फिल्म है "चलो जीते हैं" -मुख्यमंत्री डॉ. यादव

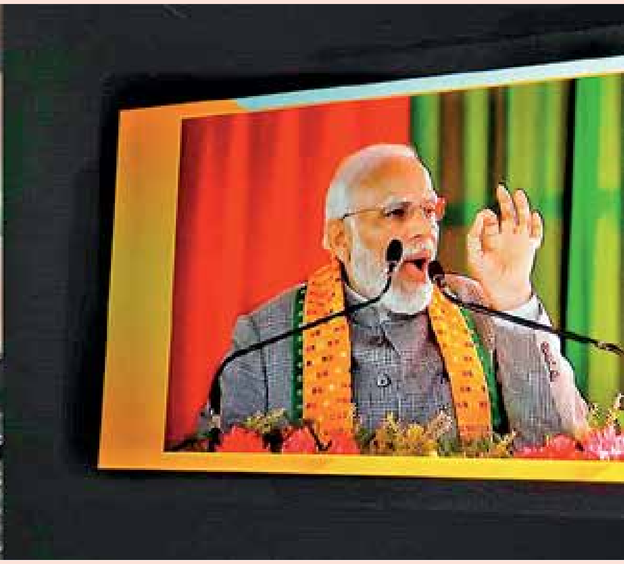

'चलो जीते हैं' वर्ष 2018 में बनी एक शॉर्ट फिल्म है, जो प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के बचपन से प्रेरित है। यह फिल्म बॉलीवुड स्टार्स वाली कमर्शियल मूवी नहीं, बल्कि एक प्रेरणादायक लघु फिल्म है। फिल्म की कहानी एक छोटे बालक की है जो अपने जीवन में दूसरों की सेवा और देशभक्ति को सबसे बड़ा धर्म मानता है।

चलो जीते हैं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के बाल्यकाल की परिस्थितियों पर एक आदर्श फिल्म है, जो अतीत से वर्तमान में लाकर छोड़ती है। आधे घंटे की अवधि में फिल्म कथा सार को समेटना एक अदभुत प्रयोग है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी के बाल्यकाल और जीवन पर केंद्रित फिल्म के सेवा पखवाड़े के अंतर्गत संगठन द्वारा प्रदेश भर में प्रदर्शन की पहल सराहनीय है।

यशस्वी प्रधानमंत्री श्री मोदी ने 17 सितंबर को मध्यप्रदेश के जनजाति बहुल धार जिले में अपना 75वां जन्मदिवस मनाया। राष्ट्र नायक श्री मोदी का गौरव पक्ष और शालीन पक्ष इस फिल्म में देखने को मिलता है। 'चलो जीते हैं' फिल्म में श्री मोदी ने ध्येय वाक्य 'चलो जीते हैं' को लेकर कठिनाइयों के बीच जीते हुए अपने जन्म और जीवन को सिद्ध किया। कोयले की खदान से हीरा निकले तो खदान धन्य हो जाती है। प्रधानमंत्री श्री मोदी दुनिया के सबसे बड़े गणतंत्र का नेतृत्व कर रहे हैं। उन्होंने जीवन में अन्य परेशानियां झेलते हुए अपने साथी विद्यार्थी को भी सहारा दिया। वे किस तरह युक्ति निकालते हैं, आज यह दुनिया के सामने है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने वर्ष 2047 तक विकसित भारत का लक्ष्य तय किया है। वर्ष 2029 तक वे और भी शक्तिशाली बनकर पूरे विश्व को संदेश देंगे। भारत विश्व में सिरमौर बनेगा।

आज के समय में नई तकनीक और बड़े खर्चे से फिल्में बनती हैं, लेकिन इस शॉर्ट फिल्म में सीमित साधनों के उपयोग से अल्प अवधि में बिना मध्यांतर की फिल्म बनाकर फिल्म का मूल कथा पक्ष दृढ़ इच्छा शक्ति का फिल्मांकन बखूबी किया गया है। इस नाते फिल्म निर्माण में यह नया प्रयोग भी है। फिल्म अतीत का वर्तमान से तादात्म्य मिलाकर मोदी जी के पूरे जीवन पर प्रकाश डालती है। इसके लिए फिल्म निर्माता बधाई के पात्र हैं। इस शॉर्ट फिल्म को सभी नागरिकों को देखना चाहिए।

'चलो जीते हैं' वर्ष 2018 में बनी एक शॉर्ट फिल्म है, जो प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के बचपन से प्रेरित है। यह फिल्म बॉलीवुड स्टार्स वाली कमर्शियल मूवी नहीं, बल्कि एक प्रेरणादायक लघु फिल्म है। फिल्म की कहानी एक छोटे बालक की है जो अपने जीवन में दूसरों की सेवा और देशभक्ति को सबसे बड़ा धर्म मानता है। फिल्म में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के बचपन से जुड़े आदर्श और संस्कारों को दर्शाया गया है।

फिल्म 'चलो जीते हैं' में बड़े स्टार कलाकार नहीं हैं बल्कि ज्यादातर नए कलाकारों ने काम किया है। यह फिल्म मुख्यतः बाल नरेन्द्र मोदी के विचारों और समाजसेवा की सोच पर केंद्रित है, इसलिए इसमें स्टार कॉस्ट से ज्यादा संदेश और प्रेरणा पर जोर दिया गया है। फिल्म 6 वर्ष बाद रिलीज हुई है। ▪

राष्ट्र जागरण की साधना के सौ वर्ष की यात्रा

वर्ष 1925 में विजयादशमी के दिन नागपुर के मोहिते बाड़ा में रोपा गया राष्ट्र साधना का छोटा सा बीज आज एक विशाल वटवृक्ष बन चुका है। राष्ट्र प्रथम के एकनिष्ठ भाव के साथ किए जा रहे सतत और अनथक प्रयासों से संघ की पहचान आज विश्व के सबसे बड़े संगठन के रूप में बनी है।

हितानंद शर्मा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की 100 वर्षों की यात्रा वास्तव में राष्ट्र जागरण की ध्येय यात्रा है। वर्ष 1925 में विजयादशमी के दिन नागपुर के मोहिते बाड़ा में रोपा गया राष्ट्र साधना का छोटा सा बीज आज एक विशाल वटवृक्ष बन चुका है। राष्ट्र प्रथम के एकनिष्ठ भाव के साथ किए जा रहे सतत और अनथक प्रयासों से संघ की पहचान आज विश्व के सबसे बड़े संगठन के रूप में बनी है। राष्ट्र, संस्कृति, धर्म एवं समाज के हित में सर्वस्व अर्पण कर देने वाले स्वयंसेवक भारत के पुनरुत्थान की साधना में निरंतर लगे हुए हैं। संघ शताब्दी वर्ष चरैवेति-चरैवेति के मंत्र के साथ बढ़ रहे वैचारिक अधिष्ठान का एक सोपान है।

संघ के आद्य सरसंघचालक परम पूजनीय डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार द्वारा स्थापित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का उद्देश्य भारत को स्वाधीन बनाने के साथ ही स्व-बोध की चेतना से युक्त एक संगठित समाज का निर्माण करना था। माँ भारती को परम वैभव पर आसीन करने की 100 वर्षों की यह यात्रा सरल नहीं रही। अनेक कठिनाइयों, विरोधों और बाधाओं को ही मार्ग बनाते हुए संघ ने भारत माता की सेवा में व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण का कार्य सतत जारी रखा है।

स्वतंत्रता आंदोलन और स्वतंत्रता के पश्चात् संघ ने समाज को देश की सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने का कार्य किया। स्वतंत्रता के पश्चात् भी जब देश में औपनिवेशिक मानसिकता से प्रेरित और गुलाम पीढ़ी तैयार करने वाली मैकाले शिक्षा पद्धति जारी रखी गई तब संघ प्रेरणा से 1952 में 'विद्या भारती' की स्थापना की गई, जो शिक्षा एवं संस्कार देने वाला आज विश्व का सबसे बड़ा अशासकीय शैक्षणिक संगठन है। युवाओं को राष्ट्रीय विचारों से जोड़ने के लिए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, श्रमिकों

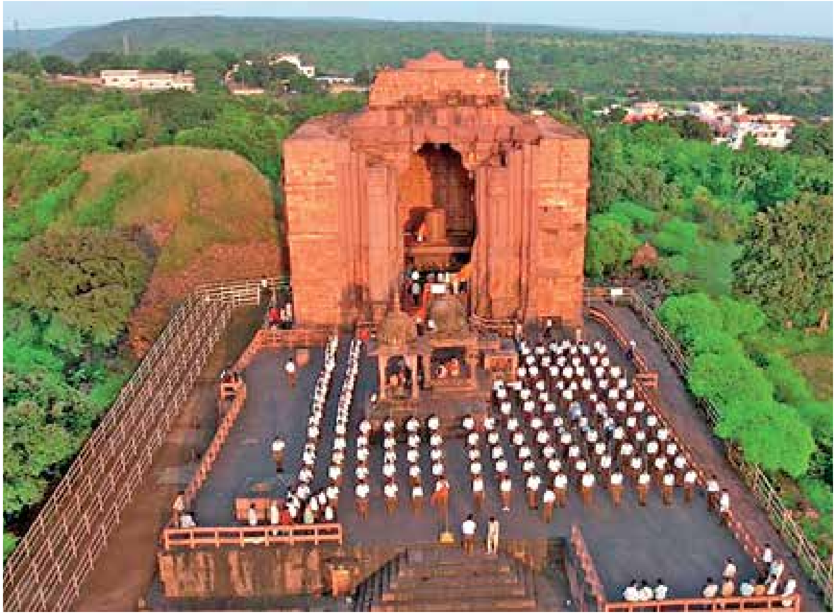

के हित में कार्य करने भारतीय मजदूर संघ, किसानों के लिए भारतीय किसान संघ, सेवा कार्यों के लिए सेवा भारती और संस्कार भारती आदि अनेक संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रेरणा से स्वयंसेवकों द्वारा स्थापित किए गए जो आज भी समाज में सक्रियता से कार्य कर रहे हैं। 1936 में स्थापित राष्ट्र सेविका समिति के साथ मिलकर संगठन ने महिलाओं की भूमिका को भी समान महत्व दिया है। आज विचार परिवार के प्रत्येक संगठन में महिला नेतृत्व की सशक्त उपस्थिति इसी दृष्टिकोण का परिणाम है।

स्वतंत्रता के पश्चात् जब भारतीय राजनीति अपने मूल और दिशा से भटकने लगी, देश की संप्रभुता के लिए ही संकट उत्पन्न हो गया, तब पं. दीनदयाल उपाध्याय एवं डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भारतीय जनसंघ की स्थापना की। भारतीय जनसंघ आगे चलकर भारतीय जनता पार्टी के रूप में विकसित हुआ। भारतीय जनता पार्टी वर्तमान में विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक संगठन है। इसे एक ऐसे संगठन के रूप में भी समाज का सम्मान प्राप्त होता है, जिसने अपने गठन के समय से चले आ रहे लगभग सभी प्रमुख संकल्पों को पूर्ण करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। जम्मू-कश्मीर से धारा 370 की समाप्ति, अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण और भारत की वैश्विक प्रतिष्ठा को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाना इसी विचारधारा के ऐतिहासिक कार्य हैं।

संघ की सौ वर्ष की यात्रा कठिन चुनौतियों से भरी रही है। संघ अपने आरंभिक काल से ही अपनों के ही विरोध, आक्रमण, उपहास और अपमान सहकर भी इस अनवत यात्रा में आगे बढ़ा है। महात्मा गांधी की हत्या के मिथ्या आरोप, दो बार लगाए गए प्रतिबंध, आपातकाल की असहनीय यातनाएं और तमाम विरोधों के पश्चात भी संघ अपने संकल्पों पर दृढ़ रहा। इस साधना की यज्ञ वेदी में असंख्य स्वयंसेवक समिधा बन कर होम भी हुए हैं। स्वयंसेवकों की तपस्या और प्रचारकों के समर्पण ने संगठन को उस स्थिति तक पहुंचाया, जहां आज विश्वभर में लोग संघ को निकट से जानना और उससे जुड़ना चाहते हैं।

भारत के गौरवशाली स्वर्णिम इतिहास, संस्कृति, ज्ञान-परंपरा के संघरूपी वटवृक्ष की जड़ें गहरे तक समायी हुई हैं। संघ की शाखाएं संगठन का सबसे प्रबल पक्ष हैं। समाज में यह वाक्य प्रचलन में भी आ चुका है कि यदि संघ को समझना है तो शाखा में जाकर भली-भांति समझा जा सकता है। संघ की शाखाएं व्यक्ति निर्माण की नर्सरी भी कही जाती हैं। शाखा के माध्यम से स्वयंसेवकों का शारीरिक, मानसिक और चारित्रिक विकास होता है। खेल, गीत, अनुशासन और बौद्धिक कार्यक्रमों के माध्यम से उन्हें नेतृत्व, अनुशासन, बंधुत्व और कर्तव्यनिष्ठा की प्रेरणा मिलती है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखाओं के माध्यम से समाज का ऐसा संगठन तैयार हुआ है कि देश में कहीं भी प्राकृतिक आपदाओं, मानवीय संकटों और विदेशी आक्रमणों, हर परिस्थिति में संघ के स्वयंसेवक सबसे पहले सेवा कार्य के लिए उपस्थित रहते हैं। गुजरात के भुज में आए भूकंप से लेकर हाल की भीषण बाढ़ की घटनाओं और कोरोना महामारी के दौरान भोजन, परिवहन, दवाइयों से लेकर पीड़ितों के अंतिम संस्कार तक की सेवाओं में स्वयंसेवकों ने निःस्वार्थ भाव से अपना योगदान दिया। इससे पूर्व स्वतंत्रता संग्राम, गोवा मुक्ति आंदोलन, कश्मीर के भारत में विलय, चीन के आक्रमण जैसे ऐतिहासिक घटनाक्रमों में भी संघ की भूमिका उल्लेखनीय रही।

शताब्दी वर्ष संघ की संकल्प यात्रा को और अधिक गति देने का अवसर है। संगठन पंच परिवर्तन के माध्यम से स्वदेशी, पर्यावरण संरक्षण, नागरिक कर्तव्यों, सामाजिक समरसता और परिवार प्रबोधन जैसे विषयों को जन-जन तक पहुंचाने में सक्रिय है। शताब्दी वर्ष के इस महत्वपूर्ण एवं स्मरणीय अवसर पर संघ किसी भव्य आयोजन की बजाय प्रत्येक भारतीय नागरिक तक पहुंचकर उसे अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति कर्तव्यों का बोध कराने का कार्य कर रहा है।

संघ का कार्यकर्ता होना जीवन को राष्ट्र सेवा की दिशा में लगा देने की प्रक्रिया है। शाखा का संस्कार व्यक्ति में मातृभूमि के प्रति ऐसा असीम प्रेम जगा देता है कि वह निजी स्वार्थों से ऊपर उठकर समाज और राष्ट्र के लिए समर्पित हो जाता है। स्वयंसेवक के लिए भारत माता की जय ही उसका परम ध्येय बन जाता है।

2026 में जब संघ का शताब्दी वर्ष पूर्ण होगा, तब लक्ष्य यही रहेगा कि प्रत्येक भारतीय को राष्ट्र यज्ञ में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है, ताकि भारत फिर से विश्वगुरु के रूप में विश्व का मार्गदर्शन कर सके। इस लक्ष्य के साधक होने के नाते हम सब भी इस राष्ट्र यज्ञ में अपनी-अपनी कर्तव्यों रूपी समिधा आहूत करें।

पूर्ण विजय संकल्प हमारा
अनथक अविरत साधना।
निषिदिन प्रतिपल चलती आयी
राष्ट्रधर्म आराधना।

आज जब भारत नए आत्मविश्वास और स्वाभिमान के साथ विश्व मंच पर स्वाभिमान और स्व-बोध के गौरव के साथ खड़ा है, तब संघ की यह सौ वर्षीय यात्रा केवल एक संगठन की कथा नहीं, बल्कि उस विचार की गौरव गाथा है जिसने राष्ट्र को आत्मबोध, संगठन और संस्कृति की शक्ति से जोड़ा। इस अवसर पर प्रत्येक स्वयंसेवक और नागरिक को यह संकल्प लेना चाहिए कि वह भारत माता को परम वैभव पर आसीन करने में अपना योगदान देंगे। सभी स्वयंसेवकों और देशवासियों को संघ शताब्दी वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं। ▪

(लेखक भाजपा, मप्र के संगठन महामंत्री हैं)

स्वदेशी प्रोडक्ट्स, वोकल फॉर लोकल - खरीदारी का मंत्र

- अमर शहीद भगत सिंह हर भारतीय, विशेषकर देश के युवाओं के लिए प्रेरणापुंज हैं।
- भगत सिंह जी लोगों के दुखों के प्रति बेहद संवेदनशील थे और उनकी मदद के लिए हमेशा आगे रहते थे।
- व्यापार से लेकर खेल तक, शिक्षा से लेकर विज्ञान तक, कोई भी क्षेत्र हो, हमारे देश की बेटियाँ हर जगह अपनी पहचान बना रही हैं।
- छठ पूजा न केवल देश के विभिन्न हिस्सों में मनाई जाती है, बल्कि इसकी भव्यता पूरी दुनिया में दिखाई देती है।
- भारत सरकार छठ महापर्व को UNESCO की Intangible Cultural Heritage List में शामिल करने का प्रयास कर रही है।
- गांधीजी ने हमेशा स्वदेशी अपनाने पर जोर दिया, और खादी उनमें सबसे प्रमुख थी।
- इस विजयादशमी के दिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के 100 वर्ष पूरे हो रहे हैं।
- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ लगातार सौ साल से भी अधिक समय से राष्ट्र सेवा में जुटा है।
- स्वच्छता हर जगह हमारी जिम्मेदारी बननी चाहिए, चाहे सड़कें हों, मोहल्ले, बाजार या फिर गांव।

अमर शहीद भगत सिंह, हर भारतवासी, विशेषकर देश के युवाओं के लिए एक प्रेरणापुंज है। निर्भीकता उनके स्वभाव में कूट-कूट कर भरी थी। देश के लिए फांसी के फंदे पर झूलने से पहले भगत सिंह जी ने अंग्रेजों को एक पत्र भी लिखा था।

उन्होंने कहा था कि मैं चाहता हूँ कि आप मुझे और मेरे साथियों से युद्धबंदी जैसा व्यवहार करें। इसलिए हमारी जान फांसी से नहीं, सीधा गोली मार कर ली जाए।

मन की बात में सभी से जुड़ना, सभी से सीखना, देश के लोगों की उपलब्धियों के बारे में जानना, वाकई बहुत सुखद अनुभव देता है। एक दूसरे के साथ अपनी बातें साझा करते हुए, अपनी 'मन की बात' करते हुए, पता ही नहीं चला कि इस कार्यक्रम ने 125 एपिसोड पूरे कर लिए। इस कार्यक्रम का यह 126वां एपिसोड है और आज के दिन के साथ कुछ विशेषताएँ भी जुड़ी हैं। आज भारत की दो महान विभूतियों की जयंती है। मैं बात कर रहा हूँ, शहीद भगत सिंह और लता दीदी की।

अमर शहीद भगत सिंह, हर भारतवासी, विशेषकर देश के युवाओं के लिए एक प्रेरणापुंज है। निर्भीकता उनके स्वभाव में कूट-कूट कर भरी थी। देश के लिए फांसी के फंदे पर झूलने से पहले भगत सिंह जी ने अंग्रेजों को एक पत्र भी लिखा था। उन्होंने कहा था कि मैं चाहता हूँ कि आप मुझे और मेरे साथियों से युद्धबंदी जैसा व्यवहार करें। इसलिए हमारी जान फांसी से नहीं, सीधा गोली मार कर ली जाए। यह उनके अदम्य साहस का प्रमाण है। भगत सिंह जी लोगों की पीड़ा के प्रति भी बहुत संवेदनशील थे और उनकी मदद में हमेशा आगे रहते थे। मैं शहीद भगत सिंह जी को आदरपूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

आज लता मंगेशकर की भी जयंती है। भारतीय संस्कृति और संगीत में रुचि रखने वाला कोई भी उनके गीतों को सुनकर अभिभूत हुए बिना नहीं रह सकता। उनके गीतों में वो सब कुछ है जो मानवीय संवेदनाओं को झकझोरता है। उन्होंने देशभक्ति के जो गीत गाए, उन गीतों ने लोगों को बहुत प्रेरित किया। भारत की संस्कृति से भी उनका गहरा जुड़ाव था।

लता दीदी जिन महान विभूतियों से प्रेरित थीं

उनमें वीर सावरकर भी एक हैं, जिन्हें वो तात्या कहती थीं। उन्होंने वीर सावरकर जी के कई गीतों को भी अपने सुरों में पिरोया।

लता दीदी से मेरा स्नेह का जो बंधन था वो हमेशा कायम रहा। वो मुझे बिना भूले हर साल राखी भेजा करती थी। मुझे याद है मराठी सुगम संगीत की महान हस्ती सुधीर फड़के जी ने सबसे पहले लता दीदी से मेरा परिचय कराया था और मैंने लता दीदी को कहा कि मुझे आपके द्वारा गाया और सुधीर जी द्वारा संगीतबद्ध गीत 'ज्योति कलश छलके' बहुत पसंद है।

नवरात्रि के इस समय में हम शक्ति की उपासना करते हैं। हम नारी-शक्ति का उत्सव मनाते हैं। Business से लेकर sports तक और education से लेकर science तक आप किसी भी क्षेत्र को लीजिए - देश की बेटियाँ हर जगह अपना परचम लहरा रहीं है। आज वे ऐसी चुनौतियों को भी पार कर रही हैं, जिनकी कल्पना तक मुश्किल है। अगर मैं आपसे ये सवाल करूं, क्या आप समंदर में लगातार 8 महीने रह सकते हैं! क्या आप समंदर में पतवार वाली नाव यानि हवा के वेग से आगे बढ़ने वाली नाव से 50 हजार किलोमीटर की यात्रा कर सकते हैं, और वो भी तब, जब, समंदर में मौसम कभी भी बिगड़ जाता है! ऐसा करने से पहले आप हजार बार सोचेंगे, लेकिन भारतीय नौसेना की दो बहादुर officers ने नाविका सागर परिक्रमा के दौरान ऐसा कर दिखाया है। उन्होंने दिखाया है कि साहस और दृढ़ संकल्प होता क्या है। आज मैं 'मन की बात' के श्रोताओं को इन दो जांबाज officers से मिलवाना चाहता हूँ। एक हैं Lieutenant commander दिलना और दूसरी हैं Lieutenant commander रूपा। ये दोनों officers हमारे साथ phone line पर जुड़ी हुई हैं।

प्रधानमंत्री - हैलो।

Lieutenant commander दिलना - हैलो Sir।

प्रधानमंत्री – नमस्कार जी।

Lieutenant commander दिलना - नमस्कार Sir।

प्रधानमंत्री – तो मेरे साथ Lieutenant commander दिलना और Lieutenant commander रूपा दोनों हैं आप साथ में?

Lieutenant commander दिलना और रूपा –जी Sir दोनों हैं।

प्रधानमंत्री – चलिए आप दोनों को नमस्कारम और वणक्कम।

Lieutenant commander दिलना - वणक्कम Sir,

Lieutenant commander रूपा – नमस्कारम Sir।

प्रधानमंत्री – अच्छा सबसे पहले तो देशवासी सुनना चाहते हैं आप दोनों के बारे में, आप जरा बताइए।

Lieutenant commander दिलना – Sir मैं Lieutenant commander दिलना हूं। और मैं Indian Navy में logistics cadre से हूं Sir मैं Navy में 2014 में commissioned हुई थी Sir और मैं केरल में Kozhikode से हूं, Sir मेरा father Army में थे और मेरा Mother House wife है। मेरा husband भी Indian Navy में Officer है Sir, और मेरा sister NCC में नौकरी करती है।

Lieutenant commander रूपा – जय हिन्द Sir, मैं Lieutenant Commander रूपा हूं और मैं Navy 2017 Naval Armament Inspection cadre में join किया है और मेरे father तमिलनाडु से हैं और मेरे mother Pondicherry से हैं। मेरे father Air Force में थे Sir, actually Defence join करने के लिए मुझे उनसे ही प्रेरणा मिली और मेरी mother home maker थी।

प्रधानमंत्री – अच्छा दिलना और रूपा आप से मैं जानना चाहूँगा कि आपकी जो सागर परिक्रमा में आपका experience देश सुनना चाहता है और मैं पक्का मानता हूं ये कोई सरल काम नहीं है कई कठिनाइयाँ आई होंगी, बहुत मुश्किलें आपको पार करनी पड़ी होंगी।

Lieutenant commander दिलना - जी Sir. मैं आपको ये बोलना चाहती हूं कि life में Sir एक बार हमें ऐसा मौका मिलता है जो हमारी जिंदगी बदल देती है Sir और ये circumnavigation वो हमारे लिए ऐसी एक opportunity थी जो Indian Navy और Indian Government ने हमें दिया है और इस expedition में हम लगभग 47500 (forty seven thousand five hundred) kilometre sail किया Sir, हमने 2nd October 2024 को निकला गोवा से और 29th May 2025 को वापस आया और इस Expedition हमें complete करने के लिए 238 (Two hundred Thirty eight) days लगे Sir और 238 (Two hundred Thirty eight) days हम सिर्फ दोनों थे सर इस boat पर।

प्रधानमंत्री – हम्म हम्म

Lieutenant Commander दिलना – और Sir expedition के लिए हमने तीन साल की तैयारी की Navigation से लेकर communication emergency devices को कैसे operate करना, diving कैसे करते हैं और Boat में कुछ भी तरह की emergency हो, जैसे medical emergency से हो, कैसे manage करना, ये सब के बारे में हमें Indian Navy ने training दिया Sir और इस यात्रा में सबसे memorable moment मैं बोलना चाहती हूं sir, कि हमने भारत की झंडा Point Nemo पर लहराया sir, Sir Point Nemo दुनिया की सबसे remotest location पे है sir, वहाँ से सबसे पास कोई इंसान है तो वो International Space Station में है और वहाँ पर एक sail boat में पहुँचने वाला पहला भारतीय और पहला Asian और दुनिया के पहला इंसान, हम बने sir और ये हमारे लिए गर्व की बात है sir।

प्रधानमंत्री – वाह बहुत-बहुत बधाई आपको।

Lieutenant commander दिलना – Thank you sir

प्रधानमंत्री – आपके साथी भी कुछ कहना चाहते हो।

Lt. Commander Rupa - सर, मैं ये कहना चाहती हूँ कि ये Sail Boat से ये दुनिया का circumnavigation जो किया है उनका number Mt. Everest पहुँचने वाले के number से बहुत कम है। और actually, जो Sail Boat से अकेले जो circumnavigation करते हैं, उनके number जो space में गए हैं उनके number से भी बहुत कम है।

प्रधानमंत्री – अच्छा, इतनी complex journey के लिए बहुत team work की जरूरत होती है और वहाँ तो team में आप दो ही officers थीं। आप लोगों ने कैसे manage किया इसको?

Lt. Commander Rupa - जी सर, ऐसी यात्रा के लिए हम दोनों को एक साथ मेहनत करना पड़ता था और जैसे Lt. Commander Dilna ने बोला, ये achieve करने के लिए, सिर्फ दोनों था boat पर और हम boat repairer थीं, engine mechanic थीं। Sail-maker, medical assistant, cook, cleaner, diver, navigator, और सब कुछ एक साथ बनना पड़ता था। और ये हमको achieve करने के लिए Indian Navy का बड़ा contribution था। और हमको हर तरह की training दिया है। Actually sir, हम चार साल से साथ sail कर रहे हैं, तो एक दूसरे की strength और weakness हम अच्छी तरह से जानते हैं। इसलिए हम सबको कहते हैं कि हमारे boat पर एक equipment थी जो कभी fail नहीं हुआ, वो हम दोनों का team work था।

प्रधानमंत्री- अच्छा, जब मौसम खराब होता था, क्योंकि ये समुद्री दुनिया तो ऐसी है, जहाँ मौसम का कोई ठिकाना नही। तो आप उस situation को कैसे handle करते थे!

Lt. Commander Rupa - सर, हमारी यात्रा में बहुत सारा adverse challenges सब थे सर। हमें इस expedition में कई challenges face करना पड़ा। Especially sir, Southern Ocean में हमेशा मौसम बुरा होता है। हमें तीन तूफानों को भी face करना पड़ा और सर, हमारा boat सिर्फ 17 मीटर का है और length में उसका width है सिर्फ 5 मीटर। तो कभी-कभी कुछ लहरें आती थी जो तीन storey building से भी बड़ी थी सर, और हमने बहुत ज्यादा गर्मी और बहुत ज्यादा सर्दी, दोनों face किया है हमारा journey में। Antarctica में सर जब हम sail कर रहे थे, हमारा temperature 1 degree Celsius और 90km/hr. का हवा, दोनों एक साथ हमको सामना करना पड़ा था। और हमने ठंड से बचने के लिए 6 to 7 layer कपड़े एक साथ पहनते थे और पूरा Southern Ocean हमने ऐसी 7 layer of clothing से किया सर। And कभी-कभी हम gas stove ले के हमारा हाथ को गरम करते थे सर, और कभी ऐसे situations भी होते जब हवा बिल्कुल नहीं होता है और हम sail पूरा नीचे करके हम drift होता रहता है। और ऐसे वाली situation में actually sir हमारा patience test होता है।

प्रधानमंत्री – लोगों को सुनकर के भी बहुत हैरानी होगी की हमारे देश की बेटियाँ ऐसा कष्ट उठा रही है। अच्छा इस परिक्रमा के दौरान, आप अलग - अलग देशों में रुकती भी रही, वहाँ क्या experience होता था, जब भारत की 2 बेटियों को लोग देखते होंगे तो उनके मन में बहुत सारी बातें रहती होंगी।

Lt. Commander Dilna - जी sir, हमको बहुत अच्छा experience मिला sir, हमने 8 महीनों में 4 जगह पर रुकी थी sir, Australia, New Zealand, Port Stanley और South Africa, Sir.

प्रधानमंत्री – हर जगह पर average कितना समय रुकना होता था?

Lt. Commander Dilna - Sir, हमने 14 days stay किया sir,1 जगह पर

प्रधानमंत्री – 1 जगह पर 14 days?

Lt. Commander Dilna - correct sir. और sir, हमने दुनिया के हर कोने में भारतीय को देखे sir, वो भी बहुत active और बहुत confidence के साथ, भारत का नाम रोशन कर रहे हैं। और हमको ऐसा लगा कि हमारा जो success है sir, वो अपना भी success समझते थे and हर जगह पर हमें अलग-अलग experience मिला जैसे Australia में, Western Australian Parliament के speaker ने, हमें बुलाया, वो हमें बहुत motivate किया sir, और हमेशा ये ऐसे सब चीज होता है sir, हमें बहुत गर्व होता था। और जब New Zealand में गए, तब माउरी लोगों ने हमें स्वागत किया और हमारा भारतीय culture के लिए बहुत respect दिखाया sir, and एक important चीज है sir, Port Stanley एक remote island है sir वो South America के पास है, वहाँ पर total population सिर्फ three thousand five hundred है sir लेकिन वहाँ हमने एक Mini India देखा and वहाँ पर 45 Indians थे, उन्होंने हमें अपना समझा और हमें घर जैसा महसूस कराया sir।

प्रधानमंत्री – अच्छा देश की उन बेटियों के लिए आप दोनों क्या Message देना चाहेंगी जो आपकी तरह ही कुछ अलग करना चाहती है।

Lieutenant commander रूपा – सर, मैं Lieutenant commander रूपा बोल रही हूँ अभी मैं आपके माध्यम से मैं सबको ये कहना चाहती हूँ कि अगर कोई भी अपने दिल लगा के मेहनत किया तो इस दुनिया में कुछ भी impossible नहीं है। आप कहाँ से हो, कहाँ पैदा हुआ, वो कुछ matter नहीं करता। सर ये हम दोनों का इच्छा है कि भारत के युवा और महिलायें बड़े-बड़े सपना देखें और future में all girls और women defence में, sports में, adventure में शामिल होके देश का नाम रोशन करें।

प्रधानमंत्री – दिलना और रूपा आपकी बातें सुनकर मुझे भी बहुत रोमांच अनुभव हो रहा है कि कितना बड़ा साहस आपने किया है। आप दोनों को मेरी तरफ से बहुत-बहुत धन्यवाद। निश्चित तौर पर आपकी मेहनत, आपकी सफलता, आपकी achievement देश के युवकों को, देश की युवतियों को बहुत प्रेरित करेगी। ऐसे ही तिरंगा लहराते रहिए भविष्य के प्रयासों के लिए, आपको मेरी ढेरों शुभकामनायें।

Lieutenant commander दिलना – Thank You Sir

प्रधानमंत्री – बहुत-बहुत धन्यवाद। वणक्कम। नमस्कारम।

Lieutenant commander रूपा– नमस्कार सर।

हमारे पर्व, त्योहार भारत की संस्कृति को जीवंत बनाए रखते हैं। छठ पूजा ऐसा एक पावन पर्व है जो दीवाली के बाद आता है। सूर्य देव को समर्पित यह महापर्व बहुत ही विशेष है। इसमें हम डूबते सूर्य को भी अर्घ्य देते हैं, उनकी आराधना करते हैं। छठ ना सिर्फ देश के अलग-अलग हिस्सों में मनाई जाती है, बल्कि दुनिया भर में इसकी छटा देखने को मिलती है। आज ये एक global festival बन रहा है।

मुझे आपको ये बताते हुए बहुत खुशी है कि भारत सरकार भी छठ पूजा को लेकर एक बड़े प्रयास में जुटी है। भारत सरकार छठ महापर्व को UNESCO की Intangible Cultural Heritage List यानि UNESCO की सांस्कृतिक धरोहर की सूची में शामिल कराने का प्रयास कर रही है। छठ पूजा जब UNESCO की सूची में शामिल होगी तो दुनिया के कोने-कोने में लोग इसकी भव्यता और दिव्यता का अनुभव कर पाएंगे।

कुछ समय पहले भारत सरकार के ऐसे ही प्रयासों से कोलकाता की दुर्गा पूजा भी UNESCO की इस list का हिस्सा बनी है। हम अपने सांस्कृतिक आयोजनों को ऐसे ही वैश्विक पहचान दिलाएंगे तो दुनिया भी उनके बारे में जानेगी, समझेगी, उनमें शामिल होने के लिए आगे आएगी।

2 अक्टूबर को गांधी जयंती है। गांधी जी ने हमेशा स्वदेशी को अपनाने पर बल दिया और इनमें खादी सबसे प्रमुख थी। दुर्भाग्य से आजादी के बाद, खादी की रौनक कुछ फीकी पड़ती जा रही थी, लेकिन बीते 11 साल में खादी के प्रति देश के लोगों का आकर्षण बहुत बढ़ गया है। पिछले कुछ वर्षों में खादी की बिक्री में बहुत तेजी देखी गई है। मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि 2 अक्टूबर को कोई ना कोई खादी product जरूर खरीदें। गर्व से कहें - ये स्वदेशी हैं। इसे Social Media पर #Vocal for Local के साथ share भी करें।

खादी की तरह ही हमारे handloom और handicraft sector में भी काफी बदलाव देखने को मिल रहा है। आज हमारे देश में ऐसे कई उदाहरण सामने आ रहे हैं, जो बताते हैं कि अगर परंपरा और innovation को एक साथ जोड़ दिया जाए, तो अदभुत परिणाम मिल सकते हैं। जैसे, एक उदाहरण तमिलनाडु के Yaazh Naturals का है। यहाँ अशोक जगदीशन जी और प्रेम सेल्वाराज जी ने corporate नौकरी छोड़ एक नई पहल की। उन्होंने घास और केला fiber से Yoga Mat बनाए, herbal रंगों से कपड़े रंगे, और 200 परिवारों को training देकर उन्हें रोजगार दिया।

झारखंड के आशीष सत्यव्रत साहू जी ने Johargram Brand के जरिए आदिवासी बुनाई और परिधानों को Global Ramp तक

पहुंचाया है। उनके प्रयासों से आज झारखंड की सांस्कृतिक धरोहर को दूसरे देशों के लोग भी जानने लगे हैं।

बिहार के मधुबनी जिले की स्वीटी कुमारी जी ने, उन्होंने भी संकल्प creation शुरू किया है। मिथिला painting को उन्होंने महिलाओं की आजीविका का साधन बना दिया है। आज 500 से ज्यादा ग्रामीण महिलायें उनके साथ जुड़ी हैं और आत्मनिर्भरता की राह पर हैं। सफलता की ये सभी गाथाएं हमें सिखाती हैं कि हमारी परंपराओं में आय के कितने ही साधन छिपे हुए हैं। अगर इरादा पक्का हो, तो सफलता हमसे दूर नहीं जा सकती।

इस बार विजयादशमी एक और वजह से बहुत विशेष है। इसी दिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के 100 वर्ष हो रहे हैं। एक शताब्दी की ये यात्रा जितनी अदभुत है, अभूतपूर्व है, उतनी ही प्रेरक है। आज से 100 साल पहले जब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना हुई थी, तब देश सदियों से गुलामी की जंजीरों में बंधा था। सदियों की इस गुलामी ने हमारे स्वाभिमान और आत्मविश्वास को गहरी चोट पहुंचाई थी। विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता के सामने पहचान का संकट खड़ा किया जा रहा था। देशवासी हीन-भावना का शिकार होने लगे थे। इसलिए देश की आजादी के साथ-साथ ये भी महत्वपूर्ण था कि देश वैचारिक गुलामी से भी आजाद हो। ऐसे में, परम पूज्य डॉ. हेडगेवार जी ने इस विषय में मंथन करना शुरू किया और फिर इसी भगीरथ कार्य के लिए उन्होंने 1925 में विजयादशमी के पावन अवसर पर 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' की स्थापना की। डॉक्टर साहब के जाने के बाद परम पूज्य गुरु जी ने राष्ट्रसेवा के इस महायज्ञ को आगे बढ़ाया। परम पूज्य गुरुजी कहा करते थे - ''राष्ट्राय स्वाहा, इदं राष्ट्राय इदं न मम'' यानी, ये मेरा नहीं है, ये राष्ट्र का है। इसमें स्वार्थ से ऊपर उठकर राष्ट्र के लिए समर्पण का भाव रखने की प्रेरणा है।

गुरुजी गोलवरकर जी के इस वाक्य ने लाखों स्वयंसेवकों को त्याग और सेवा की राह दिखाई है। त्याग और सेवा की भावना और अनुशासन की सीख यही संघ की सच्ची ताकत है। आज RSS सौ वर्ष से बिना थके, बिना रुके, राष्ट्रसेवा के कार्य में लगा हुआ है। इसीलिए हम देखते हैं, देश में कहीं भी प्राकृतिक आपदा आए, RSS के स्वयंसेवक सबसे पहले वहाँ पहुँच जाते हैं। लाखों लाख स्वयंसेवकों के जीवन के हर कर्म, हर प्रयास में राष्ट्र प्रथम nation first की भावना हमेशा सर्वोपरि रहती है। मैं राष्ट्रसेवा के महायज्ञ में स्वयं को समर्पित कर रहे प्रत्येक स्वयंसेवक को अपनी शुभकामनाएं अर्पित करता हूं।

7 अक्टूबर को महर्षि वाल्मीकि जयंती है। हम सब जानते हैं, महर्षि वाल्मीकि भारतीय संस्कृति के कितने बड़े आधार हैं। ये महर्षि वाल्मीकि ही थे, जिन्होंने हमें भगवान राम की अवतार कथाओं से इतने विस्तार से परिचित करवाया था। उन्होंने मानवता को रामायण जैसा अदभुत ग्रंथ दिया।

रामायण का ये प्रभाव उसमें समाहित भगवान राम के आदर्शों और मूल्यों के कारण है। भगवान राम ने सेवा, समरसता और करुणा से सबको गले लगाया था। इसीलिए हम देखते हैं, महर्षि वाल्मीकि की रामायण के राम, माता शबरी और

'मन की बात' में घटनाओं, उपलब्धियों, अद्वितीय हस्तियों की चर्चा-डॉ. मोहन यादव

- **प्रधानमंत्री जी ने 'मन की बात' में किया नारी शक्ति की ताकत का प्रकटीकरण।**
- **पूर्वांचल के प्रसिद्ध छठ पूजा को यूनेस्को की धरोहर में शामिल कराने का प्रयास सराहनीय।**

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपने कार्यक्रम में अनेक घटनाओं, उपलब्धियों एवं देश की अद्वितीय हस्तियों की चर्चा की। उन्होंने महान क्रांतिकारी भगत सिंह की बात की, जिन्होंने अपने बलिदान से युवाओं का मान बढ़ाया। स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर जी की बात की, जिनकी आवाज की दीवानी अनेक पीढ़ियां रहीं हैं और जिन्होंने हर तरह के भजन, गीत, गाते हुए बहुत कम उम्र की अभिनेत्रियों को भी अपनी आवाज दी। प्रधानमंत्री जी ने प्रसिद्ध गायक भूपेन हजारिका जी की भी चर्चा की। प्रधानमंत्री जी ने नवरात्रि पर्व में नारी शक्ति की ताकत का आभास कराने वाली उन बहनों के पराक्रम की चर्चा की, जिन्होंने एक छोटी सी नाव के सहारे सारी दुनिया की परिक्रमा की। इस दौरान उन्हें तीन मंजिल बिल्डिंग के बराबर ऊंची लहरों, भयानक गर्मी और हड्डियां कंपा देने वाली सर्दी का सामना भी करना पड़ा। हमारे पर्व और त्योहार हमें सभी को साथ लेकर चलना सिखाते हैं। इसलिए इस दीपावली पर हम सभी छोटे कारीगरों और व्यापारियों से ही स्थानीय वस्तुओं की खरीददारी करें। ▪

निषादराज के साथ ही पूर्ण होते हैं। इसीलिए, अयोध्या में जब राम मंदिर का निर्माण हुआ, तो साथ में निषादराज और महर्षि वाल्मीकि का भी मंदिर बनाया गया है।

कला, साहित्य और संस्कृति की सबसे खास बात होती है कि ये किसी एक दायरे में बंधी नहीं होती। इनकी सुगंध सभी सीमाओं को पारकर लोगों के मन को छूती है। हाल ही में Paris के एक Cultural Institute ''सौन्तख मंडपा'' ने अपने 50 वर्ष पूरे किये हैं। इस centre ने भारतीय नृत्य को लोकप्रिय बनाने में अपना व्यापक योगदान दिया है। इसकी स्थापना मिलेना सालविनी ने की थी। उन्हें कुछ वर्ष पहले पद्मश्री से सम्मानित किया गया था। मैं ''सौन्तख मंडपा'' से जुड़े सभी लोगों को बहुत बधाई देता हूँ और भविष्य के प्रयासों के लिए उन्हें शुभकामनाएँ देता हूं।

भूपेन हजारिका जी के गीतों से दुनियाभर के अलग-अलग देश आपस में जुड़ते हैं। दरअसल श्रीलंका में एक बेहद ही सराहनीय प्रयास हुआ है। इसमें भूपेन दा जी के प्रतिष्ठित गीत 'मनुहे-मनुहार बाबे' इसका श्रीलंकाई कलाकारों ने सिंहली और तमिल में अनुवाद किया है।

असम आज जहाँ भूपेन हजारिका जी की जन्म-शताब्दी मना रहा है, वहीं कुछ दिनों पहले एक दुखद समय भी आया है। जुबीन गर्ग जी के असामयिक निधन से लोग शोक में हैं।

जुबीन गर्ग एक मशहूर गायक थे, जिन्होंने देशभर में अपनी पहचान बनाई। असम की संस्कृति से उनका बहुत गहरा लगाव था। जुबीन गर्ग हमारी यादों में हमेशा बने रहेंगे और उनका संगीत आने वाली पीढ़ियों को मंत्रमुग्ध करता रहेगा।

जुबीन गर्ग, आसिल
अहोमॉर हमोसकृतिर, उज्जॉल रत्नो ..
जनोतार हृदयॉत, तेयो हदाय जियाय, थाकीबो।
[Translation:
Zubeen was the Kohinoor (the brightest gem) of Assamese Culture. Though he is physically gone from our midst, he will remain forever in our hearts.]

कुछ दिन पहले हमारे देश ने एक महान विचारक और चिंतक एस. एल. भैरप्पा जी को भी खो दिया है। उनकी रचनाएँ युवा पीढ़ी के विचारों को दिशा देती रहेंगी। कन्नड़ की उनकी बहुत सारी रचनाओं का अनुवाद भी उपलब्ध है। उन्होंने हमें बताया कि अपनी जड़ों और संस्कृति पर गर्व करना कितना मायने रखता है।

आने वाले दिनों में एक के बाद एक त्योहार और खुशियां आने वाली हैं। हर पर्व पर हम खरीदारी भी खूब करते हैं। और इस बार तो 'GST बचत उत्सव' भी चल रहा है।

एक संकल्प लेकर आप अपने त्योहारों को और खास बना सकते हैं। अगर हम ठान लें कि इस बार त्योहार सिर्फ स्वदेशी चीजों से ही मनाएंगे, तो देखिएगा, हमारे उत्सव की रौनक कई गुना बढ़ जाएगी। 'Vocal for Local' को खरीदारी का मंत्र बना दीजिए। ठान लीजिए, हमेशा के लिए, जो देश में तैयार हुआ है, वही खरीदेंगे। जिसे देश के लोगों ने बनाया है, वही घर ले जाएंगे।

जिसमें देश के किसी नागरिक की मेहनत है, उसी सामान का उपयोग करेंगे। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम सिर्फ कोई सामान नहीं खरीदते, हम किसी परिवार की उम्मीद घर लाते हैं, किसी कारीगर की मेहनत को सम्मान देते हैं, किसी युवा उद्यमी के सपनों को पंख देते हैं।

त्योहारों पर हम सब अपने घर की सफाई में जुट जाते हैं। लेकिन स्वच्छता सिर्फ घर की चारदीवारी तक सीमित न रहे। गली, मोहल्ला, बाजार, गाँव हर जगह पर सफाई हमारी जिम्मेदारी बने। हमारे यहां ये पूरा समय उत्सवों का समय रहता है और दीवाली एक प्रकार से महा-उत्सव बन जाता है। हमें आत्मनिर्भर बनना है, देश को आत्मनिर्भर बनाकर के ही रहना है और उसका रास्ता स्वदेशी से ही आगे बढ़ता है। ▪

स्वदेशी और स्वच्छता को ताकत देंगी प्रधानमंत्री जी की बातें - हेमंत खण्डेलवाल

- **प्रधानमंत्री जी की बातें देशवासियों के लिए प्रेरक और अनुकरणीय।**
- **विकसित भारत के निर्माण में महती भूमिका निभा रहीं महिलाएं।**

प्रधानमंत्री जी ने अपने कार्यक्रम में 'विकसित भारत' के निर्माण में महती भूमिका निभा रही नारी शक्ति के नेतृत्व और उनके योगदान का जिक्र किया। इसके साथ ही विश्व के सबसे बड़े सांस्कृतिक संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की 100 वर्ष की यात्रा का वर्णन प्रधानमंत्री जी ने किया, जिससे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उद्देश्यों एवं कार्यों के बारे में आमजन को जानकारी मिली। उन्होंने महर्षि वाल्मीकि जयंती की चर्चा करते हुए भगवान राम और महर्षि वाल्मीकि जी द्वारा दिये गए सामाजिक समरसता के संदेश को रेखांकित किया, जो आज भी प्रासंगिक है।

प्रधानमंत्री जी ने अपने संबोधन में 2 अक्टूबर को खादी के वस्त्र खरीदने और स्वच्छता के प्रति सजग रहने का आग्रह किया, जो निश्चित रूप से स्वदेशी और स्वच्छता को ताकत देगा, क्योंकि भारत के सर्वांगीण विकास और जनकल्याण के ध्येय के साथ प्रधानमंत्री जी द्वारा 'मन की बात' कार्यक्रम में साझा की जाने वाली महत्वपूर्ण बातें देशवासियों के लिए अनुकरणीय होती हैं। रक्तदान एक ऐसा महान कार्य है, जो किसी अनजान जरूरतमंद को नया जीवन देता है। ▪

त्याग एवं समर्पण की प्रतिमूर्ति

राजमाता विजया राजे सिंधिया

राजमाता विजया राजे सिंधिया भारतीय जनता पार्टी के संस्थापकों में से एक थीं। राजमाता ने जनसंघ और भाजपा के कई प्रमुख नेताओं जैसे- श्री अटल बिहारी वाजपेयी और श्री लालकृष्ण आडवाणी के साथ काम किया।

राजमाता विजया राजे सिंधिया का जन्म 12 अक्टूबर, 1919 में सागर, मध्य प्रदेश के राणा परिवार में हुआ था। श्रीमती विजया राजे सिंधिया के पिता श्री महेन्द्रसिंह ठाकुर जालौन जिला के डिप्टी कलेक्टर थे और उनकी माता श्रीमती विंदेश्वरी देवी थीं। श्रीमती विजया राजे सिंधिया का विवाह के पूर्व का नाम लेखा दिव्येश्वरी था। राजमाता सिंधिया के पुत्र श्री माधवराव सिंधिया, पुत्री श्रीमती वसुंधरा राजे सिंधिया और श्रीमती यशोधरा राजे सिंधिया हैं।

श्रीमती विजया राजे सिंधिया को ग्वालियर की राजमाता के रूप में जाना जाता था। भारत के विशालतम और संपन्नतम राजे-रजवाड़ों में से ग्वालियर एक था। उस रियासत के महाराजा के साथ उनका विवाह हुआ था। 1957 में श्रीमती विजया राजे सिंधिया ने कांग्रेस से चुनाव लड़ा और वे विजयी हुईं। अपने पति के स्वर्गवास के बाद सन् 1962 में कांग्रेस के टिकट पर वे संसद सदस्य बनीं। पांच साल के बाद अपने सैद्धान्तिक मूल्यों के कारण वे कांग्रेस छोड़कर जनसंघ में शामिल हो गईं। एक राज परिवार से रहते हुए भी वे अपनी ईमानदारी, सादगी और प्रतिबद्धता के कारण पार्टी में सर्वप्रिय बन गईं। शीघ्र ही वे पार्टी में शक्ति स्तंभ के रूप में सामने आईं।

राजमाता विजया राजे सिंधिया भारतीय जनता पार्टी के संस्थापकों में से एक थीं। राजमाता ने जनसंघ और भाजपा के कई प्रमुख नेताओं जैसे- श्री अटल बिहारी वाजपेयी और श्री लालकृष्ण आडवाणी के साथ काम किया। यही नहीं, मध्य प्रदेश की राजनीति में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान है।

1967 में मध्य प्रदेश में सरकार गठन में उन्होंने बेहद महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। हालांकि, श्रीमती विजया राजे सिंधिया का सार्वजनिक जीवन प्रभावशाली और आकर्षक था, लेकिन उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन में मुश्किलों का सामना किया। सन् 1989 के आम चुनाव में राजमाता विजया राजे सिंधिया ने एक बार फिर गुना से भाजपा प्रत्याशी के रूप में जीत दर्ज कीं। इससे पहले 22 साल पूर्व सन् 1967 में राजमाता यहां से जीती थीं। 1991 के चुनाव में श्रीमती विजया राजे सिंधिया ने कांग्रेस प्रत्याशी को पराजित किया। राजमाता सिंधिया सिद्धांतों के प्रति समर्पित सांस्कृतिक राष्ट्रवाद से ओतप्रोत विदुषी जननायक थीं। उन्होंने महलों के वैभव को छोड़कर जनता के न्याय के लिए संघर्ष का मार्ग स्वीकार किया और सड़कों पर उतरकर राजमाता से लोकमाता बन गईं। उन्होंने समर्पित जीवन जिया। सेवा की उनमें ललक थी। सादगी और सरलता उनका स्वभाव था। राजमाता का मानना था की अपनों की जड़ खोदकर कभी कोई दूसरों का चहेता नहीं बना है। राजमाता सिंधिया लंबे समय तक महिलाओं से जुड़ी रहीं और उन्हें सदैव प्रेरित करती थीं।

वे हमेशा सेवा के लिए समर्पित रहीं। उन्हें पद और सत्ता ने कभी आकर्षित नहीं किया। उन्होंने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के लिए खुद को पूरी तरह समर्पित कर दिया। राजमाता त्याग एवं समर्पण की प्रतिमूर्ति थी। राजमाता विजया राजे सिंधिया ने लोगों के दिलों पर बरसों राज किया।

सत्ता के शिखर पर रहने के बाद भी उन्होंने जनसेवा से कभी अपना मुख नहीं मोड़ा। राजमाता का सपना था कि जब देश में कमल खिलेगा तभी अंतिम सांस लेंगी। यह स्वप्न पूरा भी हुआ और श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में केंद्र में सरकार बनी। सन् 1998 से राजमाता का स्वास्थ्य खराब रहने लगा और 25 जनवरी, 2001 में राजमाता विजया राजे सिंधिया का स्वर्गवास हो गया। ▪

संस्कृति राष्ट्र की आत्मा है

प्रत्येक राष्ट्र में राष्ट्रीयता की भावना जिससे बनी रहे, वही संस्कृति का आधार माना जाता है। संस्कृति राष्ट्र की आत्मा है। आत्मा निकल जाने के पश्चात जैसे सब अंग-प्रत्यंग निश्चेष्ट हो जाते हैं। उसी प्रकार की अवस्था संस्कृति का लोप हो जाने से राष्ट्र की होती है। जैसे यूनान और मिस्र का प्राचीन राज्य समाप्त हो गया।

इसका यह अर्थ तो नहीं कि वहां की भूमि, नदियां, पर्वत, व्यक्ति आदि नष्ट हो गए। ये वस्तुएं तो ज्यों-की-त्यों बनी रहती हैं, परंतु व्यक्ति को एक सूत्र में बांधने की जो शत संस्कृति में है, वह शत समाप्त हो जाती है।

पं. दीनदयाल उपाध्याय

आम लोगों ने संघ कार्य के अनेक रूपों का विचार किया होगा। एक प्रश्न हमारे सामने यह भी आता है कि समय-समय पर हम कहते हैं कि हमारा कार्य सांस्कृतिक अधिष्ठान पर खड़ा है। इस दृष्टि से यह जिज्ञासा होना स्वाभाविक ही है कि वह संस्कृति क्या है? संघ की प्रतिज्ञा में भी हम ऐसा कहते हैं, 'हिंदू धर्म, हिंदू संस्कृति की रक्षा कर हिंदू समाज की सर्वांगीण उन्नति करने के लिए हम संघ के घटक बने हैं।' बिना संस्कृति संरक्षण के राष्ट्र की उन्नति नहीं हो सकती, यह भी हम स्वीकारते हैं।

आखिर संस्कृति है क्या? हम यह भी देखते हैं कि संस्कृति के नाम पर आज देश में बहुत से कार्य प्रारंभ हो गए हैं। हर कहीं हम Cultural progress का नाम सुनते हैं। हमारे कलाकार सांस्कृतिक शिष्टमंडलों के रूप में विदेश जाते हैं, अन्य देशों से हम संस्कृति का संबंध जोड़ते हैं आदि। कहने का तात्पर्य यह कि हम नाच-गान को ही संस्कृति मान बैठते हैं।

भारत के विचारकों के समक्ष यह प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या गाना, नाचना, नाटक खेलना मात्र ही संस्कृति है। यदि यही संस्कृति की परिभाषा है तो इसका प्रचार हमारे पूर्वज ऋषियों, विद्वानों, स्वामी विवेकानंद जैसे लोगों द्वारा न होकर.फिल्म अभिनेता तथा अभिनेत्रियों द्वारा ही होगा।

संस्कृति शब्द को आज गलत अर्थ ही दिया गया है। यह अज्ञानवश हो सकता है और जानबूझकर भी। जानबूझकर इसलिए कि अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए वे संस्कृति शब्द का उपयोग उन लोगों में गलत धारणा पैदा करके अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं। जैसे डालडा को घी की संज्ञा देने से यह बात स्पष्ट है। घी शब्द के बारे में लोगों की धारणा अच्छी है। इसलिए डालडा के साथ साफ किया हुआ तेल-ऐसा न जोड़कर घी शब्द जोड़ दिया गया है। कुछ समय उपरांत लोग इस डालडा को ही वास्तविक घी समझकर इसका उपयोग करने में लज्जा महसूस नहीं करेंगे। ठीक यही बात संस्कृति के संबंध में है। संस्कृति के प्रति जिनकी श्रद्धा है, उन्हें गलत रास्ते पर डालने के लिए इस नवीन संस्कृति का प्रचार किया जा रहा है। राष्ट्रीयता के संबंध में भी यही बात हुई। हमें Indian Nationalism की भ्रांत धारणा दी गई और कहा गया कि मुसलमान, ईसाई सभी यहां के राष्ट्रीय हैं। सिक्खों को यह गलत धारणा दी गई कि वे हिंदू नहीं हैं आदि।

आज सांस्कृतिक कार्यक्रमों के बारे में इसी कारण लोगों की कल्पना नाचने-गाने की ही हो गई है। एक व्यक्ति ने पूछा कि आप कहते हैं कि हमारा कार्य सांस्कृतिक है, परंतु हमें तो ऐसा दिखाई नहीं देता, क्योंकि वहां तो नाच-गाना होता नहीं। फिर मैंने व्यंग्य कसते हुए कहा कि जिस प्रकार नाचने-गाने में वे स्वर-ताल का ध्यान रखते हैं, इसी प्रकार संघ के कार्यक्रमों में एक कहने पर बायां पैर और दो कहने पर दायां पैर निकलता है और एक ताल के अनुसार कार्य होता है, इसलिए यह भी सांस्कृतिक हुआ।

संस्कृति के पीछे क्या भाव है, यह समझना कुछ कठिन है। संस्कृति शब्द का प्रयोग वेदों को छोड़कर अन्य प्राचीन वाङ्मय में नहीं हुआ। संस्कृति को धर्म के अंतर्गत ही मान लिया गया था, परंतु आज संस्कृति शब्द का व्यापक प्रचार

होने के कारण लोग इस शब्द को सुनकर चौंकते नहीं। कुछ लोगों ने इसे Culture के अनुवाद के रूप में स्वीकार किया है। यह भी संभावना हो सकती है कि यह शब्द स्वतंत्र रूप से विकसित हुआ हो। संस्कृति से मिलता-जुलता संस्कार शब्द हमारा पूर्व परिचित शब्द है। हमारे यहां सोलह संस्कार होते हैं, संस्कारों से मनुष्य बनता है, बिना संस्कार के वह पशु समान है-ऐसा बराबर सुनने में आता है। साधारणतया हम कह सकते हैं कि जो बाह्य वातावरण है, उसका मनुष्य पर जो परिणाम होता है, उसे हम संस्कार (Impression) कह सकते हैं।

परंतु संस्कार अच्छे और बुरे दोनों हो सकते हैं। किसी को चोरी की आदत लग जाए तो हम कहेंगे, उस पर बुरे संस्कार पड़े हैं। परंतु जब हम संस्कार कहते हैं तो उससे हमारा अभिप्राय अच्छे संस्कार से ही होता है। बुरे संस्कारों के लिए हम कुसंस्कार शब्द का प्रयोग करेंगे। जैसे चरित्रवान कहने से हमारा आशय अच्छे चरित्र वाले व्यक्ति से होता है, जबकि बुरे चरित्र वाले व्यक्ति के लिए हम चरित्रहीन शब्द का प्रयोग करते हैं।

अतः संस्कृति का अर्थ हुआ, अच्छे संस्कारों का परिणाम (प्रभाव)। मलयालम भाषा में हिंदू संस्कृति के लिए हिंदू संस्कार शब्द का प्रयोग होता है। स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि किन संस्कारों को हम अच्छा कहेंगे और किनको बुरा। इसकी व्याख्या करना सरल नहीं। पर एक छोटी सी कसौटी तो है। वह यह कि समाज के ध्येय के लिए जो पोषक है, वह अच्छा और जो बाधक है, वह बुरा। जैसे यदि हमारा लक्ष्य दिल्ली जाना है, तो जो रेलगाड़ी या मोटरगाड़ी उधर ले जाने में सहायक हो, वह अच्छी और जो विपरीत दिशा में ले जाने वाली है, वह बुरी।

परंतु दूसरा प्रश्न उत्पन्न होता है कि ध्येय क्या है? इस संबंध में हम इतना जानते हैं कि हमारी जो एकात्मकता है, एकीकरण है, इसकी अनुभूति ही हमारा ध्येय है। जब सब लोग एकता का अनुभव करें, तभी समाज अथवा राष्ट्र बनता है। यदि हम राष्ट्र के नाते जीवित रहना चाहते हैं तो एकात्मकता की अनुभूति जिससे होगी, वही हमारा ध्येय होगा।

यदि पांव में कांटा चुभ जाए और पता न लगे कि कहां चुभा है तो चिंता होने लगती है। शरीर के कण-कण की जब तक ठीक अनुभूति रहती है, तब तक ठीक है, परंतु जब बेहोशी आदि में शरीर का ज्ञान नहीं रहता, क्रियाओं, चेष्टाओं का ज्ञान नहीं रहता तो वह स्थिति चिंताजनक होती है और सारा शरीर गया, ऐसा लगने लगता है। जैसे लकवे में, हाथ होते हुए भी हाथ की क्रिया रुक जाती है, हाथ की अनुभूति नहीं होती। जब तक शरीर में चेतना है, अंगों का संबंध बराबर बना रहता है।

तभी तक हममें सामर्थ्य है, जीवन है। इसी प्रकार राष्ट्र रूपी शरीर में चेतना बनाए रखना आवश्यक है। अतः जिन कारणों से राष्ट्र में चेतना का निर्माण होता है, वे अच्छे और दूसरे बुरे।

प्रत्येक राष्ट्र में राष्ट्रीयता की भावना जिससे बनी रहे, वही संस्कृति का आधार माना जाता है। संस्कृति राष्ट्र की आत्मा है। आत्मा निकल जाने के पश्चात जैसे सब अंग-प्रत्यंग निश्चेष्ट हो जाते हैं। उसी प्रकार की अवस्था संस्कृति का लोप हो जाने से राष्ट्र की होती है। जैसे यूनान और मिस्र का प्राचीन राज्य समाप्त हो गया। इसका यह अर्थ तो नहीं कि वहां की भूमि, नदियां, पर्वत, व्यक्ति आदि नष्ट हो गए। ये वस्तुएं तो ज्यों-की-त्यों बनी रहती हैं, परंतु व्यक्ति को एकसूत्र में बांधने की जो शक्ति संस्कृति में है, वह शक्ति समाप्त हो जाती है। लकड़ियों को सूत के धागे से बांधा जा सकता है परंतु व्यक्ति-व्यक्ति को बांधने वाला सूत्र संस्कृति ही है। यह सूत्र वर्तमान प्राणियों के अतिरिक्त हमारा संबंध हमारे पूर्वजों अर्थात् राम, कृष्ण, शिवा, प्रताप, गोविंद सिंह आदि से तथा आगे जन्म लेने वालों से भी जोड़ देता है। इसी के बूते पर राष्ट्र टिक सकता है। अतः राष्ट्र रूप में जीवित रहने के लिए यही संस्कृति प्राप्तव्य है। अतः सिद्ध हुआ कि सारे समाज को आपस में जोड़ने वाला नाता संस्कृति है। जिन कार्यक्रमों से यह नाता जुड़ता है, वह संस्कार तथा जिन कार्यों से यह नाता टूटने लगता है, वे कु-संस्कार।

डाकुओं में जो स्वार्थ के कारण एकता है, क्या उसे भी संस्कृति मानें? उत्तर मिलेगा- 'नहीं।' कुछ देशों की संस्कृति का आधार यद्यपि यह भी है। जैसे अरब में मुसलमानों का संगठन लूट-खसोट के आधार पर ही किया इसी प्रकार इंग्लैंड भी सामूहिक स्वार्थ के नाम पर ही खड़ा हुआ।

परंतु हमने स्वार्थ के आधार पर एकता खड़ी नहीं की। यही हमारी और दूसरों की संस्कृति में अंतर है। जैसे मां से प्रेम करने के भिन्न-भिन्न आधार हो सकते हैं। इसी प्रकार विवाह के भी भिन्न आधार हो सकते हैं। एक यह कि विवाह दो प्राणियों का एकात्मकता के नाते आगे बढ़ना इसलिए है कि घर की देखभाल के लिए पत्नी मिल जाएगी। इसी प्रकार परिवार में हमारे माता-पिता भी शामिल होंगे। परंतु यूरोप में परिवार में मां-बाप नहीं होते।

जीवन में सभी चीजों की ओर देखने की हमारी दृष्टि कुछ भिन्न है। कुछ राष्ट्रों में ईमानदारी को व्यापार के लिए सर्वोत्तम नीति माना जाता है, परंतु हम इसे व्यापार की नीति के रूप में नहीं अपितु जीवन की नीति के रूप में अपनाना चाहते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति की अलग-अलग रुचि होती है। यह रुचि भिन्नता मूलतः सब प्राणियों में विद्यमान है। इसी प्रकार राष्ट्रों में भी रुचि भिन्नता है, अपनी-अपनी विशेषता है। सबके आधार भिन्न-भिन्न रहते हैं। इसके कारण हमारे देश में भी कुछ चीजें हमें रंजित करती हैं और कुछ नहीं। हमारी विशेष प्रवृत्ति है, जिसके आधार पर हम संगठन करते हैं। वह प्रवृत्ति स्वार्थ की नहीं, निःस्वार्थ भाव की है।

(राष्ट्र जीवन की दिशा से साभार)

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी, प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल जी एवं संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने पं. दीनदयाल उपाध्याय जी की जयंती पर माल्यार्पण किया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी ने लाड़ली बहना योजना,सामाजिक सुरक्षा पेंशन और उज्ज्वला योजना की अनुदान राशि का सिंगल क्लिक से अंतरण किया।

▪ भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल जी ने बाबा महाकाल के दर्शन किये।

▪ प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल जी एवं संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने श्रद्धेय श्री कुशाभाऊ ठाकरे जी के निवास पहुंचकर पुष्पांजलि अर्पित की।

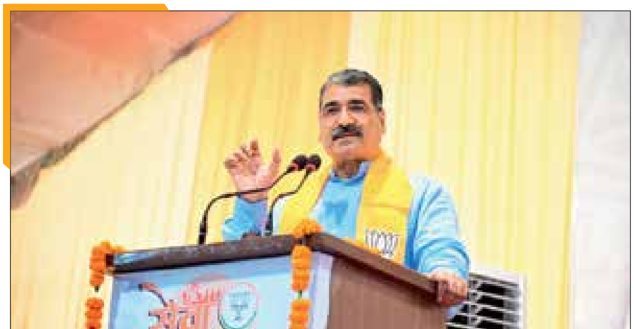

▪ संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने सेवा पखवाड़ा को लेकर प्रदेश कार्यालय में कार्यशाला को संबोधित किया।

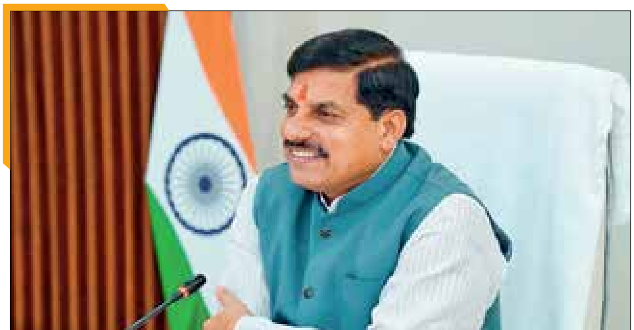

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी ने प्राकृतिक आपदा से हुई क्षति के लिए प्रभावितों के खातों में राहत राशि अंतरित कर वर्चुअल संवाद किया।

▪ प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल जी ने कार्यकर्ताओं को संबोधित किया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी ने शासकीय हायर सेकेन्डरी स्कूलों में प्रथम स्थान अर्जित करने वाले विद्यार्थियों को स्कूटी प्रदान की।

अनेकता में एकता और विभिन्न रूपों में एकता की अभिव्यक्ति भारतीय संस्कृति की सोच रही है...

पं. दीनदयाल उपाध्याय